Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

RAM SANDESH 1981 G.K.V.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

112395

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राम-सन्देश

पुस्तकालय गुरुकुल काँगड़ी

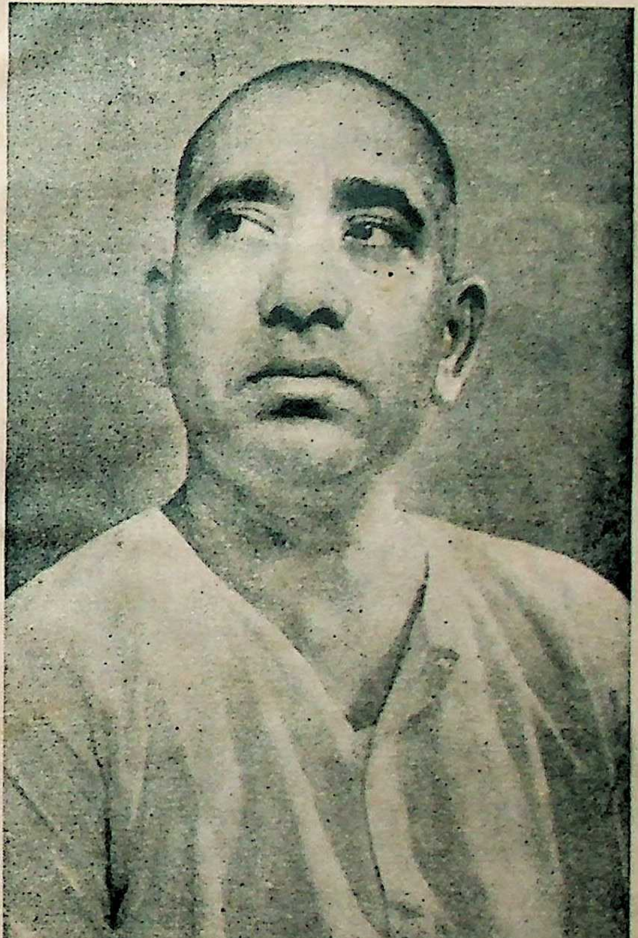

मार्च

१९८१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संकेतिका

विषय	लेखक	पृष्ठ
अब न टालो !		१
साधारण बातचीत	स्वामी राम	२
गीत	'निशान्त'	४
जीवन रहस्य	हरबन्सलाल भाटिया	५
परमाणु-युग : शंकर का तीसरा नेत्र	श्रीचन्द 'विजयन्त'	६
दूसरों का दोष अपने पर	जीवन-साहित्य के संवाद	८
काल-चक्र	श्रीचन्द 'विजयन्त'	११
श्री मद्भगवद्गीता की महानता		१३
Form iv	Swami Amar Muni	१५
प्रवचन	ब्र० स्वामी हरिओ३म् जी—	१६
Prakriti and Purusha :	by–Jayadayal Goyandka	२१
Maya :	Swami Ram	२२
आश्रम-समाचार		२५

संस्थापक—
ब्रह्मलीन स्वामी हरिओउम् जी महाराज

संवर्धक—
ब्रह्मलीन स्वामी गोविन्द प्रकाश जी महाराज

व्यवस्थापक—
स्वामी अमर मुनि जी महाराज

सम्पादक—
काका हरिओउम् "निर्द्वन्द्व"

आजीवन सदस्यता शुल्क—
भारत में — १०० रु०
विदेश में — ५०० रु०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

112395
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
112395

'राष्ट्र के हित के लिए यत्न करना ही विश्व की शक्तियों अर्थात् देवताओं की आराधना है'-स्वामी राम

वेदान्त, अध्यात्म, संस्कृति, धर्म एवं भक्ति का सजग सन्देशवाहक
तथा स्वामी राम के आदर्शों का एकमात्र लोकप्रिय मासिक—

राम सन्देश

वेदोपनिषदां तत्त्वम् सत्यं नित्यं सनातनम् ।।
तत्सर्वं "रामसन्देशे" पत्रेऽस्मिन्नवलोक्यताम् ।।

वर्ष ३०	राजपुर, देहरादून, मार्च १९८१	वार्षिक भेंट १०)
अंक ३		एक प्रति ८५ पैसे

अब न टालो !

प्रभो अपने दरबार से अब न टालो ।
गुलामी का इकरार मुझसे लिखालो ।।

दोहा— दीनानाथ अनाथ का, भला मिला संयोग ।
अब यदि तापोगे नहीं, हंसी करेंगे लोग ।।

है बेहतर कि दुनिया की बदनामियों से ।
बचो आप खुद और मुझको बचालो ।।

दोहा— पशु-निषाद-खग-भीलनी, हीन जाति कुल नाम ।
बिना योग जप-तप किये, गये तुम्हारे धाम ।।

ये जिस प्रेम के सिन्धु में जा मिले हैं ।
उसी सिन्धु में "बिन्दु" को भी मिलालो ।।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साधारण बातचीत

यहाँ पर हम एक कहानी कहेंगे:—

एक छोटे गाँव में एक पगली औरत रहती थी। उसके पास मुर्गा था। गाँव के लोग उसे छेड़ा करते थे, उसके नाम धरा करते थे, और उसे बहुत परेशान करते और क्लेश पहुंचाते थे। अपने निकट रहनेवाले अपने गाँव के लोगों से उसने कहा— "तुम मुझे तंग करते हो, तुम मुझे हैरान और दुःखी करते हो; देखो ! अब मैं तुमसे बदला लूंगी, मैं तुम्हारी करतूतों का प्रत्युत्तर दूंगी और तुमसे सख्त बदला लूंगी।" पहले तो लोगों ने उसके कहने पर कोई ध्यान नहीं दिया। वह चीखी, गाँववालों, खबरदार! सावधान! मैं तुम पर बदी करूंगी।" उन्होंने उससे पूछा— "तू क्या करनेवाली है।" उसने कहा— "मैं इस गाँव में सूर्य न उदय होने दूँगी।" उन्होंने उससे पूछा— "किस तरह तू ऐसा करेगी?" उसने उत्तर दिया, "जब मेरा मुर्गा बाँग देता है, तभी सूर्य उदय होता है। यदि तुम मुझे इसी तरह दिक्क करते रहोगे, तो मैं अपना मुर्गा लेकर दूसरे गाँव चली जाऊँगी, और तब इस गाँव में सूर्य उदय ही न होगा।"

यह सही है कि जब मुर्गा बाँग देता है, तब सूर्य उदय होता है, किन्तु मुर्गे की बाँग सूर्योदय का कारण न थी; कदापि नहीं। उसे बड़ा कष्ट था, उसने गांव छोड़ दिया, और दूसरे गांव को चली गयी। जिस गांव में वह गयी, वहाँ मुर्गा बोला और उस गांव में सूर्योदय हुआ। किन्तु जिस गांव को वह छोड़ आयी थी, उसमें भी सूर्य उदय हुआ। इसी प्रकार मुर्गे का बाँग देना आपकी अभिलाषाओं की याचना और चाह भरी प्रकृति है। आपकी इच्छित वस्तुओं की चाह या उत्कट अभिलाषा का उत्थान, शासन, नियंत्रण और नियमन एक अनन्त-एवं शुद्ध आत्म रूप सूर्य के अधीन होता है। सच्चा स्वरूप या शासक सूर्य ही है, जो सुबह या शाम, दिन या रात को उत्पन्न किया करता है। इसी शुद्ध आत्मा व अनन्त तथ्य के अधीन सारे सांसारिक व्यवहार परिचालित और अनुशासित होते हैं। यह इन्द्रियों में प्रवेश कर जाता है। यह तार खींचनेवाला सूत्रधारी उक्त सूर्यों के सूर्य और प्रकाशों के प्रकाश स्वरूप से नियंत्रित होता है। यह याद रक्खो।

साधारणतः लोग ये सारी बातें तुच्छ, भिखारी, भुक्खड़ और स्वार्थी जीवात्मा पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आरोपित करते हैं। यह भूल न करो, कृपया इससे बचो। जाँचो तो, जो सूर्य मुर्गे की आँख में प्रवेश करता है, और उसका गला खोलकर उससे बाँग दिलवाता है, वही सूर्य प्रातःकाल को सुशोभित करनेवाला भी है। देखो, मुर्गे की बाँग और सवेरे का होना वास्तव में सूर्य की सुख-प्रद गरमी और शक्ति द्वारा शासित या सम्पादित होता है। एक ओर इन जीवित पदार्थों को, और दूसरी ओर अपने विचारों को देखो, ये सब तरह उसी सूर्यों के सूर्य, प्रकाशों के प्रकाश, वास्तविक स्वरूप, आत्मा, असली अपने आपसे शासित, नियंत्रित, संबेधित और व्याप्त होते हैं। इस तत्व को जानों, और स्वाधीन बनों। मिथ्या आरोपण मत करो। गलत अर्थ न निकालो। पदार्थों को ही सच्चा मत समझो। जब हम वस्तुओं को ही पीड़ा और रंज का असली कारण समझते हैं, तब हमारा विश्वास मिथ्या है। ऐसा समझो, ऐसा अनुभव करो, और सब चीजों को एक गहरा मजाक, महान् नाटकीय खेल मानो। कोई क्लियोपैट्रा या मैकबैथ का अभिनय (खेल) भले ही करे, किन्तु असलियत में वह आत्मघाती या नरघाती नहीं है; वह राजा या रानी नहीं है। वह केवल अभिनेता है; और वह तो अमुक भलामानुस है। इसी तरह, आप कोई भी काम करो, पर यह न भूलो कि आपका सच्चा स्वरूप परमेश्वर है। जान लो कि "मैं हूँ" निर्विकार है, वही सम्पूर्ण आनन्द है, समग्र सुख है। इसे न भूलो। इसे समझो और मुक्त वा स्वतंत्र हो जाओ।

स यथा दुन्दुभेर्हन्यमानस्य न बाह्याञ्छब्दाञ्छक्नुयाद ग्रहणाय, दुन्दुभेस्तु ग्रहणेन् दुन्दुभ्याघातस्य वा शब्दो गृहीतः ॥ ७ ॥

(बृह० उह० अ० २ ब्रा० ४ मं० ७)

"अब आप जिस तरह ढोल का शब्द, जब वह पीटा जाय, तो बाहर से नहीं पकड़ा जा सकता, किन्तु शब्द तभी पकड़ा जाता है, जब ढोल या ढोल का पीटने वाला पकड़ा जाता है।" इसी प्रकार इच्छा के सब भौतिक पदार्थ तभी पकड़े जा सकते हैं, जब कि वह, जो उनकी उत्पत्ति का मूल है, और जिससे वे निकलते हैं, पकड़ा जाता है।

स यथा शंखस्य ध्मायमानस्य न बाह्याञ्छब्दाञ्छक्नुयाद ग्रहणाय, शंखस्य तु ग्रहणेन् शंखध्मस्य वा शब्दो गृहीतः ॥ ८ ॥

"जिस प्रकार शंख की ध्वनि, बजते समय, बाहर से नहीं पकड़ी जा सकती, किन्तु ध्वनि तभी पकड़ी जा सकती है, जब शंख या शंख का बजाने वाला पकड़ लिया जाता है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गीत

मैं तुम्हारी आरती के किस तरह से फूल लाऊँ ?
हर कदम पर सौंप देते, आप ही जब शूल मुझको ।।

ढूंढता तुमको रहा हूं,
शीश पर श्रृंगार धर कर ।
रोज मरूथल में चला हूं,
कामना का भार धर कर ।।

जिन्दगी भर खेलता, मैं, रह गया हूं हर लहर से—
आपने कब ठहर करके, आ दिया है कूल मुझको ?

मैं तुम्हारे नैन में जा
प्रीत बन कर कब जिया हूं ?
नेह के बिन ही जला जो,
मैं अभागा वह दिया हूं ।

मैं तुम्हारे रास्ते पर, रात-दिन चलता रहा हूं—
पर न मिल पाई तुम्हारी आज तक पग धूल मुझको ।।

आपने अपना बनाने,
का किया संकल्प कब है ?
किन्तु, मेरा प्यार फिर भी,
हो सका कुछ अल्प कब है ?

आपने बेशक भुनाया, पर न भूला मैं कभी भी—
कह न पाये आज तक भी, प्राण मेरी भूल मुझको ।

मैं तुम्हारे द्वार का हूं,
आयु भर भटका भिखारी ।
है यही धन पास केवल,
लोचनों का नीर खारी ।

खोजने मैं तो चला था, छाँह मधु चन्दन तरु की—
मिल गये पर रास्ते में, बैरी ये बबूल मुझको ।।

निशान्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवन रहस्य

हरबन्सलाल भाटिया
श्री गंगानगर (राज॰)

घुटन
तड़पन
उलझन
निराशा
अंधकार
हाय ! क्या जीवन है ?
निर्बलता
अविश्वास
अकर्मण्यता
असफलता
आक्रोश
हाय ! क्यां जीवन है ?
आत्मविश्वास
उच्च विचार
कठिन परिश्रम
सत्यपथ पर
अग्रसर होना
यही जीवन है ।
आशा
प्रयास
प्रकाश
हर्षोल्लास
यही, सत्य जीवन है ।
प्रयास से
प्रगति
प्रगति से
प्रसन्नता
यही, जीवन रहस्य है ।

****

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परमाणु-युग : शंकर का तीसरा नेत्र ?

— श्रीचन्द 'विजयन्त'

शक्ति एवं 'विवेक' के मध्य संतुलन होना नितान्त आवश्यक है। 'शक्ति' का आभूषण विवेक को कहें तो कदापि यह अतिश्योक्ति न होगी। शक्ति का यदि विवेक के संग पूर्ण सामंजस्य है तो मानवता का क्षेत्र शीतलता की हरितिमा से आच्छादित है अन्यथा युद्ध-भूमि की लाल कीच के अतिरिक्त वहाँ कुछ भी नहीं है।

वर्तमान युग विज्ञान युग कहलाता है। भविष्य के आसार देखते हुए लगता है कि एक अथवा दो दशकों के पश्चात् यह युग 'परमाणु-युग कहलाने लगेगा। इस तथ्य की पुष्टि वैज्ञानिक विश्लेषण भी करते हैं। क्योंकि ऊर्जा के स्रोत कोयला एवं पेट्रोलियम चन्द वर्षों के ही अतिथि हैं, इस धरा पर! ऊर्जा का भावी विकल्प-मात्र परमाणु शक्ति ही हो सकती है। 'परमाणु' की खोज वास्तव में 'परम तत्व' की खोज है किन्तु यह विडम्बना ही कही जायेगी कि - वर्तमान पीढ़ी 'परमाणु' के साथ परमाणु-शक्ति को जोड़ती है। इसे बुद्धि का भ्रष्ट होना कहा जा सकता है। यह निरा अहंकार का द्योतक है। यही कारण भी है कि 'परमाणु' का शान्ति-क्षेत्र में उपयोग नगण्य है। इसकी यह नगण्यता, मानव-वंश को ही नहीं अपितु वसुन्धरा के कण-कण को आकुल कर सकती है।

आंकडों का संकलन हमें बताता है कि दो महाशक्तियों के पास ही इतना विशाल भण्डार आण्विक अस्त्रों-शस्त्रों का है कि उसके प्रयोग अथवा विस्फोट मात्र से समस्त भूमण्डल की जनसंख्या को समाप्त किया जा सकता है। आँकडे यह भी स्पष्ट करते हैं कि विश्व की समस्त आण्विक शक्ति को यदि एक समय पर बिष्फोटित कर दिया जाय तो समस्त विश्व की जनसंख्या को लगभग १२ बार नष्ट किया जा सकता है। अनुमान लगाना सहज होगा कि यदि इस क्षेत्र में शान्ति-प्रयास भी किये जायें तो उनका कोई सन्तोष प्रद परिणाम निकलना अब असम्भव ही जान पड़ता है। कारण यह है! आण्विक-युग अथवा विज्ञान युग के इस ९०% अभिनव मानव का दिमाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इतना अहंकार में चूर एवं मद मस्त हो गया है कि उसे केवल अणु-युद्ध ही ठीक कर सकता है, वेद मन्त्र अथवा क्षण भंगुर जीवन की सार्थकता नहीं।

संयुक्त राष्ट्र संघ, जिस पर विश्व की शान्ति का ठेका है, एक वर्ष में ५२ करोड़ डालर खर्च करता है ताकि विश्व में शान्ति कायम रह सके। इधर विश्व की दशा यह है कि एक घण्टे की अवधि में लगभग ६० करोड़ डालर-मूल्य के हथियार बन जाते हैं। प्रश्न यह उठता है क्या शस्त्रों की होड़ ही विश्व का ध्येय बन गयी? आखिरकार ऐसा हुआ क्यों? विश्व इसी क्षेत्र में क्यों इतना आगे बढ़ गया अथवा बढ़ रहा है? क्या अन्य कोई क्षेत्र उसके लिए नहीं बचा? उक्त समस्त प्रश्न भावी विनाश के भविष्य वक्ता हैं। मानव की प्रकृति उस सार्वभौमिक-चिन्तन से दूर चली गयी, जिसको कभी भारत के महर्षियों एवं मनीषियों ने कठोर तपों के फल स्वरूप खोजा था तथा विश्व ने हार्दिक रूप से उसका स्वागत करके गले लगाया था। स्वामी राम का प्रेममय सन्देश जिसमें विधाता के दिग्दर्शन विद्यमान हैं, महात्मा बुद्ध का वह त्याग जिसमें - राज-पाट एवं विषय - भोग के सभी रस फीके हैं, इन युग पुरुषों ने बड़ी उत्कण्ठा के साथ विश्व को 'प्रेम' एवं 'अहिंसा' का पाठ पढ़ाया था किन्तु हमारे वह कितना गले उतरा, यह सर्व विदित है।

दो महायुद्ध हो चुके हैं किन्तु उनका प्रभाव मानव जाति पर अत्यधिक न पड़कर न्यून पड़ा उसका कारण मात्र यह था कि विज्ञान इतना विकसित नहीं था जितना कि अब है। तीसरा विश्व युद्ध यदि होता है तो वह मानवता की निलामी ही कहा जा सकता है। क्योंकि एक-दो और तीन ......। तृतीय विश्व-युद्ध, त्रिगुणात्मक सृष्टि के लिए लगता है अवश्यम्भावी है तथा अदृश्य रूप से भगवान शंकर का यह तीसरा नेत्र है, जो धीरे-धीरे खुल रहा है। शंकर को शान्त करो, रे! विश्व के लोगों, अन्यथा ताण्डव नृत्य से आकुल हो उठेगी यह वसुन्धरा!

वैसे तो मानव का यह निरा अहंकार है कि 'यह मैंने किया', जो कुछ करती है - प्रकृति करती है। तथा प्रकृति में क्या होने वाला है - उसे बताया जा सकता है किन्तु रोका नहीं जा सकता। कारण प्रकृति शक्ति जहाँ असीमित है, मानव की समस्त शक्तियां सीमित रह जाती हैं। अभिनव मानव को चाहिए कि शान्ति के नैतिक आदर्शों का वह अक्षरशः पालन करे एवं मानवता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के क्षेत्र को विकसित कर युद्ध-क्षेत्र में गौणता लाये। कम से कम भारतवासियों के लिए तो यह एक चुनौती हो सकती है क्योंकि जब भी विश्व ऐसे विनाश-कागार पर आकर पहुंचा है, उसने भारत की ओर ही टक टकी लगायी है तथा स्वामी राम एवं स्वामी विवेकानन्द जैसी महा विभूतियों का उसे दर्शन भी हुआ है। विश्व के जन-जन से है! भारतवासियों कहो : कि तुम सद्मार्ग पर आओ हम तुम्हें शान्ति एवं ज्ञान का सन्देश देकर सत् कर्म की ओर अग्रसर करेंगे।

जीवन–साहित्य के संवाद

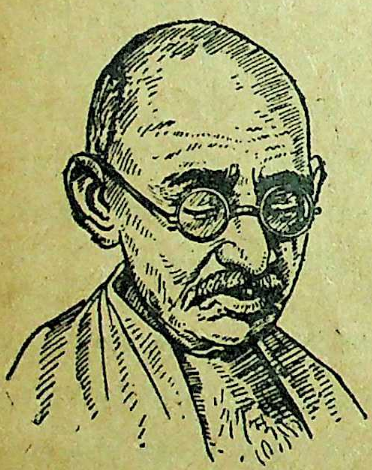

दूसरों का दोष अपने पर

एक बार वे भारत के कुछ हिस्से की यात्रा के लिए निकले। घूमते-घूमते वे पूना पहुंचे। रात में कातने बैठे तो देखा कि पूनियां खतम हो गई हैं। अपने सामान में से पूनियां निकाल देने की उन्होंने एक साथी को आज्ञा दी। परन्तु सामान में भी पूनियाँ नहीं मिलीं। उनके साथियों के जिम्मे यह काम था, वे सामान के साथ ज्यादा पूनियां रखना भूल गये थे। अब क्या किया जाए? महादेव भाई नियम से चरखा चलाते थे। उन्हें बुलाकर गाँधीजी ने पूछा, "महादेव, तुम्हारे पास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो पूनियां रहती ही हैं। थोड़ी पूनियां, मुझे दो।"

महादेव भाई के पास पूनियां नहीं थीं, इसलिए वे गांधीजी की बात सुनकर परेशानी में पड़ गये। कुछ क्षण रुक कर वे बोले "बापू, आज तो मेरे पास नहीं है। फैजपुर में जरूर थी।"

गाँधीजी ने कहा, "क्या तुमने ऐसा मान लिया था कि फैजपुर में कातने का समय मिलेगा और यात्रा में नहीं मिलेगा?"

महादेव भाई बोले, "बापू मैंने ऐसा तो नहीं माना था, परन्तु बहुत बार सामान बढ़ जाने की वजह से मैं चरखा-पूनी साथ में नहीं लेता। कातने में मुझे आलस नहीं लगता बल्कि मुझे कातने का शौक है। काम के बोझ से थक जाता हूं। थकान उतारने के लिए मैं बहुत बार कताई करता हूं। जेल में एक दिन भी ऐसा नहीं गया जब मैंने कताई न की हो। परन्तु बाहर यात्रा में मैं लाचार हो जाता हूं।"

इस जवाब से गाँधीजी को संतोष नहीं हुआ। उनके मन में विश्वास था। उनकी यह श्रद्धा थी कि इतने बड़े पूना शहर में, जहां जाने माने रचनात्मक कार्यकर्ताओं का बड़ा दल काम करता है, पूनियाँ जरूर मिल जायगी। इसलिए ज्यादा दुःख प्रकट किये बिना वे चुपचाप सो गये।

दूसरे दिन उन्होंने पूनियों की खोज करवाई। लेकिन पूनियां नहीं मिलीं। इसका अर्थ यह था कि कोई रचनात्मक कार्यकर्ता नियम से कताई नहीं करता था। मेरे लेखों की दिलचस्पी से पढ़नेवाले और उनका प्रचार करनेवाले मेरे साथी कताई के आग्रह के बारे में कितने शिथिल हैं—इसका उन्हें ख्याल आया। इससे उनके दिल को बड़ी चोट लगी। वे गंभीर हो उठे और मन में विचार करने लगे, "जो कार्यकर्ता डंके की चोट लोगों में यह प्रचार करते हैं कि चरखे के बिना स्वराज्य नहीं मिलेगा, उनकी इस चरखा-भक्ति से क्या लाभ? जिस टेक और श्रद्धा के लिए हम जीने और मरने को तैयार न हों, वह टेक और श्रद्धा किस काम की? यह झूठा आचरण है, निरी आत्म-वंचना है। सत्य का यह भंग उसकी हत्या कही जाएगी।"

सारे प्रसंग में गांधीजी ने साथियों से ज्यादा अपने को दोषी माना। उनके साथी जब कोई दोष करते थे तब बहुत बार वे यही कहते थे,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मेरी ही अहिंसा कच्ची होगी।" उनके मन में यह मन्थन चल रहा था, 'मैं खुद अगर चरखे के काम में इतना शिथिल होऊं तो दूसरे किसका दोष निकालूं ? नमक यदि अपना खारापन छोड़ दे तो वह नमक कैसा ! पूनियां साथ न लेने की अपनी गलती को उन्होंने सत्य की उपासना में विघ्न माना। परन्तु अपनी गलती को कबूल करके फिर से गलती न करने का संकल्प करना आत्म-शुद्धि का एक प्रकार है। सत्य को कलंक न लगे, इस तरह के आचरण द्वारा अपनी आत्मशुद्धि करके ही गांधीजी इतने महान बने।

४ : : गरीबों का सेवक चरखा

आजकल अनेक छोटे-बड़े आदमी अपनी वर्षगांठ मनाते हैं। उनमें बधाइयाँ दी जाती हैं, उपहार दिये और लिए जाते हैं और खान पान के जलसे रखे जाते हैं। गांधीजी ने इस बात की पहले से ही सावधानी रखी थी कि जयंती के कारण समाज में ऐसे गलत रीत-रिवाज न दाखिल हो जाय। इसलिए उन्होंने राष्ट्र से अपील की थी कि उनकी जयती को 'गाँधी जयती' न कह कर चरखा जयंती कहा जाय, और सारे राष्ट्र ने उनकी यह बात स्वीकार कर ली थी तब से गांधी जयती के दिन देश के लोग चरखे की विशेष आराधना करते रहे। गाँधीजी बार-बार कहते थे, "गांधी का नाम भले ही इस देश के लोग भूल जाय, परन्तु गरीबों और दीन दुखियों की सेवा करने वाले चरखे को इस देश में कभी न भूलना चाहिए।"

प्रेम और शक्ति

भक्ति या प्रेम रोने-धोने और मांगने-जांचने की अभावात्मक दशा नहीं है। वह एक ऐसी अनिवर्चनीय समता दिलाने वाली अवस्था है, जहां माधुर्य, मौज और लापरवाही अपने आप फूट निकलती हैं। यह अवस्था सब में सर्वात्मा प्रभु को देखने की है। यह अवस्था जहां कहीं दृष्टि पड़े उसी में अपने आत्मदेव को देखने की है। यह अवस्था यह अनुभव करना है कि सर्वात्मा 'सब' स्वयं सौंदर्य है, और वही मैं हूं, वहीं तू है, तत्वमसि,।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काल-चक्र

—श्रीचन्द 'विजयन्त'

स्वामी राम का विचार है। "यह अनुभव करके कि सारा भारत वर्ष, प्रत्येक भारतवासी में मूर्तिमान है, प्रत्येक भारत सपूत को सम्पूर्ण भारत की सेवा में रहना चाहिए।"

परमपूज्य स्वामी राम का यह आह्वान उस समस्त भारत की भावी पीढी के लिए आज एक चुनौती बन गया है, जो विद्यालयों में जाकर गरीब-राष्ट्र के उतपीडन को पूर्णतः भूल चुकी है। हम पढ़ क्यों रहे हैं? मांगने के लिए! क्या? नौकरी! किससे? भारत वर्ष हो! मांगना कोई अनुचित नहीं है किन्तु मांगा उसी से जाता है, जो समृद्ध है। फिर हमारा भारत तो गरीब देश है और रीत यह है कि गरीब से माँगा नहीं जाता उसे तो और भी दिया ही जाता है।

गरीब भी साधारण तौर पर नहीं। असंख्य विश्व की जातियों ने इसके भरे कोषागार को कई बार लूटा है किन्तु स्वसंस्कृति का मूल 'त्याग' होने के कारण एवं 'अर्थ' अथवा पाषाण खण्डों (रत्नों) को हमने कदापि महत्व नहीं दिया है। हमारी तलवार यदि उठी भी तो सिर्फ 'धर्म' की रक्षा के लिए उठी। लंका को जीतने के पश्चात् भगवान श्रीराम ने उसे अपना आनिवेश नहीं बनाया अपितु विभीषण को सौंपकर अयोध्या आ गये थे।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् भी हम नैतिक आदर्शों को सही रूप से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंगीकृत नहीं कर पाये हैं, यह हमारे लिए अत्यन्त विषाद का विषय है। देश की एक से एक हुतात्मा ने इस जन्म सिद्ध अधिकार के लिए अपने प्राणों की बलि चढ़ा दी। लेकिन क्या उनकी भावनाओं एवं स्वपनों को हमने गहरी दृष्टि से सोचा है कि स्वतन्त्रता प्राप्ति के तीन दशकों से लगातार हम राष्ट्र पर बोझ बनते चले आ रहे हैं। यदि यही क्रम निरन्तर चलता रहा तो देश का बुढ़ापा कितना भयानक होगा।

भूल-सुधार

प्रमाद वश फरवरी १९८१ के 'राम-सन्देश' में सम्पादक के स्थान पर श्रीचन्द 'विजयन्त' छप गया था। पाठक-गणों को सूचित किया जाता है कि पूर्ववत् 'निर्द्वन्द्व' जी ही 'राम-सन्देश' के सम्पादक हैं।

— व्यवस्थापक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री मद्भगवद्गीता की महानता

श्री मत् भगवत् गीता से अभिप्राय है
श्री=शान्ति, कीर्ति, लक्ष्मी, शक्ति आदि-२
मत्=बुद्धि, ज्ञान
भगवत्=दिव्यता, श्रेष्ठता।
गीता=अमर गीत

शान्ति, बुद्धि और श्रेष्ठता देने वाला अमर गीत

यह एक परम रहस्यमय सामाजिक और व्यावहारिक रीतियों का जन-कल्याण के लिए सुन्दर सरल भाषा में लिखित एक सुन्दर गुलदस्ता है। यह प्रवृति में निवृति की शिक्षा देता है। मनुष्य को कठिन से कठिन और प्रतिकूल परिस्थितियों में घोर संघर्ष और निरन्तर परिश्रम करते हुए भी और विकट समस्याओं से घिरे हुए जीवन में भी अपने आपको अकर्त्ता और निर्लेप समझते हुए, नव उत्साह, निष्ठा और आत्म विश्वास द्वारा शान्ति और आनन्द से भरपूर मस्ती भरा जीवन व्यतीत करने की उक्ति सिखलाती है। किसी भी अवस्था में दुःखित या खिन्नचित अनुभव करना, महान् शक्तिमान अन्तरात्मा को भूलना है अज्ञान है और घोर नास्तिकता है।

श्री मद्भगवद्गीता अपने मन और इन्द्रियों को पूर्ण रूप से अपने वश में करके विषय वासनाओं से रहित होकर लोक कल्याण के लिए यज्ञमय जीवन व्यतीत करने की प्रेरणा देती है ।।

गीता-ज्ञान जीवन कला का एक सर्वश्रेष्ठ नियम है। इसका मनन करने से आपका हृदय शान्ति और प्रसन्नता से भरपूर होगा। आपके चेहरे पर प्रेम भरी मुस्कराहट और तेज होगी। मस्तिष्क में बुद्धि, ज्ञान और निष्ठा होगी और शरीर के प्रत्येक अंग में शक्ति और प्रत्येक रग में नया और शुद्ध रक्त संचार करने लगेगा। इनके द्वारा ही आप अपने जीवन को शुद्ध विचार, ओजस्विनी वाणी और कुशल व्यवहार से युक्त समोन्नत बनाने में सफल होगें।

श्री मद्भगवद्गीता समस्त भू-मण्डल के मत-मतान्तरों का सार है इसको सभी आदर की दृष्टि से देखते हैं। यह साम्प्रदायिकता और संकीर्णता से रहित है। विभिन्न विदेशी, विभिन्न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मत-मतान्तार के अनुयायी, विभिन्न भाषा-भाषी, अपनी-अपनी देश भाषा में इसका अनुवाद, अपने देश के लोगों को लाभार्थ करके अपने आपको कृतकृत्य मानते हैं। संसार की जितनी भाषाओं में इसका अनुवाद हुआ है और किसी भी पुस्तक का नहीं हुआ।

यह प्राणीमात्र के लिए सार्वभौमिक है। यह लोगों के विचारों में मतभेद बढ़ाने के लिए नहीं अपितु विभिन्न मतों का एकीकरण करके उनमें एक दूसरे के प्रति सहनशीलता, प्रेम, सद्भावना उत्पन्न करके उनमें अप्रकटता में दिखने वाली भेदता में अभेदता अनुभव कराती है और प्राणी मात्र के मंगल और हित में अपना ही मंगल और हित अनुभव करने की शिक्षा देती है।

श्री मद्भगवद्गीता भय, घृणा, काम, क्रोध, लोभ आदि असुरी वृत्तियों (कौरव सेना) से उत्पन्न प्राणी मात्र के शोक, मानसिक दुःख और भ्रान्ति की निवृत्ति कराती है और मनुष्य में अपने कर्त्तव्य के प्रति दृढ़ता और निष्ठा उत्पन्न करके उसमें आत्मविश्वास, उत्साह और शक्ति का संचार करके शारीरिक, मानसिक और सामाजिक उन्नति का मार्ग सिखलाती है।

श्री मद्भगवद्गीता के तत्व ज्ञान ने शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा का संकलित विचार किया है। इसमें व्यष्टि, समष्टि, सृष्टि और परमेष्टि के बीच एकात्मकता प्रतिष्ठापित की है। इसमे धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष चतुर्विध पुरुषार्थ की उपासना के द्वारा मानव के पूर्ण विकास का मार्ग प्रशस्त किया है। जिससे व्यक्ति अपनी पूर्णता का अनुभव कर कर्त्तव्यनिष्ठा, यज्ञमय, कर्मोपासना के साधक की प्रतिष्ठा प्राप्त कर सकेगा।

संसार के किसी अन्य धर्म ग्रन्थ में धर्म का इतना व्यापक, विशद और प्रशस्त दृश्य हमें दिखाई नही देता। न अन्य किसी ग्रन्थ में दर्शन और काव्य का इतना सुंदर चमत्कार पूर्ण और मनोहर समन्वय ही दिख पड़ता है। इसमें वे सरल से सरल और सुन्दर से सुन्दर वाक्य हैं जिनमें उच्चाति उच्च आचरण का दार्शनिक तत्व भरा हुआ है जिनमें इतना अद्भुत आकर्षण है कि वे सहृदय पाठकों को आप ही अपनी ओर खींच लेते हैं जिनके वशीभूत हो कर साधक का व्यक्तित्व एक अनोखे मनमोहक सांचे में ढल जाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

FORM IV

(See Rule 8)

1. Place of Publication		.. Swami Ram Tirth Mission Rajpur D Dun
2. Periodicity of it's Publication		...Monthly.
3. printer's	Name	.. Om prakash Sharma.
	Nationality	...Indian.
	Address	. New Ideal Printing House, 4-B, Neshvilla Road, Dehra Dun.
4. Publisher's	Name	.. Swami Amar Muni.
	Nationality	.. Indian.
	Address	...Swami Ram Tirth Mission. Rajpur, Dehra Dun.
5. Editor's	Name	.. Kaka Hari Om 'Nirdwandwa'
	Nationality	...Indian.
	Address	...Swami Ram Tirth Mission, .. Rajpur, Dehra Dun.
6. Name & Address individuals who own the newspaper and partners or shareholders holding more than one percent of the capital.		...Ram Tiith Ashram. Rajpur, Dehra Dau.

I, Swami Amar Muni hereby declare that the paticulars given above are true to best of my knowledge and blief.

SWAMI AMAR MUNI
Publisher

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रवचन

[गोता भवन, अमृतसर में दिया गया प्रवचन]

भजन

भजन बिन वृथा जन्म गयो ।
बालपनो सब खेल गंवायो, यौवन काम बह्यो ।
बूढ़े रोग ग्रसी सब काया, पर वश आप भयो ।।
जप, तप, तीर्थ, दान न कीन्हो, न हरि नाम लियो ।।
ऐ मन मेरे ! बिना प्रभु भजन, जाकर नरक पयो ।।

[२]

जय कृष्ण हरे श्रीकृष्ण हरे ।
जय दुःखियों के दुःख दूर करे ।।
जब चारों तरफ अन्धयारा हो,
आशा का दूर किनारा हो,
जब कोई न खेवन हारा हो,
तब तू ही बेड़ा पार करे ।।
जय कृष्ण हरे —..........
तू जो चाहे सो ही कर दे,
राई को पर्वत कर दे,
तू पूर्ण कर दे उसकी आशा,
जो जन तेरा ध्यान धरे ।।
जय कृष्ण हरे ....

माताओं, देवियों व सज्जनों ! असत्य के साथ हमेशा युद्ध करना चाहिये । गौरव होना चाहिये अपने सत्य पर । भजन तथा आत्मचिन्तन शुभ या अशुभ भावनांए जैसी-जैसी मनुष्य के हृदय में हों कारण-सूक्ष्म-स्थूल की उत्पत्ति के रूप में आ दिखती हैं । जब परमात्मा सबके अन्दर है तो ईश्वर का समर्पण छोड़, सत्य के प्रिय नियमों का त्यागकर, इच्छुक पदार्थों की बाहर खोज करते हैं । जिसे आत्मा का बोध हो गया, वह विश्व की सफलता की अपने अन्दर ही खोज करता है ।

स्वामी राम कहते हैं "एक फोटोग्राफर ने एक औरत की फोटो ली । नैगेटिव को देखा तो मुंह पर धब्बे पड़े दिखे । सोचने लगा न जाने हाथ हिल गया या कैमरा ठीक नहीं या पानी के कतरे पड़ गए । "जरा दोबारा बैठिये" । देखता है उसका मुंह तो साफ है । फिर जो फोटो लिया तो फिर धब्बे आए । क्या हो गया ? चन्द दिनों बाद पता चला कि वह औरत चेचक में पड़ी है । चक्षु चरम अन्तर के रोग को नहीं देख सकते । कैमरा सूक्ष्म का पता लगा गया । चेचक अभी फूटी नहीं थी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक दो जिल्द अन्दर थीं, आ रही थी। स्वामी राम कहते हैं जो बाहिरी रोग हैं दरिद्रता इत्यादि यह सारी तेरी अन्दर की भावना उछल बाहर आ गई है। भावना सूक्ष्म रूप से मनुष्यों के अनेक कार्य्यों में रिजर्व रहती है और समय-समय पर जैसे बीज अंकुर ले आते हैं आपके पूर्व के संस्कार आपके विश्व का शरीर का दुःख-सुख, सुन्दरता-असुन्दरता के रूप में आ प्रगट होती है।

एक मनुष्य की आयु पचास साल की है। वेद कहता है — ऐ मानव ! तू सौ साल जीने की इच्छा कर। जल पीने का मन्त्र हैं, भोजन करने का मन्त्र है — भाव यही है कि भावना शुभ बनी रहे।

एक महात्मा को किसी ने पूछा — आपको भजन करते कभी नहीं देखा। वह उत्तर देते हैं— मुझे एक चिन्ता भजन नहीं करने देती कि कोई श्वास खाली तो नहीं जा रहा। भजन सब भावना को बनाने के लिये होता है ताकि अच्छे से अच्छे विचारों की उत्पत्ति हो जाए।

एक घड़ी आधी घड़ी, आधी से पुनि आध।
तुलसी संगत साध की, हरे कोटि अपराध।।

हम तत्व को समझ कर वृत्ति को आत्माकार बनाते हैं। अभ्यास करते-करते शक्तियां व महानता प्रगट होने लगती है। उपनिषदों में एक बड़ा रहस्यपूर्ण दृष्टांत आया है, शिक्षा है, उदाहरण है—

एक सत्यकाम लड़का ज्वाला ब्राह्मणी का पुत्र था। जब शिक्षा के योग्य होता है तो माता को कहता है — आज्ञा दो तो मैं किसी ब्रह्मवेत्ता से जीवन को सार्थक बनाने की शिक्षा लूं।

तीन युग बाहर नहीं हृदय में हैं। एक जीव सृष्टि है और एक परमात्म सृष्टि। परमात्म सृष्टि के यहां कोई मतभेद नहीं, वह सदा एक समान है। आपकी वृत्तियां ही द्वापर त्रेता का रूप धारण करने लगती हैं। मैंने स्वयं देखा छोटी-छोटी लड़कियों को कहते, "चलो पिताजी सत्संग।" पिताजी कहते हैं – बेटी ! तुम जाओ। हम घर को ध्यान रखेंगे। पराकाष्ठा है अज्ञान की। बूढ़ों के दिमागों को बड़ा घुन लगा हुआ है। ज्यों-ज्यों आयु बढ़ती जाती है, मोह-ममता भी बराबर बढ़ती जाती है।

ईश्वर ने तो पांच तत्व बना दिए हैं। जीव जैसे-जैसे करते हैं, वैसे-वैसे होते चले जाते हैं। पवित्र रहिये, आपका हृदय सत्युग है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्यकाम माता से गौत्र पूछता है गुरुदेव गौतम ऋषि को बताने के लिये। माता ज्वाला कहती है - गौत्र का मुझे पता नहीं। जब शादी हुई तो शर्म के मारे मैं गौत्र न पूछ सकी और फिर सेवा में ही जुटी रही। तुम इतना ही कह देना में ज्वाला ब्रह्माणी का पुत्र हूं। सत्यकाम जाता है। गौतम ऋषि गौत्र पूछते हैं तो सत्य-सत्य माता के कहे वचनों को कह देता है। ऋषि सोचते हैं ब्र ह्मण के अन्दर कपट कम ही होता है। कहते हैं सत्य ही बोल रहा है।

चरम चक्षु के शुद्ध हो जाने पर चरम शरीरों को देखने लगते हैं। इसी प्रकार अन्त:करण को शुद्ध करने से दूसरों के अन्त:करण की पहचान होने लगती है। आत्मसाक्षात्कार हो जाता है तो पहचान लेता है किस-किस को आत्मसाक्षात्कार हुआ है, और किसे नहीं। ब्रह्मज्ञानी की गत ब्रह्मज्ञानी जाने। जैसे डाक्टर देख कर बता देता है बीमारी को इसी प्रकार तत्वेत्ता भी पहचान जाते हैं जिज्ञासु कैसा है।

ऋषि सत्यकाम का संस्कार वगैरा करते हैं और कहते है अब तू हमारे समर्पण हैं। कहता है जैसी आपकी आज्ञा पूर्ण समर्पण है मेरा। ऋषि ४०० बूढ़ी दुबली गाएं दे कहते हैं इन्हें जंगल में ले जाओ और जब १००० हो जाएं तो लौट आना। ८-१० साल का बच्चा, रक्षा की बजाए उसे आर्डर दे दिया जाता है। कोई वक्त था समर्पण में बलिदान देने की बड़ी शक्ति थी। अब तो हमें आज्ञा, समर्पण, बलिदान का पता ही नहीं होता क्या है। बालक सत्यकाम ४०० गौ को ले चला; जाता है गौओं की भली प्रकार रक्षा करता है। आवाज आती है - ऐ सत्यकाम! अब गुरुगृह में ले चलो हम एक हजार हो गई हैं। ऐ सत्यमाम! तेरी सेवा से प्रसन्न हो तुझे आत्मदेव के पहले पाद की शिक्षा देता हूं - "वह प्रकाशवान है"। दूसरे पाद का अग्निदेव कल उपदेश देंगे। सत्यकाम चल पड़ता है। दूसरे दिन अग्नि जलाता है तथा ध्यान में बैठता है। तो आवाज आती है ऐ सत्यकाम! मैं अग्निदेव हूं। तुझे दूसरे पाद का ज्ञान देने आया हूं - "वह अनन्तवान है।" कल तुझे तीसरे पाद का ज्ञान होगा। जब सन्ध्या में एकाग्र होता है तो तीसरे पाद का उपदेश होता है "पर ब्रह्म का तीसरा पाद ज्योतिवान् है।" फिर आगे चल पड़ता है गौओं को साथ लिये। तालाब के किनारे रात्रि आती है। एक जलचर निकलता है चौथे पाद का उपदेश देने - "वह आदित्यवान है।" वह सूक्ष्म भी और स्थूल भी हो सकता है। पांचवें दिन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१००० गौओं सहित गुरु के पास पहुंचता है। ऋषि प्यार करते हैं और कहते हैं बेटा! मैं तेरे मुख पर ब्रह्म तेज देख रहा हूं। तेरा हृदय शान्त व प्रसन्न चित्त हो चुका है। सत्यकाम बोला – आपकी आज्ञा का पालन करते-करते ब्रह्मा ने चारों पादों का ज्ञान दे दिया। ऋषि कृत्य-कृत्य हो जाते हैं। बालक समर्पण करके आज्ञा का पालन करता है। जैसा-जैसा करते हो (अधिकारी बनते हो) परब्रह्म स्वयं ही देता चला जाता है। हमारी बुद्धि, शरीर, वातावरण के पीछे एक शक्ति काम कर रही है जो हमारे किये पर छोटा बड़ा बनाती है। वेदान्त अकर्मण्य नहीं बनाता। जो अकर्मण्य होते चले जा रहे हैं उनका कभी कल्याण नहीं हो सकता। कर्मशील बनने से आत्मा को अमर समझ शरीर को न्यौछावर करने की शक्ति आती है। परन्तु हमको तो समर्पण होने में ही शर्म आती है।

बताइये एक गरीब खानदान का लड़का किसी अमीर का मुतबन्ना बन कर क्या अमीर नहीं हो जाता? मुतबन्ना बन कर जाति को, बदलना होता है उसे फिर जिसका मुतबन्ना बनता है, उसी को अपना पिता समझता है और उसी के घर को अपना घर। पहले घर का परित्याग करने पर कोई दुःख नहीं रहता। प्रारब्ध ही बदल जाती है। आखिर राम शरण क्या चीज है? जाति को बदल, देह-अध्यास से उठना— मैं शरीर नहीं हूं, मैं तेरा हूं, मैं किसी का नहीं हूं। आज से वृत्ति का प्रवाह आत्मचिन्तन की ओर हो जाता है। अब वृत्ति आत्मगृह के अन्दर आ जाती है। जो जीव व्यवहारिक तरीके से ऐसा करता है, भावना से, कर्त्तव्य से बस उसका बेड़ा पार है।

वेदान्त को उत्तम, महान तथा जीती जागती विद्या कहा है। यह अमर करने वाली विद्या है। जहां ज्योतिष शास्त्र कहता है तेरे पर दस साल का शनि ग्रह है, वहाँ वेदान्त कहता है तू एक बार राम समर्पण हो जा, तेरे सभी ग्रह टल जायेंगे। योगी तिथि तथा मुहुरतं को नहीं पूछता, तिथि इत्यादि से ऊपर होता है।

जब गरीब का पुत्र था तो सर्दी, गर्मी, दुःख, सुख पता चलते थे। अब कहां गए? अब तो अमीर का मुतबन्ना बनने पर सुख ही सुख है। दिल बदल ले। दुनियां का आसरा छोड़ राम का आधार ले ले तो प्रारब्ध ही बदल जाती है। हमारे में इतना साहस, विश्वास, संगति (उच्च संगति) कहां!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिन्हें आप संस्कार कहते हैं डारविन थ्यूरी उन्हें लकीरें कहती है। आँख, कान इत्यादि तो नौकर हैं बुद्धि के। इधर सत्संग की लाईन आती है उधर कुसंग का गड्डा उस लाईन को पार कर जाता है। मोटर कार तो एक बार घूमी परन्तु गड्डे घड़ी-घड़ी फिरे। यह संबंधी मित्र नहीं यह तो प्रकृति के टैस्ट हैं। वह ही टैस्ट लेता है। मुश्किल सवालों को हल करो और यदि अच्छी तरह हल हो जावें, तो वही करता है इसे वजीफा दो। वही चेतनदेव भाई-बन्धुओं के रूप में टैस्ट लेता है और वही पास होने पर अमर जीवन का हार पहना देता है। यद्यपि सब के अन्दर वह ही है — "कहीं मैं समझा रहा हूं कहीं बुझा रहा हूं।"

जो जिसका ग्राहक है उसी का भाव पूछे। आप तो आत्मदेव के ग्राहक हो अज्ञान का रेट पूछने की क्या जरूरत? कमजोरी बुराइयों की ओर जाने का क्या मतलब? आज हम पहले फल चाहाते हैं। डिप्लोमा दे दो बी. ए. फाइनल का, इम्तहान न लेना। भला यह भी कभी हुआ? पहले टैस्ट में से गुजरना ही होगा। आप कहते हो — हे भगवान्! हे प्रभु! सुख दो तो तेरा भजन करेंगे। कृपा करो फिर तेरा भजन करेंगे। यह व्यर्थ की बात है। जो बनना है सोचो, दिमाग को लाईन बनाओ यदि भाग्य में सत्संग नहीं तो एकांत का सेवन करो। जैसे मिलिटरी मैन सखे का नक्शा लेकर चलता है, गुरु के बताए रास्ते पे चलो। अभी मंसूरी पहुंचने में २२ मील रहते हैं, तो बाग बगीचे आने लग जाते हैं। इसी प्रकार थोड़ा भजन करने पर भी ऋद्धियां सिद्धियां आ नाचने लगती हैं।

एक अरूची रूहानी किताब है ऐडीसन की जिसने बिजली का आविष्कार किया। वह किसी से मिलता न था। किसी ने कारण पूछा - तू क्यों नहीं मिलता? बोला - ओ कमजोर निश्चय वाले लोगों। तुम्हारी कमजोरी की मोहर तुम्हारे चेहरे पै लगी हुई है। मैं तुम्हारे दर्शन नहीं करता वही अक्स मेरे अंदर न आ जावे। मैं नैपोलियन जैसों को मिलूंगा। मैं मुर्दा दिलों का ग्राहक नहीं, जीते जागतों का ग्राहक हूं। आखिर उसने जनता की आवाज पर सफलता का रहस्य पुस्तक लिखी।

महात्मा जानते हैं इस पर सत्संग की लाईन जाते ही मिट जावेगी तो उसी के संकल्प को लेकर दूर कर देते हैं। अश्रद्धा पैदा कर देते हैं ताकि बार-बार नेत्रों के सामने न आए।

क्रमश:

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Prakriti' and Purusha

(Adopted 'Gems of Truth'.
by — Jayadayal Goyandka

The world consists of only two principles — Matter and life. Purusha represents life and Prakriti represents matter. Purusha is the seer and prakriti the abject of Sight. Purusha is immutable. Both these Principles are patent to everyone. The existence of both these must be recognized in every one of us. Of these two, that which sees is the seer and the other which is visible in the shape of creation is the object of sight.

All individual Sauls or Jivas are fragments of the Pramatma. A spark of fire, is not different from fire, the two are identical in essence ; even so the Jiva too is not different from the Pramatma. This visible universe being an evolute of Prakriti, is nothing but the Prakriti is only a modification of Prakrti.

The above line from the Geeta, declares Prakriti to be responsible for bringing into existence the effect (creation) and the instruments (senses). The five elements such as ether etc, and their five attributes, viz., Sound etc. Constitute the effect. The five organs of action plus the mind, the faculty of discrimination and ego—these thirteen constitute the instruments. Prakriti is the source of these all. Thus being an evolute of Prakriti the whole of this objective world is nothing but Prakrti Itself.

Now let us try to understand the relation between, Prakrti and Purusha. Prakrti is not a part of Purusha. She is his Shakti, (Energy) Shakti (Energizer). Shakti is not diffe—rent from the Shaktiman, At the time of the final dissolution of creation the whole of this objective world gets dissolved into Prakrti. Then Prakrti alone remains and the objective world disappears. The Vedanta believes Prakrti to be indefinable and the Sankhya sysrem conceives her to be beginningless and eternal. The yoga system also declares Prakriti to be beginningless and eternal When active she

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

menifests herself inthe form of this objective world, and when she is inactive she remains in her unmenifest state. The process of evoluiton in the objective world is as follows :—

From Prakrti in her original state evolves the Mahattatva which is also know as the principle of cosmic intelligence. From cosmic intelligence springs up the cosmic Ego and from the cosmic Ego arises the cosmic Mind. From the same ego evolves space or ether, from ether air, from air fire, from the water and from water the earth Some of the great Risis have declared these to be the cause of subtle Tanmatras as well as of the senses. Some have traced the origin of this Tanmatras to the Ego and the others to the Mahattattva itself. They, however, means one and the same thing. The cosmic intelligence, the cosmic Ego and the cosmic mind are there different aspect or phases of the some principle, viz, the Mind (अन्त:करण). From the subtle elements or the Tanmatras evolve the five senses of perception, the five organs of action and the five objects of the sences of perception. The totality of these constitutes the objective world.

—★—

MAYA

Swami Ram

Torch whirling (Mahratti jwala) is not uncommon in certain parts of India. The glowing flame looks now like a broad circle of light, now appears to be an unbroken streak of fire, again assumes an elliptical form, goes up, comes down and manifests many amusing phenomena, Are these phenomena inherent in the flame ? Do they come out of the torch or fire brand ? Do they come from without ? when the Mahratti is not revolving do the phenomena enter into it ? Or do they go elsewhere? To all these queries one has to answer in the negative. The torch in whirling motion exhibits straight and curved lines; when motion stops there is no trace of surch appearances in the torch. Even when the torch was in rapid motion, the curves, though visible, were far from being real.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

1/23915

Just so absolute consciousness like the fire brancd at rest has no trace of manirfold names and forms (the Phenomenal words), and even when the varietly of names and forms makes an appearance, their appearance is illusory like that of the Mahratti phenomena, consciousness being always untouched and untainted by them. The one indivsible flame is ever present in all the phenomena, but the phenomena do never exist in the flame. Similarly, in all names and forms Rama is manifest, but in Rama names and forms are evanerscent. As the Mahratti Phenomena owe their seeming existence to motion, so the multiplicity of names and forms (that make up the world) owe their seeming existence to the Maya Shakti of.

Shakti or power has not any existence of its own It may be manifested, it may not be manifested, It can not exist apart. This Shakti in :he case of the individual is revealed as what may be called consciousness's motion or activity, manas (Mind). Manas in motion and the Phenomenal world being the obverse and reverse of one and the same thing, manas at rest is identical with consciousness. The absolute (Brahma) Manas, purged of its dross (desires, attachment) loses its fickleness and tends to become steady. Perfect steanes being attained, manas is one with Brahma. By this Sakshatkar, Maya is overcome and the world is converted into a Garden of Eden, the Lost Paradise is Immedietly regained. Beauty breales in eveiyiwhrse, the Sense of raparateness being killed out, all cares and anxieties are merged in the supremely sublime Existence, consciousness and bliss for ever and ever.

A yaung man in the presence of Rama plucked a beautyiful rose with a view to enjoy its smell. No sooner did he bring it in contact with his nose, than a bee stung him just on the tip of the nose the man cried with pain, the rose fell from his hand.

Do the petals of every rose enfold a bee ? Certainly, there is not a rose of sensual pleasure which has not got the bee of injury Concealed init. Unbridled desires must be punished by inevitable pain.

Ye given to dreadful oblivior, forget not your own self. Ye need not pluck the goudy rose, Wherever the full Blown rose lies there you are, its vermillion or sweet scsnt is your

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

own. King, his shakes are yours, beauty her Chorms are yours, diamond or gold its burning rays are yours. Why entertainvain desires, and what for ? Realise your unity with the all, your oneners with God. You are that divine Krishna who demeed hand in hand with everyone of the hundreds of Gopis at one and the some time in the sea as well as in the palace, in the garden as well in th9 desert, in the battle filldor the private chamber you are always equallv present.

Swami Ram

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आश्रम-समाचार

श्री महाराज १५ फरवरी को, देहली से प्रस्थान करके ब्राह्ममुहूर्त में स्वामी रामतीर्थ मिशन राजपुर पधारे।

तत्पश्चात् ५६ राजपुर रोड़ पर सत्संग भवन में रविवार को प्रवचन कर धार्मिक-जिज्ञासुओं के हित में, वेदान्त के गूढ़ रहस्यों को सरल भाषा में समझाया।

१८ फरवरी को काली कमली-ऋषिकेश होते हुए स्वामी श्री महाराज दिल्ली-सम्मेलन के लिए रवाना हुए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूरभाष—८४२२५ राजपुर, ४२६७ देहरादून, तार का पता — (वेदान्त) देहरादून, रजि. नं डी. एन. १५

सूचना

१—मासिक पत्रिका 'राम सन्देश' न मिलने पर अपने समीपस्थ डाकखाने (पत्रालय) से पता करने के पश्चात हमें सूचित करें। क्योंकि कभी-किसी कारणवश "राम सन्देश" १५ ता० तक निकलता है। इसलिए शिकायत पत्र अपनी २ ग्राहक संख्या सहित दिनांक २० के बाद प्रेषित करने का कष्ट करें।

१—आप आश्रम में किसी भी प्रकार का धन भेजते समय यह लिखना न भूलें कि वह धन किस निमित्त भेजा जा रहा है तथा चैक स्वामी रामतीर्थ मिशन के नाम पर ही भेजें :

३—जो पाठक इस पत्रिका के आजीवन सदस्य बनना चाहते हैं वे अपना सदस्यता शुल्क सम्पादक के नाम प्रेषित करें। सदस्यों को आजीवन पुनः बिना किसी शुल्क के यह पत्रिका प्रेषित की जायेगी।

४—'राम सन्देश' के विदेशी ग्राहक अपना वार्षिक शुल्क १५ रु० भेजें। क्योंकि परमाध्यक्ष जी की आज्ञानुसार १२ रु० के स्थान पर ३ रु० वृद्धि का निर्णय लिया गया है।

५—पाठक अपनी अंक सम्बन्धी, प्रतिक्रियाएं, अवश्य भेजें, जिससे पत्रिका की उन्नति सम्भव हो सके।

६—अपनी रचनाएं — लेख, कविताएं भेजते समय स्पष्ट शब्दों में पृष्ठ की एक तरफ ही लिखें।

७—हर प्रकार की सामाजिक, शिक्षा सम्बन्धी, आध्यात्मिक या पारस्परिक तुलनात्मक आपकी लिखित वैचारिक भावनाएं सादर आमन्त्रित हैं।

—सम्पादक

बुक पोस्ट

ग्राहक संख्या 534

श्री/श्रीमती गुरुकुल पुस्तकालय

स्थान गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय

डाकखाना

जिला हरिद्वार

मासिक पत्र—
"राम-सन्देश"
स्वामी रामतीर्थ मिशन
राजपुर, देहरादून (उ०प्र०)
Pin—248009 भारत

स्वामी रामतीर्थ मिशन, राजपुर देहरादून (उ० प्र०) के लिए प्रकाशक स्वामी अमर मुनि द्वारा न्यू आईडियल प्रिन्टिंग हाउस (कांग्रेस भवन के पास) ४-बी नेशविला रोड, (देहरादून) में, मुद्रित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राम-सन्देश

स्वामी रामतीर्थ मिशन

ॐ

॥ सर्व भूत हिते रताः ॥

पुस्तकालय
गुरुकुल काँगड़ी

जून
१९८१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संकेतिका

विषय	लेखक	पृष्ठ
राम हृदय	स्वामी राम	१
मैं प्रकाश–स्वरूप हूँ	स्वामी राम	२
चरणामृत का वैज्ञानिक महत्व	बल्लभदास बिन्नानी ब्रजेश	३
गीत	राम समझ त्रिपाठी	५
उसका पुरस्कार	गजराज सिंह राणा	६
अभिसार	गोपाल लाल शर्मा	८
शौक और आदत	महेन्द्र कुमार मिश्र	१०
फूल और काँटे	जगदीशचन्द रांगड़ा	१३
पनघट पर	कुन्दनसिंह नेगी	१७
प्रबुद्ध नारायण	रमेशचन्द्र जोशी	१९
भग्नावशेश	श्री अनिल भट्ट	२२
About Swami Rama		**23**
आश्रम - समाचार		२४–२५

संस्थापक—
ब्रह्मलीन स्वामी हरिओउम् जी महाराज
संवर्धक—
ब्रह्मलीन स्वामी गोविन्द प्रकाश जी महाराज
व्यवस्थापक—
स्वामी अमर मुनि जी महाराज

सम्पादक—
बाबा हरिओउम् "निर्द्वन्द्व"

आजीवन सदस्यता शुल्क—
भारत में — १०० रु०
विदेश में — ५०० रु०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'राष्ट्र के हित के लिए यत्न करना ही विश्व की शक्तियों अर्थात् देवताओं की आराधना है'-स्वामी राम

वेदान्त, अध्यात्म, संस्कृति, धर्म एवं भक्ति का सजग सन्देशवाहक
तथा स्वामी राम के आदर्शों का एकमात्र लोकप्रिय मासिक—

राम सन्देश

वेदोपनिषदां तत्त्वम् सत्यं नित्यं सनातनम् ॥
तत्सर्वं "रामसन्देशे" पत्रेऽस्मिन्नवलोक्यताम् ॥

वर्ष ३७ अंक ६	राजपुर, देहरादून, जून १९८१	वार्षिक भेंट १०) एक प्रति ८५ पैसे

राम हृदय

यदि आप किसी अर्थ
या ईश्वर की उपलब्धि चाहते हैं,
यदि आप किसी भी पदार्थ को पाना
चाहते हैं, तो परछाई के पीछे मत भागोअपने
ही सिर को छुओ, अपने भीतर प्रवेश करो। इस
तथ्य का अनुभव करो, और आप देखेंगे कि तारागण
आपकी ही दस्तकारी हैं, आप देखेंगे कि समस्त
प्रिय पदार्थ, सारी मोहने और लुभाने वाली
चीजें, केवल आपका अपना
ही प्रतिबिम्ब परछाई
है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं प्रकाश–स्वरूप हु

[महिलाओं और भद्र पुरुषों के रूप में मेरे ही आत्मन्]

शुद्धात्मा (सत्यस्वरूप) क्या है ? देह सत्यस्वरूप नहीं हैं, न चित्त ही असली अपना आप है न यह प्राण ही वास्तविक आत्मा है। आप कैसे जानते है कि दुनिया है ? अपनी चेतना के द्वारा आपकी चेतना की भी तीन प्रकार के परिवर्तनों अर्थात् वृत्तियों के अधीन होना पड़ता है। एक जाग्रत-चेतना है, एक स्वप्नशील चेतना है, और एक गाढ़ निद्रित चेतना भी है। आपकी चेतना तापमापक या वात-मापक यंत्र के समान है वह ताप यानी संसार की गुरुता को मापती हैं।

जाग्रत् दशा में चेतना सूचित करती है कि संसार ठोस है, कठोर है, अपने कानूनों और नियमों में जकड़ा हुआ है। स्वप्नावस्था में चेतना का निर्णय बिलकुल भिन्न हैं। किन्तु स्वप्न और निद्रा की अवस्थायें ठीक उतनी ही प्रबल हैं, जितनी कि जाग्रत्–अवस्था की। फिर हम देखते है कि आपका निद्रागत अनुभव ठीक उतना समय लेता है जितना कि जाग्रत काल का अनुभव अपने जीवन में आप उतना ही सोते हैं जितना जागते हैं। एक बच्चा, मानो, हर समय निद्रित हीं रहता है। ऐसा यह अनुभव सारे संसार को होता हैं। गाढ़ निद्रा या स्वप्नावस्था की चेतना के निर्णय जाग्रत-अवस्था की चेतना के निर्णय और ज्ञान का पूर्ण रूप में खंडन करते हैं।

अब वास्तविक वस्तु वह है, जो कल, आज और सदा एकसा हो। सभी को सत्य की यह कसौटी मान्य है। जो स्थिर रहता है, वही वास्तविक है। अधिष्ठान अर्थात् द्रष्टा के स्थिति-बिन्दु से यह चेतना तीन विभिन्न रूप ग्रहण करती है। जाग्रत दशा में यह चेतना देह से अपनी अभेदता स्थापित करती है और जब आप 'मैं' शब्द का प्रयोग करते हैं, तब आपको इस शरीर, इस देह-चेतना का बोध होता है। स्वप्नशील अवस्था में वह बिलकुल दूसरी ही दशा धारण करती है। आप बदल जाते हैं। स्वप्नशील द्रष्टा वैसा नहीं होता, जैसा कि जाग्रत – द्रष्टा है। आप अपने स्वप्नों में अपने को निर्धन देखते हैं, यद्यपि आप धनी हैं। आप अपने को शत्रुओ से घिरा हुआ पाते हैं, आपका घर अग्नि से नष्ट हो रहा है, और आप विवस्त्र जीते बचते हैं। अपने स्वप्न में आपने चाहे जितना पानी पिया हो, किन्तु जागने पर आप अपने को प्यासा पाते हैं।

क्रमशः

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चरणामृत का वैज्ञानिक महत्व

वल्लभदास बिन्नानी व्रजेसश स हित्यरत्न, साहित्यालकार

देवमन्दिर जाकर देवमूर्ति का नमस्कारादि-द्वारा पूजन करके फिर हम चरणामृत लेते हैं, और उस समय एक मन्त्र पढ़ते हैं — अकालमृत्युहरणं सर्वव्याधिविनाशनम् । विष्णुपादोदकं पीत्वा पुनर्जन्म न विद्यते, इसका अर्थ यह है कि – चरणामृत अकाल मृत्यु को दूर करने वाला है, और सब व्याधिथों का दूर करता है, इसका पान करके पुनर्जन्म नहीं होता । प्रतिपक्षी लोग इस पर फबतियां कसते हैं, और इसे दबी–जबान से अर्थवाद (बहुत बढ़ा चढ़ाकर कहा हुआ) कहते है, पर वे इसके महत्व को न जानने के कारण ऐसा कहते हुए सचमुच दयनीय है । वस्तुतः यह अर्थवाद नहीं किन्तु यथार्थवाद है । इसे यों समझिये —

चरणामृत जहां भगवान को प्रसाद है, जिन चरणों की हम पूजा करते है, उनका जीवन है, अमृत है, वहां एक दिव्य – महौषधि भी है । पूजा के समय ताँम्बे के पात्र में रखी हुई शालग्राम की प्रतिमा का मन्त्रोच्चार तथा गंगाजल के द्वारा स्नान एवं संस्कार किया जाता है उसमें तुलसी दल, केशर, चन्दन, कस्तूरी – आदि पदार्थ भी मिले होते है । यही चरणामृत है ।

शालग्राम गण्डकी नदी में प्राप्त होने वाला एक कसौटी की तरह पत्थर होता है, जिसमें स्वभाव से सूक्ष्म सुवर्ण के कण हुआ करते है। वेद सोने से सौ वर्ष की आयु बताता है । प्रवर्ण से घातक कीटाणु भी दूर होते है । उसका प्रमाण यह है कि – शेरनी का दूध अन्य पात्रों में कीटाणुओं के कारण विकृत हो जाता है । पर सुवर्ण के पात्र में विकृत नहीं होगा । वह जल सुवर्ण के कणवाले शालग्राम से स्पष्ट होने से उसके गुण लेता हैं ।

ताम्बे का प्रभाव तो विज्ञान सिद्ध है। उसमें रखा हुआ जल – रोगनाशक हुआ करता है । अब गंगा–जल लीजिये । उसकी घातक कीटाणुनाशिनी शक्ति तो विश्व – विश्रुत है, उहकी महत्ता हम आगे भी बतावेगे । तुलसीदल में भी अनेक व्याधियों के दूर करने की सामर्थ्य है यह आगे बताया जायेगा । विशेष करके मलेरिया के कीटाणुओं को दूर करने में तो उसकी अपूर्व – शक्ति प्रसिद्ध है ।

शेष रहे केश, चन्दन और कस्तूरी आदि । यह बहुत उत्तम औषशधिमां मानी जाती है, बहुत से रोगों में इनका उपयोय आयुर्वेद प्रसिद है । वेदमन्त्र जिनसे स्नान कराया जाता है, उनकी विलक्षण शक्ति तो प्रसिद्ध है ही, यह सम मन्त्रशक्ति निबन्ध में लिख चुके है । फिर वही जल शंख में डाला हुआ अद्भुत शक्ति सम्पन्न हो जाता है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस प्रकार चरणामृत रूप में हमें केशर, कस्तूरी चन्दन, तुलसीदल, से मिश्रित ताम्रपात-कणों का मन्त्रोच्चार से संस्कृत जल मिलता है फिर उस समय देवमन्दिर में धूप घृत - दीप के शुद्ध आलोक की प्राप्ति आदि से कीटाणु के अभाव वश वह जल अमृत सा हो जाता है। वह मकरध्वज औषधि समान समार्थ्य को धारण कर लेता है। उसके सेवन से अकालमृत्यु – हरण तथा सर्वनयाधि – विनाश में सहायता मिलना स्थवभाविक ही है। उस समय निःस्वार्थ एवं निष्काम-भगवद्भक्ति हो, तो वह पुनर्जन्म को भी दूर कर देती है। जहां चरणामृत-पान से दैहिक लाभ हैं वहां मानसिक एवं आत्मिक लाभ भी होते है – यह बात स्वयं जानी जा सकती है।

अपनी शक्ति को उच्चातिउच्च विषयों की ओर लगा दो ताकि कामुकता को समय ही न मिले।

रसायन शास्त्र की भांति धर्म में भो हमको अपनी प्रत्यक्ष अनुभूति को ही अंतिम प्रमाण मानना चाहिए।

जब आप अपनी दृष्टि में कार्य नहीं करते, तभी संसार के लिए आप सबसे महान कार्यकर्त्ता बन जाते हैं।

आपकी आत्मा किसी दूसरे के पुण्य पर आश्रित नहीं है।

आपकी सारी चिन्ताएँ किसी आन्तरिक दुर्बलता के कारण हैं; उस दुर्बलता को दूर कर दो।

सत्य किसी व्यक्ति-विशेष - ईसा या कृष्ण- की सम्पति नहीं है। सत्य सबकी एक सी सम्पत्ति है।

(स्वामी राम)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गीत

राम समझ त्रिपाठी

आज तुम्हारे अभिनन्दन में फागुन का प्रथम चरण लाया हूँ,
आज तुम्हारे ही वन्दन में कविता का प्रथम चरण पाया हूँ।

पुष्पों के पंचम्पराग से मैंने मधु के कलश सजाए,
पर जाने ऐसा लगता क्यों, इतने मधुर नहीं भर पाए,
मधुऋतु के पावन पनघट से मधु का प्रथम कलश लाया हूँ
आज तुम्हारे अभिनन्दन में......।

पीली पीली सरसों से पीला फागुन का लगता पीताम्बर,
लगते पीले हाथ धरा के अम्बर से है रचा स्वयंवर,
ऋतुओं के परिणय-बन्धन से धरती का प्रथम वरण लाया हूँ,
आज तुम्हारे अभिनन्दन में . . . .

आमों की अमराई जाकर मैंने यह मकरंद चुराया,
भौरों के मोहक गुंजन से भिनसारे में छंद सजाया,
मुग्धा के नवरंग निबंध से अँगड़ाता नवल लहर पाया हूँ।
आज तुम्हारे अभिनन्दन में , ...।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'उसका पुरस्कार' ★★★

गजराज सिंह राणा

अन्धकार ने अपने दामन में उजाले को समेट लिया, और इसी अन्धकार में एक काला साया दरवाजे के पीछे पत्थर की तरह बुत बना खड़ा था। जैसे ही उसने दरवाजे के अन्दर कदम रखा, साये के हाथ बिजली की तरह कौंधे, एक उसके मुंह पर और दूसरा दरवाजे की सिटकनी पर। साये ने अपनी जैकेट से एक पतला और लम्बा–सा औजारों का डिब्बा निकाला और दूसरे ही क्षण वृक्ष की छाल की तरह उसकी खाल को छील दिया। चारो तरफ खून था, मगर साये की आंखें चमक रहीं थीं और करीबन तीन मिनट बाद साये ने एक बोतल में माँस के कुछ टुकड़े डाल, खिड़की से अन्धेरे में छलांग लगा दी।

अगले दिन उत्त के इस श से शकानवे' के अखबार सूहेलोक' ने 'शैलस'अफ्रीकाछोटेदेरी मिो, के मरने की खबर देश के कोने-कोने में पहुँचा दी। राजधानी 'पिसला' में भगदड़ मच गई। बड़े-बड़े मन्त्रियों और राष्ट्रपति की एक विशेष मीटिंग बुलाई गई, सारे देश में आतंक छा गया। राजधानी के पुलिस चीफ के दफ्तर के सामने भारी संख्या में लोगों ने जुलूस निकाला। राजधानी में यह ग्यारहवीं हत्या थी। हर बार किसी सुन्दर सत्तरह-अट्ठारह साल की भूरे रंग की आंखों वाली लड़की की निर्दयता से हत्या कर दी जाती थी। शरीर कटा-फटा मिला था। हत्यारा 'रिपर' के नाम से प्रसिद्ध हो गया था। मगर यह था कौन ? यह किसी को मालूम न था। पुलिस विभाग में बड़े पैमाने पर तबादले होने लगे।

पिसला के दक्षिणी कोने में एक वीरान-सी गली थी, दो मकान थे, उनमें से एक में, जिसमें कुल दो कमरे थे, एक नवजवान टाइप-राइटर पर अंधाधुध टाइप किये जा रहा था। उसकी दुनियां बस इन्हीं दो कमरों तक सीमित थी। एक कमरा उसकी प्रयोगशाला व दूसरा उसके रहने के लिएथा। उसने १९७७ में शिकानवे विश्वविद्यालय से रसायन शास्त्र में स्वर्ण पदक प्राप्त किया था और अब शिकानवे के कानून के मुताबिक खुद की प्रयोगशाला में अनुसंधान कार्य में विलीन था। सरकार ने उसको सभी सुविधाएं दे रखीं थीं। मगर पैट्रिक शायद कुछ भी न कर पाता अगर पड़ोस के प्रोफेसर की लड़की 'मारीया' उसकी देख-भाल न करती। वह ही उसके खाने-पीने का ख्याल रखती। मां बाप से वंचित और रात-दिन किताबों से उलझने पर मारीया का प्यार पैट्रिक के लिए उसकी मंजिल तक पहुंचने का आधार था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"बाबा दुनियां में कितने लोग आये, मर गये किसी ने पूछा तक नहीं, कितने वैज्ञानिक हुए कोई याद करता है ? नहीं । सारे अव्वल दर्जे के मूर्ख थे, अपनी जिन्दगी बरबाद की और लाखों पढ़ने वालों के लिए मुसीबत खड़ी कर दी । पता है आज मेरे भौतिक शास्त्र में कितने नम्बर आये– आठ और कितने में से पूरे सौ और इससे पहले की मारीया कुछ बोलती पैट्रिक ने उसका मुहं दबोच लिया ।

"बातें कम काम ज्यादा" और वह खाना खाने लगा, मारीया उसकी कुर्सी के हत्थे पर ही बैठ गयी ।

"अच्छा बस एक बात और । यह जो तुम कुछ उबालते हो कुछ ठंडा करते हो लाल, पीला, नीला आखिर यह सब है क्या और कब तक चलेगा ?"

"एक नये कम्पाउंड की खोज" बस और कुछ ?

"ये दुनिया में थोड़े वैज्ञानिक हैं माथा पच्ची करने को, तुम्हें क्या सनक है? कर लोगे खुद"

मगर पैट्रिक इस कम्पाउंड मे अपने देश का भविष्य देख रहा था उसे पता था इसकी खोज के बाद 'शिकानवे' में ऊर्जा की कमी न होगी । शिकानवे एक खुशहाल व सुदृढ़ राष्ट्र होगा । उसमें परमाणु बम से खतरनाक बम बनाने की शक्ति होगी । उसने अभी से निश्चय कर लिया था कि इस कम्पाउंड के रसायन सूत्र के साथ - साथ वह इसका एक और नाम भी रखेगा - 'मारीया थायस' । पैट्रिक इन्ही ख्यालों में डूबा था, इसी बीच मारीया बर्तन उठाकर चली गयी ।

छः महीने बीत गये पैट्रिक रात - दिन काम में जुटा रहता । सुबह ही प्रयोगशाला में घुसता और रात को दस ग्यारह बजे बिस्तर पर जाता । कभी - कभी मारीया के बहुत जिद करने पर पिक्चर के लिए चला जाता था, कहीं घूम-फिर आता था । क्योंकि कभी - कभी मारीया की उदासी उसे मजबूर कर देती । पैट्रिक अब दुगुनी मेहनत से काम करता । रात को दो-तीन घंटे से ज्यादा तभी सोता जब मारीया उससे आकर झगड़ने लगती थी ।

इसी बीच दो और लड़कियों की घृणात्मक रूप से हत्या हो गयी । शहर बौखला गया । लोगों ने अपनी लड़कियों का कालेज में जाना बन्द कर दिया । दिन छुपते ही गलियां सुन-सान हो जातीं । किसी को पता न था कि कब किसी हंसतीं-खेलती बेटी को 'रिपर" चीर - फाड़ डालेगा । सारे देश में हंगामा मच गया । राष्ट्रपति ने 'रिपर' के पन्द्रह दिन में न पकड़े जाने की दशा में अपना त्याग-पत्र देने की घोषणा कर दी । मगर पैट्रिक बेसुध अपनी खोज में लगा रहा । वह अपनी सफलता की सीढ़ी की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आखिरी पैदान पर पहुंचने वाला था, कि एक दिन प्रयोग करते करते उसके हाथ से लगकर एक फ्लास्क में रखा तरल पदार्थ नीचे गिर गया। इस पदार्थ की उसे बेहद जरूरत थी। यही उसके प्रयोग का आधार था। पैट्रिक बेचैन हो गया। सफलता उससे करीबन दस मिनट दूर थी।

तभी मारीया एक गिलास में दूध लिए आयी। पैट्रिक उ की तरफ देखता ही रह गया।

"अरे बाबा जल्दी पकड़ो। मेरे हाथ जले जा रहे हैं जल्दी बाबा ज....."

मगर इससे पहले मारीया कुछ बोल सकती पैट्रिक ने उसका मुंह दबोच दिया और दूसरे क्षण ही मारीया फर्श पर खून में लथपथ पड़ी थी। उसकी भूरी आंखें पथरा गयी थी और पेफड़ों से मांस के कुछ टुकड़े बड़ी सावधानी से काट लिए गये थे।

पैट्रिक अपने प्रयोग में जुट गया और दस मिनट बाद चीनी मिट्टी की प्याली में एक ग्राम सफेद चमकीला ठोस पदार्थ पड़ा थ। औ अब पैट्रिक के हाथ टाईप-राइटर पर अंधाधुंध चल रहे थे, उसने एक लाइन टाइप की ही थी कि....
"तुम गिरफ्तार किये जाते हो" यह पुलिस इन्सपेक्टर 'मेसोग' की आवाज थी, जो खिड़की में रिवाल्वर ताने खड़ा था। थोड़ी ही देर बाद पैट्रिक सलाखों के पीछे खड़ा था। पुलिस स्टेशन पर 'रिपर' को देखने के लिए लाखों लोग जमा थे। जनता रोष से पागल हुई 'रिपर को फांसी दो' के नारे लगा रही थी, मगर पैट्रिक के चेहरे पर एक संतोष था।

पैट्रिक पर मुकदमा चलाया गया, जो तकरीबन दो महीने चलता रहा, न्यायाधीश यह नहीं समझ सके कि पैट्रिक को कौन सा दंड दें क्योंकि इस जुर्म के लिए फांसी ही नहीं बल्कि उससे भी कड़ा कोई दंड होना चाहिए था।

२० जनवरी सन १९७९ को "मोसूहेलाके" के मुख्य पृष्ठ पर बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा था "डा० पैट्रिक को न्यायाधीश हेटन पिलाशा ने फाँसी की सजा सुनायी और 'शिकानवे' का पहला वैज्ञानिक जो रसायन शास्त्र में नोवेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया – "डा० पैट्रिक"।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभिसार

गोपाल लाल शर्मा 'अश्क'

मन - अनंग पी सुरा
प्रीत की, है डोल रहा,
कोमल कर कामिनी का
बंधन सब खोल रहा।
नयनों की भाषा में
मूक प्रेम बोल रहा,
सुरभित सुवास संग
मृदुल पवन डोल रहा।
नयनों के प्यालों में
भर-भर कर हाला,
कमल-नाल से युगल कर
कर रहे मतवाला।
तंद्रिल है दुःख सारा
मस्ती का देख काल,
अधराधर सरस मधुर
मुसकायें रेख-बाल।
भ्रू - भंग करके नृत्य
पागल-सा कर देते
यौवन के कमल युगल
घायल-सा कर देते।।
मन उपवन हो व्याकुल
तब प्रिये - प्रिये पुकारता।
कर समर्पण प्रिय सुमन
प्रेम विकल पुकारता।
परिणति फिर हाला की
ज्वाला बन जाती है,
धड़कन प्राणों की
प्रेम-गीत गाती है।

श्यामल तन यामिनी का
विरल से सघन होता है,
प्रेमाकुल युगल कर–
बंधन दृढ़ होता है।
स्पंदन तब प्राणों का
इक सुर में गाता है,
काल - खग जैसे पल–
इक को ठहर जाता है।
मस्ती के मद - भार से
नत होती हैं पलकें,
कर से करती क्रीड़ा
फिर सुरभित अलकें।
मन - सागर में प्रेमोर्मि
लहर-लहर लहराती है,
उठने लगते हैं प्राण
सुधि बिसरी जाती है।
जब वह स्वर्गिक घड़ी
सुखद बन आती है,
प्रेम-नीर से पूरित
नयन - सीप भर जाती है
रोम - रोम तन का तब
तार-तार मन का तब,
गाता है एक गीत
काल ठहर जा अब।
कि सुख की साँसों का
स्वर-संधान हो रहा,
कि प्यार बन किसान
प्रेम बीज बो रहा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शौक और आदत

महेन्द्र कुमार मिश्र

हमको तो जान से प्यारी हैं तुम्हारी आँखें,
हाय ! काजल भरी मदहोश कंवारी आंखें ।

जी हाँ ! क्षमा कीजिएगा, यह मेरी नहीं किसी की चाहत है, किसी की पसन्द है । ये चाहत, पसन्द, ख्वाहिश और तमन्नाएं आगे चलकर शौक और आदत का रूप ले लेती हैं । तो सबसे पहले हमें यह देखना है कि शौक क्या है और आदत क्या है । यहाँ मैं कुछ उदाहरण देना चाहूंगा, हो सकता है अन्तर स्पष्ट हो जाय ।

इस जमाने में किसी को आँखें सेकने का शौक है तो किसी को आँखों में आँखें डालने की आदत, किसी को आँखें मारने की आदत, तो किसी को आँखें लड़ाने का शौक ! आँखें न हुयी तीतर बटेर हो गयी, बंदूक की गोली हो गयीं । खैर, किसी की आदत आँखे चुराने की है तो कोई जन्म से ही आँखें ही आंखें दिखाता है । आँखों के इस तकरार के आधार पर हम कह सकते हैं कि शौक, शान और अय्याशी का प्रतीक है तथा आदत मजबूरी की मार ।

लोगों में बड़ी ही विचित्र आदतें पायी जाती हैं मैं अभी तक समझ नहीं पाया कि लोगों को शौक है या आदत की मजबूरी जो कक्षा में खुल्लम–खुल्ला सो सकते है । वहाँ पकड़े जाने पर अगर खड़े रहने को कहा जाय तो खड़े – खड़े भी नीद मार लेते हैं । सोना तो सोना ही है; अब इसका क्या रोना अन्य शौकों की बात की जाय जैसे गप्पे हाँकने का शौक । और तो और, शादीं – शुदा होते हुए भी अविवाहित बताने व जताने का शौक, जो अक्सर आजकल देखा जाता है ।

किसी भी क्रिया को आदत का रूप देने के लिए बन्धन होना अनिवार्य है । इसे स्पष्ट करने के लिए उदाहरण प्रस्तुत है :—

शुरू – शुरू में किसी सैन्य प्रशिक्षण संस्था के प्राँगण में पदार्पन करते ही एक हट्टे कट्टे स्वस्थ औसतन युवक को यदि मुर्गा बनने को कहा जाय तो उसे आश्चर्य होगा कि एक मनुष्य पक्षी कैसे बन सकता है खैर. जब धीरे – धीरे वह मुर्गा बनना सीख लेता है, तो उसकी आदत पड़ जाती है । और फिर उसे मुर्गा बनने, फ्रन्ट रोल, बैक रोल यानी आगे लुढ़कने और पीछे लुढ़कने मे न ही कोई संकोच होता है, न ही दुःख । ऐसे ही नया कैडेट बाइक स्क्वॉड में सब सुनता है, कि सावधान चल, तो उसे झटका सा लगता है कि सावधान तो खड़े-खड़े होता है, चल कैसे ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब आप शौक की किताबों के पन्ने उलटकर देखिए। निस्संदेह आपको भी दर्जनों शौक होंगे। वैसे तो मैं आप से नहीं पूछता फिर भी माना कि आप को शौक नहीं है, किन्तु जनाब ? आदतें जरूर होंगी और वे भी अनगिनत।

मैं मान नहीं सकता कि आप झूठ नहीं बलते, मैं मान नहीं सकता कि आप किसी की आँखों में से काजल नहीं निकाल सकते। आप कितना भी कहें, मैं मान नहीं सकता कि आप गाली नहीं देते। क्यों कि यह शाही आदत मुझे भी है। अँग्रेजी में गालियाँ देने का शौक। वाह ! पूछिये नहीं-मजा ही आ जाता है। और फिर हो भी क्यों न हिन्दी की गाली कोई गाली है इस में भी कोई वजन होता है क्या ? कहां पश्चिमी भाषा की लच्छेदार गालियों के गुच्छों का अनोखा रस और कहां हिन्दी की बेजान बेढंगी और निर्लज्ज गालियां। आज के विकसित समाज में चुम्बकीय व्यक्तित्व उसी में है, जो अपने सुमधुर वाक्यों को ब्लडी, स्टुपिड, रास्कल आदि आदि रोचक शब्दों से आकर्षक बना लेता है मैं तो कहूंगा कि आप को भी इन श्लोकों से अवगत होना चाहिए वर्ना शादी के बाद जब आप की श्रीमती जी प्रातः काल महाभारत का पाठ आरम्भ करेंगी तो आप उनका मुहं ताकते रह जायेंगे।

अब सवाल यह है कि शौक और आदत दोनों में से महत्वपूर्ण क्या हैं मान लिजिए हमारा किसी आकर्षक अविवाहित नवयौवना से प्रथम साक्षात्कार होता है, तो हम झूठ बोलने की आदत का सहारा लेकर बडी आसानी से बता सकते है कि हम क्रिकेट, हाकी फुटबाल, टेनिस और गोल्फ सभी में स्वर्ण पदक हासिल कर चुके हैं। कोई परवाह नहीं यदि हम कह देते हैं कि हम तैराकी के बेहद शौकीन हैं। जबकि हम चुल्लू भर पानी में बड़ी आसानीं से डूब जाते हैं।

कुछ आदत जन्मजात होती हैं, जैसे कुछ व्यक्तियों को जब तब आये गये पलकें झपकाने की आदत होती है। दुर्भाग्य से जब उनकी यह आदत किसी महिला समाज में आंखे मटकाने का भ्रम उत्पन्न कर देती हैं, तब उन्हें अपने चरित्र के साथ-साथ हाथ-पांव बचाना भी दूभर हो जाता है।

लोग अपनी आदतों को पूरा करने के लिए क्या नहीं करने की कल्पना करते। क्या - क्या दावा नहीं करते। यहां तक कि जान की बाजी भी लगा देने को कह देते हैं. जैसे–

हमने भी तुमको देखा, तुमने भी हमको देखा,।
तुम तो दिल ही वार गुजरो, हम जान वार गुजरे ॥

ऐसे ही कुछ लोग अपनी प्रेमिका के वियोग में नींद न आने पर रात-रात भर तारे गिनने का दावा करते हैं। मैं तो कहता हूँ कि यदि वे ऐसी संस्था में प्रवेश ले लें जहाँ दिन भर की भाग - दौड़ सहित अनेकानेक अभ्यास [illegible] साथ-साथ उन्हें रात में ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं बल्कि दिन में भी तारे गिनने का अवसर प्राप्त होगा ।

मैंने देखा है, कि कोई अपनी पसन्द जाहिर करता है कि वह किसी रूप गर्विता की शस्य-श्यामल घनी केश-राशि में आजीवन खो जाना चाहता है । मेरी तो यह राय है कि इससे पहले कि उनके नागिन जैसे बालों के फन्दे उसके गले में पड़ें अगर उसे घने स्थलों में ही खो जाने का शौक है तो वह मेरे पास चला आए । मैं उसे ऐसे घनें जंगल में मैप रीडिंग के लिए छोड़ूँगा, जहां से उसके अवशेष, उसके किए गए पुण्य कर्म ही ला सकते हैं इसके साथ-साथ यदि किसी को शौक है, किसी कटाक्षी सुन्दरी की झील सी आंखों में डूब जाने का, तो मैं उसे सलाह दूंगा कि उस शौक को पूरा करने के लिए वह किसी स्वीमिंग पुल या फिर इन्डियन ओशन का एक ही बार गोता लगाये; क्या मजाल कि उसका सिर उस स्वच्छ और निर्मल जल से बाहर आ सकें । क्योंकि इसी कार्य हेतु वहां प्रशिक्षित निपुण और कर्तव्य निष्ठ उस्ताद उपस्थित रहते हैं । ऐसा करने से उसका शौक भी पूरा हो जाएगा और उसे चिर शांति भी मिल जाएगी । ऐसे ही, यदि कोई इच्छा प्रकट करता है कि वह किसी अलमस्त अलसाई तन्वंगी तरुणी के जलते, बरसाती रसीले होंठों से जीवन रसपान करता रहे, इससे पहले कि यह जान - लेवा आदत उसके जीवन में प्रवेश करे, मैं उसे शराब पीने की सलाह तो नहीं, बल्कि प्रयत्न अवश्य करूंगा कि उसकी यह चाह आदत बन जाय । उसे मैं किसी मशहूर वैद्य के द्वारा बताए गये प्राकृतिक सोम रस पीने की सलाह दूंगा क्योंकि यह सरलता से उपलब्ध और सस्ता रस है । अतः मैं निवेदन करूंगा कि अभी जो आप हैं, वह तो बदल नहीं सकते लेकिन भविष्य में कोई नयी पसन्द, शौक और आदत के बीजारोपण से पूर्व मेरे कहे तथ्यों का ध्यान अवश्य कर लें । आप को भावी जीवन में कभी भी निराशा नही होगी ।

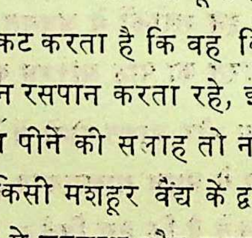

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फूल और काँटे

जगदीशचन्द रांगड़ा

"हमीद । साढ़े आठ बज रहे हैं। उठो, चाय पी लो ।" मां ने चारपाई के पास पहूंचते हुए कहा। हमीद ने उठने का प्रयत्न किया तो हल्की सी आह निकल गई। चाय की प्याली हाथ में थमाती मां ने क्रोध प्रकट किया- "कल रात तू फिर पी कर आया था, हमीद ?"

"मां ! सपना तो नही देखा तूने ?" हमीद ने बिना सिर उठाये कहा। कमरे से बाहर जाती बूढ़ी मां कह रही थी – "गुसलखाने के शीशे पर चिपकी पट्टियाँ कह रही हैं बेटा, और तेरे चेहरे के घाव। हमीद ने चेहरे पर हाथ फेरा। उसे अब होश आया। क्योंकि पट्टियां उसके चेहरे पर अब नही हैं। उसने अवश्य ही नशे में शीशे पर पट्टियां लगा दी थीं।

हायर सैकण्डरी परीक्षा के परिणाम घोषित हो चुके थे। शबनम आज दिन भर में अकेली थी। उसका छोटा भाई जहीर, जिसने दो माह पूर्व ही परीक्षा दी थी, परिणाम देखने विद्यालय गया था। परीक्षा के बाद वह प्राय. दूर के वाजार हमीरपुर जाता रहता था। जहीर कभी कभी देर से लौटता तो शबनम कुछ शंका करती। कुछ लोगों ने उसे उल्टी - सीधी बातें भी सुनाई थी। तो भी शबनम जहीर को कुछ नहीं कह पाई। जहींर होनहार छात्र था और सदैव प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होता था। तब तीन वर्ष पूर्व उसके पिता ने मृत्यु से कुछ दिन पहले शबनम को कहा था- "बेटी शबनम, जहीर को खूब लाड़ प्यार देना और उसे खूब पढ़ाना भी।" उसकी आय का एक मात्र साधन था सेबों का एक छोटा-सा बगीचा। उसकी स्थायी सम्पत्ति स्वर्गीया मां के कुछ स्वर्ण आभूषण थे।

शाम ढले जहीर घर लौट आया। उसके प्रथम आने के समाचार ने शबनम को पुलकित कर कर दिया। " जहीर भैया। तुम सचमुच.....। कालेज में प्रवेश पाने शीघ्र ही हमीरपुर जाओगे।" कहते कहते उसका गला रुंध गया और आंखें छल-छला उठीं। 'जहीर सचमुच पढ़ेगा अब्बा! वह अभी सोच ही रही थी कि जहीर कह उठा – "मुझे पचास रुपये चाहिए दीदी। मैं कुल मित्रों से मिलकर आऊंगा।" जहीर ने शबनम को सहमत करा कर हीं दम लिया। और अगली सुबह वह सीधा हमीरपुर जा धमका।

अन्धेरा छा चुका था। रात के सन्नाटे में शबनम अकेली ही घर बैठी एक उपन्यास के पन्ने पलट रही थी। तभी द्वार पर आहट हुई। शबनम ने दरवाजा खोला तो भौंचक्की रह गई। एक युवक जहीर को थामे खड़ा था। "शबनम! क्या यह आपका भाई है ?" युवक ने जहीर की ओर संकेत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करते हुए कहा। द्वार से हटते हुए मानो शबनम ने उन्हें अन्दर आने का संकेत किया । वह जहीर की यह अवस्था देख कर आंसू बहा रही थी। युवक ने जहीर को बिस्तर पर लिटा दिया । शबनम की भीगी आंखों ने युवक को पहचान लिया था। "दिनेश, मेरे भैया को क्या हो गया है ? 'वह फफक पड़ी।" घबराओ नहीं शबनम, उसने पी रखी है। "मुझे तो इसे हमीरपुर में हमीद के साथ देख कर ही शक हुआ था। शाम जब मैं घर लौट रहा था तो इसे सड़क पर झूमते देखा। आपका और आपके गांव का नाम सुनकर इसे यहां ले आया। इसे अब सोया रहने दो" कह कर दिनेश चलने लगा तो शबनम ने घबरा कर उसे वहीं रुक जाने का आग्रह किया। तभी जहीर ने उल्टी की और बड़बड़ाया – "दीदी मुझे.......मु......."उसे फिर नींद आ चुकी थी।

दिनेश और शबनम चार वर्ष पूर्व हमीरपुर कालेज में हुए एक सांस्कृतिक समारोह में मिले थे। दिनेश तब कालेज में अंतिम वर्ष का छात्र था। शबनम हायर सैकण्डरी में पढ़ती थी और अपने विद्यालय का प्रतिनिधित्व कर रही थी। उसके मधुर स्वर ने सबको मंत्रमुग्ध कर दिया था। दिनेश ने भी समारोह में सक्रिय भाग लिया था और दोनों ने शुभकामनाओं का आदान प्रदान किया था। दिनेश तो बी० एड्० पास कर हमीरपुर में ही एक विद्यालय में नियुक्त हो गया। शबनम को हायर सैकण्डरी करते ही अध्ययन छोड़ना पड़ा था पिता की मृत्यु के कारण। लेकिन मृत्यु से पहले ही शबनम के पिता ने हकीम वली खां के लड़के हमीद से शबनम की शादी का वचन दे दिया था जिसकी सूचना उन्होंने शबनम को मृत्यु से दो ही दिन पहले दी थी। हमीद अमीर बाप का अकेला बेटा तो अवश्य था लेकिन शबनम तो सुनते ही पथरा गयी थी। "हमीद ? वही हमीद, शराबी ? चाकू और छुरी चलाने वाला ? ...." और न जाने क्या क्या। पर पिता की गिरती हालत को समझते हुए वह उन्हें 'नहीं' का सदमा नहीं दे सकी थी। और दुर्भाग्यवश वह कभी भी यह न कह पायी।

आज रात दिनेश ने और शबनम ने जहीर के पास बैठकर ही बिताई। उन्होंने एक दूसरे के बारे में सब कुछ कह डाला। शबनम ने बताया कि उसने जहीर और हमीद के बीच हाल ही में पनपी मित्रता की बातें अनसुनी कर दी थी। आज उसे स्वर्गीय पिता की अभिलाषा पर पानी फिरता नजर आया। उसे डर हो गया था कि जहीर अब कभी भी हमीरपुर में हमीद से दूर नहीं रह सकेगा। दिनेश ने उसे ढांढस बंधाया और उसे जहीर को कालेज भेजने पर सहमत करा लिया। दो दिन बाद जहीर बिल्कुल ठीक हो गया तो दिनेश ने स्वयं उसे साथ ले जाकर प्रवेश दिला दिया और होस्टल में ठहरा दिया। दिनेश स्वयं भी इस होस्टल के पास ही रहता था। उसने जहीर को हर शाम वहां आकर पढ़ने का सुझाव दिया जिसे जहीर ने स्वीकार कर लिया।

काफी प्रतीक्षा करने के बाद दिनेश ने चाय पी ली। "जहीर आज कहां है ?" यह प्रश्न उसे तंग कर रहा था। कपड़े बदल कर वह होस्टल जा पहुंचा और उसके बारे में पूछा। छात्रों ने बताया कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह प्रातः से ही उपस्थित नहीं था। वह पहले घर गया था और दोपहर बाद हमीद के साथ घूमते देखा गया था। दिनेश लम्बे तेज कदमों से हमीद के घर जा रहा था तो उसने जहीर और हमीद दोनों को एक सर्राफ की दुकान पर देखा। दुकान में घुसते ही उसने देखा कि वे दोनों आभूषण बेच रहे हैं। "जहीर। ये कंगन किसके हैं?" दिनेश ने पूछा। हमीद ने टपक कर कहा "अबे मास्टर! चल अपना रास्ता नाप।" खतरे की आशंका का आभास दिलाते हुए दिनेश चिल्लाया "तुम इन्हें नहीं बेचोगे जहीर।" तभी हमीद ने एक लम्बे छुरे से दिनेश पर प्रहार किया। फुर्ती से दिनेश ने लपक कर उसका हाथ रोका तो सही, पर एक गहरा घाव हो गया। सर्राफ और अन्य कई लोगों ने उन्हें काबू कर लिया। वरना.....। कंगन तो बिकने से बच गये लेकिन दिनेश एक सप्ताह बाद ही जहीर को साथ ले कर घर जा सका। शबनम आभूषणों की चोरी के बाद भूख प्यास त्याग चुकी थी। दुःख सिर्फ उन्हें खोने का न था। जहीर के अचानक घर आकर फिर चुपके से चले जाने से उसे ऐसा लगा था मानो वह स्वयं घर जला रहा हो। आज दिनेश आभूषण और जहीर दोनों के साथ उपस्थित था। शबनम उसकी प्रशंसा में आँसू ही बहा पाई। उसे कई दृश्य याद आने लगे। जहीर का हितैषी, दिनेश! कंगन बचाने वाला, दिनेश!! सुन्दर, सुडौल दिनेश!!! दिनेश! दिनेश!!

स्वयं दिनेश शबनम के भोलेपन का भक्त था।

कालेज में सम्पन्न वाक स्पर्द्धा में जहीर को प्रथम पुरस्कार मिला तो वह सामान्य से पहले ही दिनेश के पास जा पहुंचा। दिनेश के प्रोत्साहन और मार्गदर्शन ने ही उसे इस योग्य बना दिया था। समाचार पाकर दिनेश खुशी से फूला न समाया। "शबनम यह सुनकर अतीत को भूल जाएगी जहीर। मैं आज शाम हो उसे यह समाचार सुना आता हूँ।" उसके विश्वस्त नेत्र चमक उठे।

जहीर जब वापिस चला तो उसके कदम हमीद के घर की ओर बढ़ रहे थे। जब वह हमीद के घर पहुंचा, हमीद ने उसका स्वागत किए बिना ही आने का कारण पूछा। जहीर ने पुरस्कार की बात कही ही थी कि हमीद उसे अपने कमरे में ले गया। उसने मय से गिलास भर कर जहीर को बढ़ा दिया। दोनों जब नशे में डगमगाने लगे तो हमीद ने कहा – "जहीर मैं अभी यह समाचार शबनम को दे आता हूं" जहीर से दिनेश के जाने की बात सुनकर हमीद कह उठा, "शबनम से मिलने भला यह दिनेश......" जहीर गुस्से में उठ खड़ा हुआ। हमीद ने उसे बिठाते हुए कहा, "मेरी बातों पर विश्वास नहीं तो आओ, आज चलकर सब देख लें।" नशे में डूबा जहीर उसके जाल में फंस गया। उसके हाथ में तेज धार वाला एक छुरा थमाते हुए हमीद कह रहा था, "एक तेरे हाथ में और एक मेरे में। आवश्यकता पड़ी तो...दिनेश.....," उसने हाथ में लिए छुरे से गले पर वार का संकेत किया। दोनों गांव की ओर चल दिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब दोनों गांव पहुंचे, लोग सो चुके थे। जहीर के घर में प्रकाश देखा जा सकता था। जहीर ने हमीद को थामते हुए कहा, "तुम धीरे धीरे जाकर सुनो। दिनेश कहीं भीतर तो नहीं।" हमीद तूफान संजोता हुआ घर की ओर बढ़ गया।

हमीद ने द्वार पर आहट की तो शबनम को लगा कि जहीर घर आया है। उसने किवाड़ खोला तो हमीद को सम्मुख पाकर उसके पांव तले धरती फिसल गई। आगे बढ़कर हमीद ने उसे बाहों में भर लिया। "इन्तजार की भी हद होती है......" हमीद के मुंह पर एक तमाचा पड़ा। शबनम की चीख जहीर से कानों से टकराई तो वह नशा भूल गया। उसने भागकर घर में प्रवेश किया तो हमीद को भूखे भेड़िये की तरह शबनम पर टूटते देखा। उसके वस्त्र फट गये थे और वह शर्म से सकुचा रही थी। "निर्लज्ज हमीद ; तू इतना कमीना निकला ? कहकर वह हमीद पर झपट पड़ा। चतुर खिलाड़ी की तरह हमीद ने शबनम को छोड़कर जहीर पर प्रहार की चेष्टा की। लेकिन जहीर का पहला वार ही उसे ढेर कर गया। तेज छुरा हमीद के सीने में उतर चुका था। वह फर्श पर गिर गया। फर्श पर लहू बह निकला। शबनम ने स्वयं को एक चद्दर से ढंक लिया था। जहीर की आंखें छल छला गईं। वह शबनम के चरणों में गिरकर गिड़गिड़ाने लगा–

"मुझे माफ कर दो दीदी। मैं नशे में था और जहीर की चाल में फंसकर दिनेश को.....।" शबनम के गालों पर आँसू लुढ़क पड़े। बाहर आंगन में सारा गांव उमड़ आया था।

शबनम की आँखे उस भीड़ में किसी को ढूंढ़ने का प्रयास कर रही थीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पनघट पर

कुन्दनसिंह नेगी

धरती का रंगीला आंचल-
श्वेत, प्रिय हिमगिरि का दर्पण–
उठती धरती, झुकता अम्बर-
लता-विटप के चुम्बन का स्वर-
नई वधू के मुख का घूंघट-
शब्द - अर्थ का मधुमय नर्तन ।

सरिता का अविराम वेग-
खिसका आंचल कुछ बदहवास-
गतिमय बना उरों का भार-
वह सजीव सौन्दर्य की प्रतिमा-
नग्न पैर ओस के ऊपर-
इठलाती वह सौन्दर्य की प्रतिमा-
उपेक्षित पायल की रुनझुन-
इठलाती मस्ती में वह-
मिल गई कुछ दूर संग उनके-
सखियाँ उसके चारों ओर-
गुनगुनाती मस्त भ्रमर सी–
या बसन्त की कोयल सी ।

धँस गया क्षितिज के पार-
वह विराट् अव्यक्त बिन्दु–
सतरंगी, रंगीला अम्बर–
कर रहा प्रतीक्षा उजले तम की-
वही गांव, वही पनघट, वही सुन्दरी-
अंगूरी होंठ सिन्दूरी रंगत-
चेहरे पर कुछ श्रम के अंकुर,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुलाबी कपोलों से-
मचल रहे थे स्वेद बिन्दु
काँपती देह, नग्न चरण
सुनहरे प्रभात की बेला में-

विराट पवन का क्रूर हास-
रक्तिम हुआ मुख का रंग-
उस अनुपमेय युवती का–
जिसके उपमान ढूँढ़ते कविजन।

क्रूर सांस की विकल्प कल्पना-
जो भूल गई थी अपना यौवन-
उलझ रहीं थी केश - राशि,
दो उपेक्षित वही सुन्दर कर-
गंगा - यमुना की सी सुन्दर रेखाएँ-
स्वर्णिम धरा सा लहराता आँचल,
इन्तजार उस विराट शून्य में–
झुकी - झुकी पलकों से।

स्तब्ध पवन का एक प्रश्न-??
उत्तर निःसंदेह–
उस सुन्दर भूमिका का-उसके गीतों का
और स्वप्नीले जीवन का-
अद्वितीय स्वरूप–
उस अनुपमेय कविता का !!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रबुद्ध नारायण

रमेशचन्द्र जोशी

इस माटी, इसका जल, वायु, अन्न मैं सबका ऋणी हूं। माता - पिता ने जन्म दिया, उनका ऋणी हूँ। पर जब ऋण की बात सोचता हूँ, तो एक बड़े ऋण के व्याज से ही दब जाता हूँ। मैं उनका कृतज्ञ हूँ। मैं जो भी आज हूँ उनकी ही देन हूँ। ये न होते तो मैं एक ताड़ के वृक्ष की तरह होता आज मेरी छांव में बैठ कर लोग सान्त्वना पाते हैं। बचपन से लेकर आज तक मेरे चारों तरफ इन चरित्र निर्माताओं का व्यूह बना रहा।

इनकी शिक्षा, इंक रिमूवर। मातृ-पितृ पक्ष से जो भी लकीरें मास्तिष्क पर बनी थीं, वे सब मिटा दी गयीं। आज पच्चीस साल पहले की तरफ देखता हूँ,तो कितना भिन्न पाता हूँ। विश्वास भी नहीं हो उस रेखाचित्र का रूप इतना भिन्न होगा। हर सीढ़ी पर किस किस ने कैसे -कैसे सहारा दिया सब याद है। मेरे लिए उन्होंने क्या क्या ड्रामे नहीं किए परन्तु यह सोचकर कि मैं उनके प्रयत्नों के प्रति उदासीन रहा बड़ी कड़वाहट महसूस होती है। क्यों न उसका कुछ गुणगान कर अपना बोझ हल्का कर लूं।

मैं सुदामा हूं, ये कृष्ण हैं। प्रगतिशील विचार धारा के ये प्रवर्तक हैं। इनकी बातें समाज में ढोंग-कर सुनी जाती हैं। ये हरफन मौला हैं। गंगा गये गंगाराम, यमुना गये यमुनादास। हर महफिल में रंग जमा लेते हैं। घिसे - पिटे आदर्शों को उखाड़ फेंकने की इनकी भीष्म प्रतिज्ञा है। सामाजिक व्यव-हार में अनेक सरल सूत्र बनाकर इन्होंने मुझे दिये हैं।

ये हैं मेरे एक मित्र, दूध में नहाये हैं। पानी में रहते हुए मगर से बैर करना कभी इन्होंने सीखा ही नहीं। अवसर मिलने पर इस तरह चिपक जाते हैं कि जैसे खून से जोंक। उन दिनों चुनाव की की तैयारियां हो रही थी, कालेज में। एक उम्मीदवार प्रशंसा भरे वाक्यों के साथ मेरी तरफ बढ़े परन्तु गये तो मुंह बना कर। तभी मेरे ये मित्र आन पड़े। बोले 'अमां यार! तुम भी नासमझ रहे "पढ़ लिया पर गुना नहीं कुछ भी"। आखिर क्या हो गया ?" मैंने पूछा। "बस तुम्हारी फिस तो माफ होने से रही, कहने भर को हां कह तो देते" ? "मगर मैंने किसी से झूठा वादा करना नहीं सीखा" इसमें झूठ है ही क्या ? हम कौन से वोट उसी को देंगे ! परन्तु चेक तो जेब में आ गया न !" काफी बहस चली परन्तु बेकार। मैं विवश हो ही गया। सोचा तो पाया कि मार्ग सरल, सुरक्षित व लाभ-दायक है।

CC-0: In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'परहित सरस धर्म नहिं भाई" इनके सामाजिक व्यवहार का मूल मंत्र है। इस सूत्र का पालन करते-२ ये भूल जाते हैं कि अमुक वस्तु, अमुक व्यक्ति की है। ये उसे दूसरों के हवाले कर पूर्ण सन्तुष्टि का अनुभव करते हैं। हर पल दूसरों की चीज को ये अपनी ही चीज समझते हैं, दोस्तों की पाकेट इनकी अपनी हो गयी है। यही इनके शरीर का राज है। छोटी-२ बात पर मल्लयुद्ध की तैयारी करते इन्हें कोई देर नहीं लगती। स्थान-समय की इन्हें कोई परवाह नहीं। खचाखच भरी बस में मैंने अपना स्थान एक खड़ी महिला को दे दिया। इत्तफाक से ये महाशय भी उसी में आन पड़े। बस से उतरते ही क्या बरसात हुई। "तुम यार वास्तव में संस्कृति के पोषक हो, बड़ी दया आ गयी थी या कोई आइडिया मारा था?" तब से जब भी इस तरह की स्थिति आती है। तो पहले नजर घुमा लेता हूँ कि कहीं...।

इनका अपना तर्क शास्त्र है, अपना दर्शन, अपने आदर्श और अपनी धारणायें। महानता और प्रसिद्धि के अपने मार्ग हैं। एक दिन मन में आया कि साहित्य की बड़ी-२ पुस्तकें पढ़ डालीं पर क्यों न महाभारत जैसे महाकाव्य का अध्ययन किया जाये। मैं पुस्तक लिये बैठा अध्ययन कर रहा था। अचानक उनका आगमन हुआ। उन्होंने परिस्थिति का जायजा लिया और अपनी टिप्पणियां आरम्भ कर दीं। तपाक से बोल पड़े "क्यों भई बुढ़ापे की तैयारियां बड़ी जल्दी शुरू कर दीं, जवानी क्या अच्छी नहीं लगती? इस वक्त में अगर रामायण, महाभारत पढ़ने लगे तो बुढ़ापे में पोर्नोग्राफी पढ़ने का इरादा है" उनकी तुलनात्मक शक्ति को देख कर दांद देनी पड़ी।

गांधी-जयन्ती के अवसर पर " 'गाँधी दर्शन' पर मुझे एक भाषण देने को कहा गया था। होस्टल पहुंचने तक मेरा नाम ही गांधी पड़ चुका था। सत्यवादी, अहिंसावादी का मुझ पर एक लेबल-सा लग गया। कालेज में कभी किसी लेक्चरर की कोई क्लास मिस करनी होती, तो मुझे 'सत्यवादी हरिश्चन्द्र' का खिताब दे कर बहिष्कृत कर दिया जाता। उनका कृपा पात्र बनने के लिये मैंने अपने इस जघन्य पाप की सजा काफी दिनों तक सही!

कालेज छूट गया। अनेक लोग जीवन में आये और चले गये। परन्तु मुझे कभी इनकी अनमोल सलाहों से वंचित न होना पड़ा। आफिस समय से जाना एक गलत आदत पड़ गयी थी। काम समय पर समाप्त करना ही अपना शौक था मेरे इन मित्रों ने मेरे चरित्र के नये आयाम खोज निकाले आज मैं किसी के दिये समय पर उसका इन्तजार नहीं करता। पहुंचता हूँ तो ५ या १० मिनट देर से। और जब किसी को अपना इन्तजार करते पाता हूं तो बड़प्पन का अनुभव करता हूं। संस्था के नियमों के अनुसार चलना मेरे कायरपन का प्रतीक था। मैं साथियों का असहयोगी और अहितैषी हो गया था। अपने सुपीरियर्स का चमचा बन गया था। मेरे इन्हीं शुभ चिन्तकों के अथक परिश्रम का फल है कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं आज सारे गहन अन्धकार के सागर से बाहर हूँ।

ये महान लेखक भी हैं, साहित्य - साधना के द्वारा समाज का पथ - प्रदर्शन कर रहे हैं । महान राष्ट्रीय चरित्रों के नये २ मापदण्ड स्थापित करना इनकी कार्य वस्तु है । इन्ही का प्रताप है कि आज गांधी - वाद एक कायर - वर्ग का वाद कहा जाने लगा है । महाभारत व गीता जैसे महाकाव्यों में सीखने की कोई चीज नही । ये तो बुढ़ापे के आगमन के संकेतक हैं । अपने तार्किक ज्ञान से इन्होंने कृष्ण को एक आदर्श शासक मित्र के पद से हटा कर आज के रसिक प्रेमी वर्ग का ता बना दिया है ।

इस अनावृष्टि के काल में इनकी सतत् कृपा दृष्टि की वृष्टि से सभी के चरित्र के पात हरे हो रहे हैं । ये मार्ग पर मील के पत्थर हैं, साइनबोर्ड हैं । आपकी सेवा के लिये हर वक्त पत्थर हैं । बिन साबुन पानी ही आपके चरित्र को धोकर गंगा जल बना देंगे । जितना भी कहूँ कम ही लगता है । अपनी असमर्थता के लिये मैं क्षमा चाहता हूँ और अन्त में पुनः कृतज्ञता प्रकट करता हूं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भग्नावशेष

श्री अनिल भट्ट
[प्राध्यापक : भाषा विभाग]

इसलिए तो नहीं दिया था तुमको
यह पुष्प !
एक लंबे वीराने की सूखी धूप और ऊबी ठंड के बावजूद
इसकी पँखुड़ियाँ स्निग्ध थीं;
इसके लावण्य और सौरभ में था
जीवन !
मकरन्द में मादकता
और स्पृहा में संगीत - जिसकी
मधुरिया का संस्पर्श
चेतना को स्मरण दिलाता था उसकी
सुभगता का।

कुछ ख्याल

श्री जगदीश कुमार बांगिया
[प्राध्यापक भाषा विभाग]

१ मुझे यकीं है, वो छुपे हैं यहीं कहीं,
मेरे आस पास,
मैं बखूबी वाकिफ हूं,
उनके बदन की महक से।

२ मैं जहां – जहां से गुजर गया,
जहां वहां – वहां से गुजर गया;
मैं जहां – जहां से गुजर गया
जहां वहां – वहां से उजड़ गया।

३ सब में शामिल हूं मगर,
सब से जुदा बैठा हूं;
सिर्फ खुद से ही नहीं
खुदा से भी खफा बैठा हूं।

४ जाम पर जाम पिये जा रहा हूं मैं,
यों ही सुबह से शाम किये जा रहा हूं मैं,
अब किसी से क्या कहूं क्या गुनाह किये जा रहा हूं मैं,
अपनी अच्छी खासी हस्ती यों तमाम किये जा रहा हैं मैं ।।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

About Swami Rama

1 Swami Rama's teachirg have got to be propagated. He was one of the greatest souls not only of India but of the whole world. I adore his ideals.

-Mahatma Gandhi

2 The name of swami Ram Tirtha is such as thirills my heart with ecstacy. I have never come across a greater self realized Mahatma so far.

His message on self – purification and self – realization would be a great boon for the cominig generation of the country.

-Madan Mohan Malviya

3 Swami Ram Thirtha's life and work continue to inspire us for a long time to come.

-Dr. S. Radha Krishn

4 I greatly loved and respected Tiratha Ram Goswami, later the Swami Ram Tirtha,

-St. Nihal

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आश्रम - समाचार

पूज्य पाद स्वामी श्री महाराज ने आश्रम से ८–५–८१ को दिल्ली हैतु प्रस्थान किया।९–५–८१ को बहादुर गढ़ में श्री अमृत लाल जी के पिता के स्वर्गवास हो जाने पर पगड़ीं-रस्म के अवसर पर उपास्थित होकर पूज्य स्वामी जी ने शोक-संतप्त परिवार को सान्तृवना दी तथा सांय ६ बजे अजनेल चावला इन्कलेब नई दिल्ली में कर्नल सतीश कुमार के असामयिक निधन पर शोक व्यक्त किया। इसी अवसर पर कर्नल साहब की माता एवं पिता श्री रामकृष्ण चावला व श्वसुर आर० आर० बौन्द्रा जी से मिले तथा स्वर्गीय कर्नल साहिब के निमित्त प्रार्थना में भाग लिया। अपार जनसमूह कर्नल चावला की याद में शोक संतप्त था। प्रभु सभी को आत्मबल दें।

१०–५–८१ को श्री सरदारी लाल ओबराय जी की सुपुत्री के पाणिग्रहण उत्सव में भाग लेकर आचार्य अमरमुनि जी महाराज ने वर-वधू को शुभाशीष दिया।

१२–५–८१ को माननीय स्वामी जी महाराज ने कोटला प्रस्थान किया। यहाँ पर आयोजित स्वामी रामतीर्थ मिशन-सम्मेलन में भाग लिया। पवित्र सम्मेलन में दिल्ली से माता मेला देवी, बहन निर्मल भण्डारी, कौशल्या जी, श्री भारत बन्धु शर्मा, श्रीखन्ना जी, सपत्नीक श्री गाँधी जी, अमृतसर से बहिन योगेन्द्र अरोडा, बहन कृष्णा व अन्य बहनों ने भाग लिया। कोटला वासियों के अपूर्व उत्साह ने सम्मेलन की छवि में चार चांद लगाये। १७ ता० कोउदासीन आश्रम के उत्सव में भाग लिया। इसके साथ ही पूज्य स्वामी जी आश्रम पर पधारे और २२ — २३ को माँ आनन्दमयी के उत्सव में भाग लिया और २४ ता० को प्रातः दिल्लीं पहुँचे एवं सांय काल देहरादून हेतु प्रस्थान किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरिओ३म् सत्संग भवन में २१ ता– को लघु अध्यात्म सम्मेलन प्रारम्भ हुआ जिसमें श्री स्वामी स्वभावानन्द जी, स्वामी दिव्यानन्द जी, स्वामी अवधेश मुनि जी, स्वामी अर्चकानन्द जी एवं आचार्य प्रवर श्री सद्‌भवाचार्य जी ने भाग लिया। आश्रम उन समस्त राम प्रेमियों एवं महापुरुषों का आभारी है जिन्होंने पवित्र सम्मेलन में भाग लेकर उत्साहपूर्वक उसे सफल बनाया।

राम प्रेमी डॉ० टेकचन्द नन्दवानी जी ने गत वर्ष लगभग २४२५ लोगों की चिकित्सा मिशन पर धर्मार्थ चिकित्सालय में की जिनमें ग्रामीण अंचल की गरीब जनता को औषधि सुविधायें सुलभ हो पायीं।

" विश्व सत्य की खोज में उतना उत्सुक नहीं

जितना कि आनन्द की खोज में रत है।"

–स्वामी अमर मुनि महाराज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूरभाष—८४२२५ राजपुर, ४२९७ देहरादून, तार का पता — (वेदान्त) देहरादून, रजि. नं डी. एन. १५

सूचना

१—मासिक पत्रिका 'राम सन्देश' न मिलने पर अपने समीपस्थ डाकखाने (पत्रालय) से पता करने के पश्चात हमें सूचित करें। क्योंकि कभी-किसी कारणवश "राम सन्देश" १५ ता० तक निकलता है। इसलिए शिकायत पत्र अपनी २ ग्राहक संख्या सहित दिनांक २० के बाद प्रेषित करने का कष्ट करें।

२-आप आश्रम में किसी भी प्रकार का धन भेजते समय यह लिखना न भूलें कि वह धन किस निमित्त भेजा जा रहा है तथा चैक स्वामी रामतीर्थ मिशन के नाम पर ही भेजें।

३-जो पाठक इस पत्रिका के आजीवन सदस्य बनना चाहते हैं वे अपना सदस्यता शुल्क सम्पादक के नाम प्रेषित करें। सदस्यों को आजीवन पुन: बिना किसी शुल्क के यह पत्रिका प्रेषित की जायेगी।

४-'राम सन्देश' के विदेशी ग्राहक अपना वार्षिक शुल्क १५ रु० भेजें। क्योंकि परमाध्यक्ष जी की आज्ञानुसार १२ रु० के स्थान पर ३ रु० वृद्धि का निर्णय लिया गया है।

५-पाठक अपनी अंक सम्बन्धी, प्रतिक्रियाएं, अवश्य भेजें, जिससे पत्रिका की उन्नति सम्भव हो सके।

६-अपनी रचनाएं - लेख, कविताएं भेजते समय स्पष्ट शब्दों में पृष्ठ की एक तरफ ही लिखें।

७-हर प्रकार की सामाजिक, शिक्षा सम्बन्धी, आध्यात्मिक या पारस्परिक तुलनात्मक आपकी लिखित वैचारिक भावनाएं सादर आमन्त्रित हैं।

—सम्पादक

बुक पोस्ट

ग्राहक संख्या 534

श्री / श्रीमती गुरुकुल पुस्तकालय

स्थान गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय

डाकखाना

जिला हरिद्वार

मासिक पत्र—
"राम-सन्देश"
स्वामी रामतीर्थ मिशन
राजपुर, देहरादून (उ०प्र०)
Pin—248009 भारत

स्वामी रामतीर्थ मिशन, राजपुर देहरादून (उ० प्र०) के लिए प्रकाशक स्वामी अमर मुनि द्वारा न्यू आईडियल प्रिन्टिग हाऊस (कांग्रेस भवन के पास) ४-बी नेशविला रोड, (देहरादून) में, मुद्रित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

AUSTRALIA

राम-सन्देश

INDIA

पुस्तकालय
गुरुकुल काँगड़ी

जौलाई
१६८१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकेतिका

विषय	लेखक	पृष्ठ
ध्यान	स्वामी राम	१
मैं प्रकाश स्वरूप हूँ	स्वामीराम	२
सम्पादकीय		३
काल–चक्र	श्रीचन्द 'विजयन्त'	४
"भूखे पेट का भगवान रोटी"		६
यस्य देवे परा भक्तिर्यथा देवे तथा गुरौ		१०
शोक–समाचार		१२
निःशुल्कहोम्योपैथिक औषधालय		१३
शोक–समाचार		१४
गुरुपूर्णिमा–महोत्सव		१५
स्वामीराम के विचार वेदान्त-दृष्टि में सफलता	भारतबन्धु शर्मा जी	१६
जीवन–साहित्य	सन्त लारेंस	१८
ओ पथिक	काका हरिॐ निर्द्वन्द्व	१६
' Kingdom Of Heaven'	Goyendka	20
Oranament of a Paramhansa	Swami Shiva Nanda	22
Pearls From Swami Ram's Mouth		23
आश्रम–समाचार, स्वामी हरिओम जी के अमूल्य वचनामृत		२४

संस्थापक—
ब्रह्मलीन स्वामी हरिओउम् जी महाराज

संवर्धक—
ब्रह्मलीन स्वामी गोविन्द प्रकाश जी महाराज

व्यवस्थापक—
स्वामी अमर मुनि जी महाराज

सम्पादक—
काका हरिओउम् "निर्द्वन्द्व"

आजीवन सदस्यता शुल्क—

भारत में	—	१००रु०
विदेश में	—	५००रु०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'राष्ट्र के हित के लिए यत्न करना ही विश्व की शक्तियों अर्थात् देवताओं की आराधना है'-स्वामी राम
बेदान्त, अध्यात्म, संस्कृति, धर्म एवं भक्ति का सजग सन्देशवाहक
तथा स्वामी राम के आदर्शों का एकमात्र लोकप्रिय मासिक—

राम सन्देश

वेदोपनिषदां तत्त्वम् सत्यं नित्यं सनातनम् ॥
तत्सर्वं "रामसन्देशे" पत्रेऽस्मिन्नवलोक्यताम् ॥

वर्ष ३० अंक ७	राजपुर, देहरादून, जौलाई १९८१	वार्षिक भेंट १०) एक प्रति ८५ पैसे

ध्यान

क्षण
भर के वास्ते
सारी इच्छाओं को परे
फेंक दो। ॐ जपो – न कोई
राग, न कोईद्वेष, पूर्ण शांति ! बस,
आपका सारा अस्तित्व प्रकाशस्वरूप हो जायगा
कर्म के सांसारिक प्रयोजनों को तिलांजलि दे दो
कामनाओं के भूत-प्रेतों को उतार दो या झाड़ दो ।
अपने सारे काम को पवित्र बनाओ । मोह
और आसक्ति के रोग से अपने को छुडा
लो, केवल एक पदार्थ की आसक्ति
ही तुम्हें सर्वमय परमात्मा से
अलग कर सकती
है।

—स्वामी राम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गतांक से आगे

मैं प्रकाश-स्वरूप हूँ

स्वप्नशील द्रष्टा जाग्रत-द्रष्टा से भिन्न है तात्पर्य यह कि कि चेतना स्वप्न की अवस्था में दूसरी, और गाढ़ निद्रावस्था में तीसरा रूप धारण करती है। तब आपकी चेतना (गाढ़ निद्रा में) शून्यता से अपनी अभेदता स्थापित करती है। आप कहते हैं "मुझे इतनी गहरी नींद आयी कि मैंने कोई स्वप्न ही नहीं देखा।" गाढ़ निद्रा की दशा में आपमें कोई चीज है जो बराबर जागती रहती है जो सोती नहीं वहीं आपका वास्तविक आत्मा (स्वरूप) है। वह विषयाश्रित चेतना से पृथक्, है वह शुद्ध चेतना है। वह आपका स्वरूप (अपना आप है)।

एक मनुष्य आता और कहता है, "कल रात को बारह बजे मैं ब्राडवे स्ट्रीट पर था, वहां मैंने किसी को नहीं देखा। उस समय वहां एक भी व्यक्ति नहीं था। हम उससे कहते हैं कि वह अपना बयान लिख दे कि उक्त सड़क पर अमुक समय पर एक भी व्यक्ति मौजूद नहीं था वह मनुष्य कहता है कि यह बयान सत्य है क्योंकि मैं प्रत्यक्षदर्शी गवाह हूं। तब प्रश्न किया जाता है, "तुम कोई प्राणी हो या नहीं? यदि यह बयान तुम्हारे प्रमाण पर हम मानें तो यह आत्मविरोधी है। यह बयान सत्य कैसे हो सकता है जब आप वहां मौजूद थे!"

जब कोई गाढ़तम निद्रा में सोता है, तब जागने पर कहा करता है कि मैंने कोई स्वप्न नहीं देखा। हम कहते हैं — भाई! तुम यह बयान तो करते हो कि वहां कुछ नहीं था किन्तु इस बयान के सही होने के लिए तुम्हें आकर गवाही देनी पड़ेगी। यदि आप वस्तुतः गैरहाजिर थे तो आप यह गवाही कैसे देते हो? आपमें कोई चीज ऐसी है जो उस गाढ़ निद्रा में भी जागती रहती है वह आपका वास्तविक स्वरूप (आत्मा) चेतना स्वरूप और ज्ञानस्वरूप है।

देखिये, इस आत्मा से सारे संसार का प्रसार कैसे होता है। नदियों को देखिये। उनकी तीन दशायें होती हैं एक हिमानी दूसरी छोटे चश्मों और नालों वाली। बरफ पिघलने पर नदी बहुत सूक्ष्म चंचल और शिशु-अवस्था में होती है। तीसरी दशा वह है जब नदी पहाडों को छोड़कर मैदान में उतर आती है और बडी उत्पातिनी हो जाती है कीचड से भर जाती है। यही उसकी तीन दशायें हैं।

क्रमशः

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादकीय :

"प्रेमी के लोचनों से एक आंसू का टपकना, जिस कानून के आधीन है, वही कानून सूर्य और तारों के भ्रमण का भी शासन करता है।"

--स्वामी राम

विश्व को आज जिस वस्तु की सर्वाधिक आवश्यकता है--वह है शान्ति ! कारण, भौतिकता-परिवेश से अत्यधिक प्रेम व क्षणिक आनन्द हेतु सत्य को तिलांजलि दे देना है। विद्वानों का मत भी है--"सत्य से विरत; विश्व-जनों को गुमराह तो करते ही हैं साथ ही परमपिता परमेश्वर से कोसों दूर होकर विश्व भर को घोर नरकाग्नि में ढकेलते हैं।"

मानव यद्यपि यह भली प्रकार स्वीकार कर चुका है कि आज के इस चका चौंध के युग से निकलकर-मात्र अध्यात्म क्षेत्र ही ऐसा क्षेत्र है जहां पर किंचित नहीं अपितु प्रचुर मात्रा में अनन्त प्रकाश है। ऐसा प्रकाश जिसमें चौंधियायापन नहीं बल्कि शीतलता है। यह वही शीतलता है जो व्यक्ति को शहन्शाह बना देती है तभी तो भौतिकता से व्यथित पाश्चात्य देश वासी स्वामी रामतीर्थ के दीवाने हो चले थे।

एक बहुत धनी अमेरिकन अभिनेत्री ने अपना सर्वस्व स्वामी रामतीर्थ को देने की पेशकश की। यदि स्वामी जी उसकी डायरी में अपने पैन से लिख दें :—'तुम मेरी पत्नी हो' स्वामी राम ने मुस्कुरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर उसमें लिखा---' तुम मेरी पवित्र मां हो।'

वेदान्त वास्तव में चारों वेदो में निहित एक ऐसी पांचवी वस्तु है जो परमेश्वर का सटीक दिग्दर्शन कराकर मानव को मोक्ष दिलाने में सहायक है। यह वही पॉचवी वस्तु है---जो बन्धुत्व के दायरे को विकसित कर रामराज्य की कल्पना को साकार कर सकती है। प्रेम व बन्धुता का अनुशरणी ही सच्चा वेदान्ती है व सच्चा वेदान्ती हो वसुन्धरा पर शान्ति स्थापित करके विश्व कल्याण कर सकता है।

काल-चक्र

श्रीचन्द 'विजयन्त'

"यदि राम चाहता तो कभी का भारत भर को झकझोर देता।" उक्त शब्द वृन्द शहन्शाह राम के मुखारविन्द से उस समय प्रस्फुटित हुये थे जब उन्होंने दृढ़ निश्चय कर लिया था कि विश्व में भ्रमात्मक वातावरण पैदा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न करके मात्र प्रेम-सन्देश को ही जन-जन के मानस में कूट-कूट करके भर दिया जाये। इसमें तनिक भी सन्देह नहीं--स्वामी रामतीर्थ बहुमुखी प्रतिभा से सम्पन्न ईश-अवतार थे। उनका प्रत्येक शब्द स्वयं में एक आन्दोलन था। उनके वाक्याशों में यथार्थता–संवेदन इतना था कि—जिसको वे जिधर मोडना चाहते उधर मोड़ डालते। मगरमच्छ के साथ स्नान करने वाले, सिहों के मध्य विचरण करने वाले और कभी कभी सर्पो को उठाकर गले में डाल लेने वाले स्वामी राम ने विश्व को एकात्मकता का जो पाठ पढ़ाया वह वास्तव में भारतीय संस्कृति का ही एक विशिष्ट अंग है।

जो तेरे अन्दर है, वहीं मेरे अन्दर है तथा वही समस्त भूमण्डल के जीवों के अन्दर है--आत्मा। आत्मा से ऊपर उठकर जो सार्वभौमिक चिन्तन है--वह यही हमें सिखाता हैं कि--'ईश्वर एक है।' जब भूमण्डल का सृजन कर्त्ता स्वयं एक है तो वह एकता ही पसन्द भी करता है। एकता एवं प्रेम में सामंजस्य किसी भी राष्ट्र अथवा समस्त भूमण्डल को शान्ति का शीतल साम्राज्य प्रदान करता है। यह वही शीतलता की पृष्ठ भूमि है जहां पर मानव कभी कभी वसुधा पर राम राज्य स्थापित करने की बातें करता है।

आज जब कि विश्व परमाणु युग में प्रवेश कर चुका है तथा उसकी आँखों में शक्ति के कारण अहंकार की प्रबल चमक छा गयी है–ऐसे समय में अत्यावश्यक है कि लोकाचारों एवं नैतिक आदर्शों को विकसित कर सब स्वामी राम के आदर्शों एवं उनके जोवन के निजी अनुभवों को शिक्षा के रूप में विश्व भर में बाँट डालें। जब ऐसा होगा तो विश्व में शान्ति – संस्कार का बीज एक बार फिर बोया जा सकेगा।

देश के राम–प्रेमी युवाओं की संख्या कम नहीं है किन्तु एक दृष्टि उठाने की आवश्यकता है—ऐसी दृष्टि जो समाज से कुछ विवकानन्द ढूंढ सके--कुछ स्वामीराम जैसी महान विभूतियां खोज सके। यह तो आवश्यकता है आज की, वरन. शान्ति का ही अस्तित्व खतरे में पड़ सकता है।

सर फट गया है गम का, खा-खा के मुझसे टक्कर।
अब गाड़ने को उसकी, तुर्बत बना रहा हूँ।

—स्वामी राम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वामी रामतीर्थ युवा संगठन द्वारा आयोजित निबन्ध प्रतियोगिता अप्रेल १६७८ में पुरस्कृत सर्वोत्तम निबन्ध

"भूखे पेट का भगवान रोटी"

मन की हविस तन को गुनाहगार बना देती है,
बाग के बाग को बीमार बना देती है,
भूखों को देश भक्ति सिखाने वालों,
भूख इन्सान को गद्दार बना देती है।
('नीरज')

'कल्याण' भारतीय संस्कृति का मूलभूत आधार रहा है। हमारे ऋषि-मुनियों एवं ज्ञानी पुरुषों ने तो समस्त संसार के सुख एवं कल्याण के लिए ईश–स्तुति तक की है। प्राचीन भारत अपने ही प्रकार का एक भारत था। सोने की चिड़िया कह कर इसे पुकारा जाता था। यही कारण भी था कि विदेशी सदैव इस चिडिया को कैद करने के लिए कुचक्र अथवा षड्यन्त्रों का जाल फैलाये तत्पर रहते थे। उनके ये कुचक्र सफल हुए तथा हमको परतन्त्रता की बेड़ियां पहननी पड़ीं। हमारे प्राकृतिक साधनों, ऐतिहासिक साधनों एवं सांस्कृतिक साधनों का अनुचित रूप से प्रयोग ही नहीं वरन् उन्हें समूल नष्ट भी किया जाने लगा। हमारी यह सोने की चिड़िया भारत, मात्र अस्थि पंजरों का एक ढाँचा सा रह गयी। भारतीय सम्पदा की चमक इंग्लैड में जाकर सुरक्षित सी हो गयी। अंग्रेजों ने हमें आपस में टकराकर अपनी शक्ति और संगठन को अत्यन्त सुदृढ़ कर लिया। हमारी संस्कृति का सूर्य लगभग अस्त होने लगा था और 'भारतीयता' पूर्णतः खतरे में आ गयी थी प्रसिद्ध समाजशास्त्री हॉविल ने कहा है कि– "मनुष्य के पास से यदि उसकी संस्कृति छीन ली जाये तो वह मानव नहीं, निश्चय ही नर-वानर होगा" वास्तव में जब हमारे साहित्य को नष्ट किया जाने लगा और बुद्धिजीवियों के प्रति उपेक्षा एवं कठोरता अपनायो जाने लगी-तब भारतीय मानव, मानव नही रहा। मात्र पेट भरना ही उसका भगवान हो गया। क्योंकि सभी प्रगति के साधन उससे छीन लिए गये थे।

कठोर एवं सतत प्रयत्नों के पश्चात् हमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वतन्त्रतता प्राप्त हुई और विश्व के मानचित्र में भारत एक 'गणतन्त्र' के रूप में उभरा। आज कुछ-एक क्षेत्रों में निःसन्देह आशातीत प्रगति की है। किसी भी राष्ट्र की प्रगति के तीन प्रमुख स्तम्भ होते हैं :–

(१) कृषक वर्ग (२) शिक्षक वर्ग (३) सैनिक वर्ग। इन तीनों के अन्त में 'क' आता है जो 'कर्त्ता' की ओर ध्यान आकृष्ट करता है अथवा जिसका अर्थ है 'करने वाला'। केवल सैनिक वर्ग को छोड़ कर साधारणतः कुछ समस्याएं हमारे इन दो कर्ताओं के सम्मुख मुंह फैलाये खड़ीं ही रहती हैं। कृषक जिसके हाथों में 'उत्पादन' है, शिक्षक जिसके हाथों में ज्ञान का 'उपभोग' कराना है, वहीं यदि असंतोष हो तो कोई भी समाज प्रगति नही कर सकता आज मानव आवश्यकतायें असींमित हैं तथा आधुनिक युग 'द्रव्य' द्वारा क्रय-विक्रय का युग है। कृषक तथा शिक्षक ये समाज के ऐसे दो प्रमुख अंग हैं जिनकी मात्र उदासीनता से दुर्भिक्ष तक कागरल पीना पड़ सकता है। कृषक तो उपज अथवा उत्पादन बढ़ाता है दूसरी ओर शिक्षक उत्पादन के उपभोग हेतु लोकाचारों, नैतिक नियमों कार्य—प्रविधियों एवं कर्तव्यों के प्रति समाज को सचेत करता है। अतः हम निः सन्देह यह कह सकते हैं कि कृषक से कहीं अधिक समाज - प्रगति शिक्षक पर ही निर्भर करती है।

भारत आज भी 'आध्यात्मिकता' का केन्द्र माना जाता है यही कारण है कि आज भी विदेशी लोग आत्मशान्ति हेतु भारत के दुर्गम स्थानों पर शान्ति की खोज में भटकते देखे जाते हैं। हमारे देश की पिछड़ी जातियों के उत्थान हेतु आज हमारी सरकार का ध्यान प्रचुर है, बड़े ही सौभाग्य की बात है यह। यही कदम हमारी अनुपम संस्कृति का रक्षक हो सकता है। 'धार्मिक निरपेक्षता' हमारे शासन का आधार है। पिछड़ी जातियों की दशातो सोचनीय है ही इनकी आड़ में अन्य गरीब जनता की स्थिति भी दयनीय है। ऐसे अवसरों का लाभ उठाकर ही विदेशी लोग चन्द सिक्कों की झलक दिखाकर धर्म तक बदलवा लेते हैं। जहाँ हमारा धर्म बदला समझ लो हमारा भगवान ही बदल गया, हमारी संस्कृति तक बदल गयी। स्पष्ट है कि धर्म क्यों बदला गया—महज आवश्यकताओं की संपूर्ति हेतु। पेट भरना अथवा 'रोटी' ही आज भारत की ११ प्रतिशत जनता का भगवान है। भूखे पेट रहकर यदि हम चाहें कि हमारी संस्कृति सुदृढ़ हो, नैतिक नियम दृढ़ हो, लोकाचारों का विकास हो, मात्र कपोल - कल्पित है। जब तक मनुष्य भूखा है, मनुष्यता अधूरी है। जब हमारी आत्मा रोटी की इच्छा करेगी, कैसे उसका परमात्मा में मिलन हो सकेगा।

धर्म पर चल कर ही मनुष्य ईश्वर की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओर ध्यान लगाना है। भूख के कारण जब यह धर्म बदलने पर विवश होता रहेगा तब तक क्या उसकी आध्यात्मिक उन्नति सम्भव है? कौन सा भगवान उसे मिल सकता है?

महात्मा गांधी का कथन है कि–"कर्म करते हुए भी जो उसका फल छोड़ता है, वह चढ़ता है किन्तु जो धर्म छोड़ता वह गिरता है" आज हमसे इतना कार्य तो होता नहीं जितनी कि हमारी आवश्यकताएं हैं। सदैव भौतिक वस्तुओं का अभाव हमें वेदनायें देता रहता है। फलतः इस कारण ईश्वर हमें रोटी के रुप में अथवा 'आवश्यकता' के रूप में हीं दिखाई देता रहता है।

भूखे मनुष्य की तो मात्र एक ही आकांक्षा भगवान नजर आती है। क्यों कि कहा भी है 'भूखे भजन न होय गोपाला'। फलतः रोटी के कारण ही मनुष्य संस्कृति तक का दास भी बन बैठता है। उसका लक्ष्य रोटी होने के कारण भगवान उसका केन्द्र–बिन्दु नहीं होता। वह पूर्णतः रोटी का गुलाम होता है तथा 'रोटी' की राह में जो कुछ भी प्रलोभन उसे दीखते हैं सहर्ष अपना लेता है। उपर्युक्त कथन की पुष्टि लक्ष्य के आधार पर जाँदला ब्रुयेर के शब्दों में कितनी सार्थक सी लगती है उनका कथन है कि "खरीदे हुए गुलाम का तो एक ही मालिक होता है किन्तु भूखे इन्सान को तो उन सब का गुलाम बनना पड़ता है जो उसकी 'रोटी' में काम आ सकें।"

ईश–स्तुति हेतु भक्त–जन मन्दिर में जाते हैं किन्तु इनमें कुछ ऐसे भी होते हैं जो अपनी अनजानी सी दृष्टि जूतों पर ही केन्द्रित रखते हैं, सोचते हैं कि कोई उनके जूते अथवा चप्पल लेकर चम्पत न हो जाये। पाठक गण अब स्वयं ही अनुमान लगा सकते हैं कि जो मनुष्य मन्दिर में जूते उठाने को जायेगा उसका मुख्य लक्ष्य या तो उनको स्वयं ही पहनना होगा अथवा उन्हें बेचना। फलतः जूते चुराने वाले के लिए तो वे जूते ही भगवान हैं क्यों कि वे हीं उनके अन्नदाता सिद्ध हो सकते हैं, क्यों कि उसे तो पेट की आग बुझानी है। भले ही पकड़ा जाये, भले ही उसे हथकड़ियाँ पहना दी जाये। किसी ने ठीक ही कहा है–

भूख में लुटते हैं दीन–और–इमान
बड़ा तीर मारा कि पहना दीं बेड़ियाँ

भारत की खाद्य समस्या बड़ी ही विकट है। यहाँ तक कि हमें मात्र भूख के कारण प्रजातन्त्र को भी गंवाना पड़ सकता है। डाँ० सरमन ई० जाँनसन ने तो यहां तक कहा है कि–'भारत का अन्न संकट केवल खाद्यान्न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ी समस्या ही नहीं वरन् भारत के भविष्य के निर्माण कीं भी समस्या है। पर्याप्त भोजन के भाव में भारत वर्ष के कल्याण का प्रश्न, उसके लिए सामाजिक न्याय प्राप्त करना एवं प्रजातन्त्र का विकास करना सर्वथा असम्भव है।"

ये खाद्य संकट भूखे पेट का और ज्यादा गवान बनता जा रहा है। एक भीख माँगने वाला क्ति किसीं भी व्यक्ति को 'अन्नदाता' अथवा ई-बाप' कहते हुए नहीं झिझकता। उसे तो पेट भूख मिटानी है जो भी उसको सहायता देगा थवा जो भीं उसकी 'रोटी' जुटाने में आगे ेगा वही उसका भगवान होगा।

एक मजदूर दिन भर परिश्रम करने के चात् जब रूखा - सूखा खाकर रात को बीड़ी का श खींचकर खाट पर लेटता है तो उस समय सके दिमाग में अगले दिन की चिन्ता निरन्तर ी रहती है वह इसी सोच में डूबकर 'भगवान तेरा ही आसरा है' कहकर सो जाता है। स्पष्ट है कि उसका वह भगवान अगले दिन की रोटी' है। वह भयभीत रहता है कि कल मैं भूखा न रह जाऊँ, मेरे बच्चे भूखे न रह जायें। निःसन्देह वह ब्राह्ममूहुर्त में ही उठकर तैयार होने लगता है। ईश्वर–स्तुति के लिए नहीं बल्कि रोटी के लिए।

उपर्युक्त समस्त विवेचन के आधार पर इस तथ्य पर पहुंचा जा सकता है कि "भूखे पेट का भगवान मात्र रोटी ही है। जब हमारी 'रोटी' की समस्या का निदान हो जायेगा, निःसन्देह हमारा आध्यात्मिक क्षेत्र विकसित हो सकेगा और हमारी संस्कृति में स्थायित्व एवं अटूट संगटन आ पायेगा।

—लेखक 'श्रीचन्द विजयन्त'

[समाप्त]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यस्य देवे परा भक्तिर्यथा देवे तथागुरौ।

'यस्य देवे परा भक्ति यथा देवे तथा गुरौ' जिसकी देव में, जिसकी भगवान में अनन्य भक्ति है, और भगवान के समान गुरु में भक्ति है ऐसे व्यक्ति ही, परब्रह्म परमात्मा को प्राप्त होते हैं। भगवद्भक्ति अव्यक्त में प्यार तथा भक्ति है। गुरु भक्ति व्यक्त में भक्ति है जो व्यक्त में निष्ठा, प्यार भक्ति भाव नहीं रख सकता वह व्यक्ति अव्यक्त में क्या भाव रखेगा। व्यक्त में भक्ति भाव ही अन्त में अव्यक्त प्रगट होता है। प्यार श्रद्धा, निष्ठा भाव से उत्पन्न होती हैं। अव्यक्त में विचार से, ज्ञान से, भाव शक्ति रूप है अतः व्यक्त में भक्ति में भक्ति "बलवती श्रद्धा और निष्ठा होती है किन्तु विचार में भक्ति ज्ञान के अशक्त होने के बाद निर्बल होती है अतः ज्ञानमय भक्ति को पुष्ट करने के लिए बल वती करने के लिए, सजीव रूप देने के लिए, भावमय एकीं-भाव सशक्त एकींभाव है। जिसे 'इमोशनल एण्टीग्रेसन' कहते हैं। गुरु के साथ इमोशनल ऐण्टीग्रेसन होने से, उसके वाक्य, उनका पथ प्रदर्शन सशक्त होता है।

जब गुरु में अनन्त प्यार अनन्त निष्ठा है, तब पूर्ण विश्वास होता है। विश्वास असन्दिग्ध रूप ही श्रद्धा है, और श्रद्धा मन सीता के अपहरण के अनन्तर वन-वन में भ हुए भगवान राम अन्त में मतङ्ग, ऋ आश्रम पर पहुँचते हैं। आश्रम के दर्शन से राम का शोक निवृत हो जाता है। आह्लादित, और तन पुलकित शरीर में नई का संचार कितना सुहावना है, इसके कण ध्वनि सुनाई दे रही है। सामने हवन कुण्ड अग्नि प्रज्वलित है। ऋषियों के दर्शन नहीं हो किन्तु उनके द्वारा उच्चारित वेद के मन्त्र सुना रहे है। आश्रम के पक्षी वेद – मन्त्रों का गान रहे हैं। लक्ष्मण मुझे यहाँ ऐसा अपनत्व अ हो रहा है मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि आश्रम ही स्वरुप है, और वेद ध्वनि मेरा ही प्राण भगवान राम की आँखें बन्द हैं न जाने किस में खोये खड़े हैं। शबरी ने राम के चरणों में नम की ध्यान भङ्ग हुआ देखा कि एक वृद्धा तपस्वि जिसके सिर पर जटाए थीं, रामचरण पकड़े थी शबरी ने भगवान को अर्घादि देकर आसन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बैठाया।

शबरी ! क्या तुम्हारा क्रोध तुम्हारे नियन्त्रण में है ? तुम्हारा मन तुम्हारे वश में है ? तुमने क्या तपश्चर्या की। यह पूछते हुए अन्त में भगवान राम ने कहा,

क्वचितें पुजिता: गुरव: —

शबरी क्या तुमने गुरुजनों का पूजन ठीक से किया ?

शबरी जो आनन्द–सागर में डूबी हुई थी, उसका शरीर और वाणी स्तम्भित थी। गुरु देव शब्द सुनते ही उसमें गति उत्पन्न हुई। तत्काल बोल उठी, 'धैप पूजिता' गुरुव: मैंने आज अपने गुरुजनों का पूजन पूर्ण कर लिया, राम मैं आपका पूजन नही कर रही गुरुदेव की आज्ञा - अनुसार अपने परम पूज्य मतङ्ग का पूजन कर रही हूं। आज मेरे गुरु देव मेरे सम्मुख हैं। देव रूप में और राम रूप से, राम मुझे तुममें गुरुदेव के दर्शन हो रहे हैं। अत: गुरु के रूप में आपका पूजन कर रहीं हूं। मैं गुरु – आज्ञा से इस निर्जन वन में नि करती हूँ, निर्जन वन में निवास करते हुए भय न हुआ। १२ वर्ष से मैं गुरु आज्ञा लेकर तुम्ह आतिथ्य के लिए उत्कण्ठित बैठी थी, मैं जान थी, कि तुम्हें आना पड़ेगा। तुम आये मेरे संकल्प के अधीन होकर। मुझे आपके दर्शन गुरु देव के अनुग्रह से आपकी पूजा का अवसर मि शबरी की गुरु भक्ति ने एक साकार रूप धार किया, राम रूप धारण किया।

हम भी इस पवित्र गुरु पूर्णिमा के अवस पर शबरी के समान गुरु भक्ति के व्रत का आचर करें एक दिन आयेगा जब हमारी गुरु भक्ति ह साक्षात् भगवान रूप से दर्शन देगी, शबरी के तुल तुम्हारा जीवन सफल होगा। जीवन की सफलत गुरु-चरणों में प्राप्य है। यह गुरु पूर्णिमा का उत्स अत्यन्त प्राचीन पर्व हैं। भारतकी संस्कृति की पवि आत्मा इस पर्व में प्रकट होती है। इस दिन सभ शिष्य गुरु देव के सान्निध्य को पाकर भव साग को पार कर लेते हैं।

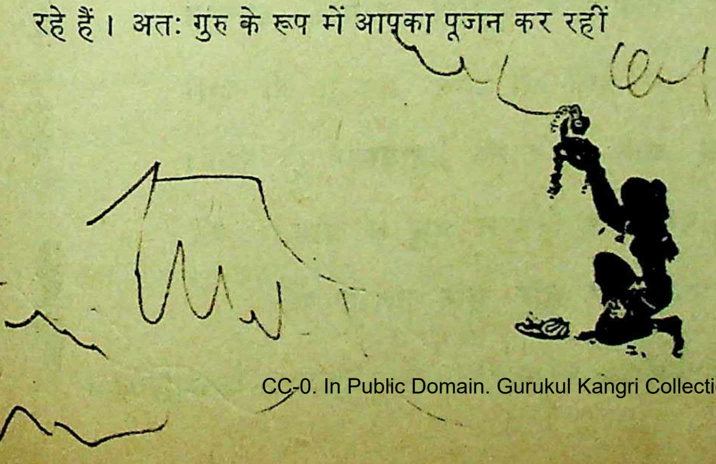

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शोक–समाचार

समस्त राम-प्रेमियों को यह जानकर दुःख होगा कि विश्व-हृदय सम्राट श्री स्वामी रामतीर्थ जी परमहंस की पौत्री तथा स्वर्गीय श्री ब्रह्मानन्द गोस्वामी जी की सुपुत्री श्रीमती कृष्ण मंजरी भार्गव का ११ मई १९८१ को पूना में अकस्मात् निधन हो गया है। उनका विवाह कुछ ही वर्ष पूर्व भार्गव परिवार में हुआ था। यह देहावसान अत्यन्त दुःख दायी है।

राम–दरबार दिवंगत पुण्यात्मा की सद्गति एवं आत्म-शान्ति हेतु सच्चिदानन्द भगवान से प्रार्थी है व श्रीमती कृष्णा जी की माता श्रीमती योगेश्वरी गोस्वामी, पति डॉ० रामदेव भार्गव जी सहित समस्त सगे-सम्बन्धियों को हार्दिक संवेदना पहुंचाता है।

× × ×

स्वामी रामतीर्थ मिशन अलीगढ़ के भूतपूर्व अध्यक्ष, अत्यन्त निष्काम सेवी, सन्तस्वभाव, राम प्रेमी श्री ओम प्रकाश जी वर्मा का अचानक हृदयगति रुक जाने के कारण देहावसान हो गया। अलीगढ़ व देहरादून मिशन पर उनके निमित्त प्रभु से प्रार्थना की गई। सभी सदस्यों ने उनके कार्यों की भूरि–भूरि प्रशंसा की।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वामी रामतीर्थ मिशन, दिल्ली की मुरादनगर शाखा:

निःशुल्क होम्योपैथिक औषधालय

मुरादनगर (उ०प्र०) में कुछ मास पूर्व मिशन की शाखा की स्थापना परमाध्यक्ष श्री स्वामी अमर मुनि जीं महाराज द्वारा की गयी थी। इसकी निरन्तर बढ़ती लोकप्रियता तथा हमारे सम्मानीय सहयोगी श्री हरिराम सचदेव जी की निःस्वार्थ सेवा के कारण वहाँ जनता जनार्दन की सेवार्थ एक औषधालय खोलने की आवश्यकता अनुभव हुई।

स्थानीय महानुभावों के अनुरोध पर इस दिशा में पर्याप्त प्रगति हुई तथा दिल्ली मिशन की प्रधाना श्रीमतीं मेला देवी मल्होत्रा जी की प्रेरणा पर इसके संचालन का निर्णय किया गया। मुरादनगर आयुद्ध निर्माणी में सेवारत एक अनुभवी सज्जन श्री एम०डीं० चौधरी ने चिकित्सक के रूप अपनी अवैतनिक सेवायें अर्पित कीं व स्थानीय एक अन्य महानुभाव ने इसके लिए अपने निवास स्थान का एक भाग उपलब्ध कराया। श्री जगमोहन जी ने भी चिकित्सक के सहायक के रूप में अपनी सेवाओं को जनहितार्थ दिया।

सर्वसाधारण के उत्साह तथा प्रेम को देखते हुए औषधालय के विधिवत् उद्घाटन के लिए, रविवार दिनांक २४ मई १९८१ निश्चित हुआ। रविवारीय सत्संगोपरान्त दिल्ली मिशन की प्रधाना (जिन्हें उद्घाटन करना था) कुछ महानुभावों के अपराह्न में रवाना हुई। जाने वालों में सर्वश्री जगन्नाथ भसीन, रामलाल चावला, आर०डी०खन्ना नरसिंह लाल व मिशन के प्रधान सचिव के मनोचा श्रीमति गोकुल चन्द मल्होत्रा, श्रीमती गोमिया और श्रीमती सरस्वती देवी साथ गयीं।

लगभग २ बजे सभी मुरादनगर पहुंचे जहां उनका हार्दिक स्वागत किया गया। भोजन व विश्राम के पश्चात् उद्घाटन–कार्यक्रम में वीणावादिनी मां सरस्वतीं व भारतमाता की नन्हीं बालिकाओं द्वारा स्तुति की गयी। इससे पूर्व मातृ–मण्डल द्वारा प्रार्थना, गीतापाठ, राम–स्तोत्र व भजन गाये गये। समय व रविवारीय अवकाश को देखते हुए उपस्थिति उत्साहवर्द्धक थी। दिल्ली से पधारे हुए संगीतज्ञ श्री राज किशोर शुक्ल ने तीन मधुर भजन सुनाये वक्ताओं में श्री रामलाल चावला, श्री भसीन व श्री खन्ना जीं ने अपनी आकर्षक वाक् शैली में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वामी राम व उनकी शिक्षा पर वृहद् प्रकाश डाला जिसे रामप्रेमियों ने अतीव जिज्ञासावश श्रवण किया।

अन्त में माननीया श्रीमती मेला देवी जी ने अनूठे ढंग से औषधालय के संचालन की घोषणा की 'टेप' काटने की प्रचलित रीति के स्थान पर उन्होंने वैदिक मंत्रोच्चारण के मध्य डाँ चौधरी व उनके सहायक श्री जगमोहन के मस्तक पर केशर का तिलक लगाया। सभी ने 'शहन्शाह राम की जय' की तुमुल ध्वनि से इसका स्वागत किया आरती के पश्चात् सभा विसर्जित हुई व चाय-पान के उपरान्त दिल्ली के श्री हरिराम जी सचदेव, श्रीमती सचदेव व उनके परिवार-सदस्य वहाँ के उत्साही सज्जनों को धन्यवाद देते हुए दिल्ली के लिए चल दिये। समारोह अत्यन्त सफल रहा।

शोक-समाचार

श्री कर्नल चावला जी के निमित्त सभी मिशन में शोक-सभाएं हुई व प्रभु से प्रार्थना की गई उनके शोक संतप्त माता-पिता, समस्त परिवार; धर्मपत्नी व बच्चों को प्रभु इस कष्ट को सहन करने की शक्ति दे तथा उनकी आत्मा को शान्ति !

* * * * * *

२१ जून रविवार को आश्रम राजपुर पर, श्री पन्नालाल सेठी का आकस्मिक निधन हो गया। रामदरबार उनकी आत्म-शान्ति हेतु प्रभु से प्रार्थना करता है। उनकी आयु लग भग ८० वर्ष की थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सर्व भूत हिते रता :

ॐ

गुरुपूर्णिमा-महोत्सव

वंदे बोधमयं नित्य गुरूं शंकररूपिणम् ।
यमाश्रितो हि वक्रोऽपि चन्द्रः सर्वत्र वन्द्यते ।।

आप सबको यह सूचित करते हुए अत्यन्त हर्ष होता है कि इस वर्ष गुरुपूर्णिमा महोत्सव परमश्रद्धेय आचार्य श्री स्वामी अमरमुनि जी महाराज की उपस्थिति में दिनांक १७ जुलाई, १९८१ तदनुसार शुक्रवार को राजपुर आश्रम पर प्रातः ९ बजे से आयोजित किया जा रहा है। इस महोत्सव में समाधिपूजन, गुरुपूजन, गीता पाठ, यज्ञादि धार्मिक कृत्यों के साथ ही इसके महत्व पर पधारे हुए विद्वान प्रवक्ताओं द्वारा दिये गये प्रवचनों के श्रवण का भी लाभ होगा !

अतः इस अवसर पर आपको अपने इष्ट-मित्रों सहित रामदरबार सादर आमन्त्रित करता है।

स्वामी रामतीर्थ मिशन, स्वामी रामतीर्थ नगर न्यू दिल्ली-५५ पर यह महोत्सव १९ जोलाई १९८१ इतवार को प्रातः ९ बजे से १२---३० (साढ़े बारह) बजे तक मनाया जायेगा।

निवेदक
काका हरिओ३म्
मंत्री--स्वामी रामतीर्थ मिशन
राजपुर, देहरा दून
(उ०प्र०)

दूरभाष — 4297 देहरादून
84225 राजपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वामी राम के विचार-वेदान्त-दृष्टि में सफलता

अनुवादक : श्री भारत बन्धु शर्मा जी

प्रश्न: स्वामी जी आप कहते हैं कि हम स्वतः ज्ञान भण्डार हैं। यदि यह सत्य है तो क्या आप मुझे वेदान्त का कोई ऐसा चमत्कार दिखाने की कृपा करेंगे जिसके द्वारा मैं पढ़ाई किये विना 'ला' (कानून) की परीक्षा में सर्वोच्च स्थान प्राप्त कर सकूँ ?

उत्तर: (स्वामी जी) एक राजकुमार बाल्यावस्था में मन्त्रियों तथा अन्य अधिकारियों के साथ लुकन–छिपी खेल खेला करता था। उसमें अपने छिपे हुए साथियों को ढूंढ़ निकालने की विशेषता थी। एक दिन जब वे बच्चे खेल रहे थे तो एक व्यक्ति वहाँ से गुजरते हुए रुक गया। उसने राजकुमार को अपने पास बुलाकर कहा'— बेटा, क्या तुम जानते हो कि अपने साथियों को ढूंढने में तुम व्यर्थ अपना समय गँवा रहे हो ?' तुम्हें तो यह अधिकार प्राप्त है कि जिसे भी चाहें आदेश देकर अपने पास बुला लें। क्या किसी में तुम्हारे आदेश की अवहेलना करने का साहस है ? यह सुनकर राजकुमार ने उत्तर दिया श्रीमान् आप की बात सही है किन्तु ऐसा करने से खेल का मजा ही जाता रहेगा। ऐसे ही हम सर्वज्ञ एवं सर्वशक्तिमान् परमात्मा होते हुए भी अपनी इच्छाओं को पूरा करने के उद्देश्य से संसार के भिन्न–भिन्न पदार्थों की खोज में भटकते रहते हैं। इन बालकों की भाँति हम भी भूल–भूलइयों में खोकर अपने वास्तविक स्वरूप को भूले हुए हैं। यह स्मरण नहीं है कि जिस ऊँचाई पर हम उड़ान भरते हैं वहाँ से भूत–भविष्यत्–वर्तमान (तीनों काल) सूर्य, चन्द्रमा और तारा–गण इस प्रकार दीखते हैं–जैसे अथाह समुद्र में एक छोटी लहर। जब तुम! - सनातन ज्ञान के भण्डार हो तो कानून –सरीखे सांसारिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पदार्थों में सफल होने की इच्छा है तो तुम्हें इन्द्रियों के धरातल से ऊपर उठना होगा। तुम तो इन इन्द्रियों के लिए ही चमत्कार प्राप्त करने के लिए लालायित हो। कुछ मछेरों ने मछलियां पकड़ने के लिए नदी में जाल फेंका। जब मछलियां उसके साथ टकरायीं तो वे अपने भार से ही उस जाल को पानी में खींच ले गयीं। वेदान्त का चमत्कार इन मछलियों के समान है जो इच्छाओं के जाल को अपने साथ ले गयी। संसार की बातें जानने के लिए हमारी इच्छाओं का उद्‌गम वेदान्त ही है। इस चमत्कार के कारण ही हमें अध्ययन के समय इन्द्रियों का भान नहीं होता।

कहते हैं एक मुस्लिम फ़कीर (हज़रत इमाम गिज्ज़ाली) को एक दिन पढ़ते समय झपकी आ गयी। उन्होंने स्वप्न में देखा कि इल्म के फ़रिश्ते (विद्याधिपति) हजरत ख्वाजा खिजर के दर्शन हुए। फरिश्ते ने गिज्ज़ाली के कान में फूंक मारकर उन्हें सभी विद्याओं से समृद्ध करने की बात कही परन्तु आत्म–सम्मानवाले विद्यार्थी ने बड़ी नम्रता से प्रार्थना की कि–हुज़ूर अगर आप मुझे देना ही चाहते हैं तो एक चिराग प्रदान कीजिये जिसके माध्यम से मैं रात्रि में देर तक अपनी पढ़ाई कर सकूं। इस प्रकार हजरत गिज्ज़ाली ने एक पगडण्डी पर चलकर स्वर्ग में प्रवेश करने के स्थान के सामान्य लम्बे मार्ग पर चलना स्वीकार किया।

प्यारों! परमात्मा को कभी यह मन्त्रणा (सलाह) न दो कि उसे क्या करना चाहिए और कैसे? कभी अपनी इच्छाओं को भगवान पर थोपने का विचार तक न करो। इसके विपरीत अपने संकल्पों को उसकी इच्छा पर छोड़ दो, तुम्हें तो अपनीं इच्छाओं का नकली सिक्कों की तरह त्याग करना होगा। इस प्रकार तुम्हारा शरीर तथा मन दोनों स्वतः प्रकाशित हो जायेगें। यथार्थ ज्ञान व उपयोगी विद्या भीतर से ही प्रकट होतेहैं, पुस्तकों एवं भटकने वाले मन से नहीं! खोज के मैदान में उतरने वाले उन्हीं विद्वानों का सफलता ने वरण किया है जो अपने सीमित वृत्त (अहं) की परिधि से बाहर निकलकर अपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अस्तित्व को यथार्थ ज्ञान में मिला चुके हैं। वे तो स्फटिकमणि के समान पारदर्शी हो गये हैं और उनसे ज्ञान की रश्मियां फूट कर बाहर निकलती हैं वे तो स्वयं पुस्तकों तथा पुस्तकालयों को प्रकाशित करते हैं। यह है वास्तविक रूप से कार्यरत रहना। 'राम' की दृष्टि में 'कार्य' का प्रयोजन वह स्थिति नही है जिसमें कोई अपने पर भार माने। वेदान्त के मतानुसार कार्य का अर्थ है परमात्मा से सम्पर्क करना तथा उसमें लीन हो जाना। वास्तविक कार्य करते समय हमें स्वार्थ रहित होकर परमात्मा से एकाकार करना है। इसे लोग निकम्मापन अपना निठल्लापन कहते हैं। वेदान्त की दृष्टि में जटिल से जटिल कार्य भी किसी प्रकार से भार न बनकर यथार्थ प्रसन्नता तथा शान्ति प्रदान करता है। वेदान्त की शिक्षा का सार यह है कि कोई कार्य न रहने पर भी कार्यरत रहो। हे, कार्यकर्त्ता! जब तुम सफलता की खोज में भटकना बन्द कर दोगे तो सफलता स्वतः तुम्हें खोजने के लिए निकलेगी।

अनुवादक — श्री भारत बन्धु शर्मा

जीवन–साहित्य

-संत लारेंस

मोक्ष पाने के लिए बाह्याडम्बरों की जरूरत नहीं। रोजमर्रा के हमारे सभी काम भगवान के लिए होने चाहिए। उसका ध्यान करते हुए हमें चलना चाहिए। आराधना भक्ति से प्रेरित होकर होनी चाहिए, दूसरों को दिखाने के लिए अथवा उसकी सराहना पाने के लिए नहीं। किसी भी प्रकार के दिखावे के बिना प्रभु का ध्यान करते हुए हम अपने नित्य कर्म करते जायें तो भगवान को हम पा लेंगे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओ पथिक

मत चलो असत् के पथ पर, सत्पथ पर पथिक चलो रे
है ज्ञान तुम्हें माया का, फिर फंसे हो क्यों दलदल में ?
स्वातन्त्रय तुम्हारी इच्छा, फिर बन्धे हो क्यों बन्धन में ?
अमृतत्व समक्ष तुम्हारे, फिर क्यों पीते हो विष प्याला
है बाह्य स्वच्छता तो क्या, उर में यदि भाव है काला
करो स्वच्छ हृदय तुम राही, आगे कुछ और बढ़ो रे।
मत चलो असत् के पथ पर, सत्पथ पर पथिक चलो रे।
है पथिक तुम्हारा जो पथ, वह पथ है दूर भ्रान्ति से,
यदि आये शत्रु सम्मुख, तो विजयी हो शान्ति से,
दिग्भ्रान्त करे यदि कोई, तब रखना स्मृति को दृढ़ तुम,
दे कोई लालच धन का, मत तजना अपना पथ तुम,
कर त्याग तृषणाओं का, तुम आत्मन् में बिचरो रे !
मत चलो असत् के पथ पर, सत्पथ पर पथिक चलो रे।
तुम हो इक पथिक कभी भी यह ध्यान न छुटने पाये।
जलना होगा बहु अग्निमे, आशा को उर में बसाये ॥
उद्विग्न न होगा दुःख में, सुख की इच्छा से विरहित।
तुम आगे बढ़ते जाना, इच्छा ले उर में जगहित ॥
जगहित तुम जीना मरना अर्पित सर्व स्वकरो रे।
मत चलो असत् के पंथ पर, सत्पथ पर पथिक चलो रे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

— काका हरिॐओम 'निर्द्वन्द'

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'Kingdom Of Heaven'

—Goyeudka

Some practicants meditate on tne Unmanifest Pure Brahma, some on His manifested two-armed Form and some others on the Four-armed Form of Bhagavan Visnu. As a matter of fact, just as Bhagavan Visnu, Rama and Krishna are one and the same, even so the Goddess or the Female Form of the Supreme Deity. Siva, Ganesa and Surya (the Sun - god) are not different from Him. It appears that Sri Vedavyasa composed the eighteen Puranas in order to portray one God, according to the various conceptions of the people. The Furana bearing the name of particulars Deity gives precedence to that Deity by declaring him to be the Supreme God, the Creator, possessed of all virtues. In reality, however, one and the same God has been described through all those different name and forms. The practicant may select the name and form according to his liking. If a persons meditates on a pillar regarding it will be a meditation on God, provided his heart is fully fixed on the thought of God.

As between meditation on the Manifest and Un-manifest aspects of God, the latter is somewhat more difficult than the former. The result of both is the same ; differences lie only in the procedure of practice. Practicants should, therefore, meditate on either the Unmanifest or Manifest aspect, according to their inclination or liking.

If worshippers of the Unmanifest aspect of God meditate on the Unmanifest without carrying to their mind the idea of the Manifest, there can be no obejection; but if they carry on meditation on the Unmanifest, thoroughly realizing the truth about the Manifest regarding Him as all - pervading and all-formed, their effort will more quickly bear fruit. Success will be somewhat delayed if there is want of realization of the truth about the Manifest aspect of God.

Similarly there is need for the worshipper* of the Manifest aspect to know the truth about Unmanifest all-pervading Brahma.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

This will make his success easier and quicker In the Gita, the Lord has extolled the Pratice of meditation done with realiza. tied of hts glory.

" I consider them to be the best Yogis who, endowed with supreme Fiath, and ever unithd through meditation with Me worship Me with the mind cenrred on Me".

As a matter of, meditation done on the Manifest aspect, realizing the glory of the Unmanifest is the best and easiest discipline for the quick realization of God. The reality about God is however, different from both those aspects, and cannot be meditation upon. There are several processes of meditation on the Unmanifest. The practicant should adopt for himself whatever prosess appears easy for him The result of all is the same. Some of these processes are being described below.

Following the directions given in the Gtta VI. 11 to 13, the practicant should spend at least three hours regulary every day in th practice of meditation in a solitary place, taking his seat either in the Swastika of Siddha posture, fixing his gaze on the tip of the nose, or closing the eyes (as it suits him). If he cannot devote threa hours to the practice, let him devote at least one hour without fail. In the beginning, if his mind runs away from the pratice, he may start with fifteen or twenty minutas, and gradually increase the time. Practice of meditation for three houre is indispensiable for practice who desire God - realization quickly. Practice of Japa of the Divine Nama renders exceptional help during meditation. All Names of God are equally efficacious, but in the path or meditation on the Unmanifest aspect precedence is given to Om. Maharsi Patanjali says in his Yogs-Darsana:—

"Om is synonymous with Him. Japa of this should be performed, and its meaning (God) should be mediated upon" declares the Name of God, and the second advises practice of Japa of the Name and meditation on the Divine Form.

I do not propose here to enter on a discussion on the other views of Maharsi Patanjali on God. My intention is only to point out that, according to patanjali, meditation on the Form should be carried on together Divine Name in order to rix the mind

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Ornament Of A Paramhansa

Swami Shiva Nanda'

Peace is a divine attribute, It is a quality of the soul. It cannot remain with greedy persons, It fills the pure heart It deserts lustful. It runs away from the selfish., It is ornament of a Paramahamsa.

You may be in quite adverse cicumstances. You may be remain in the midst of calamities troubles, tribulations, difficulties and sorrows and yet you may enjoy the inward harmony and peace. if you rest in God by withdrawing the senses, by stilling the mind and by eradicating the impurities of the mides. Lord Jesus was persecuted in a variety of ways. He was put to death on the cross and yet what did he say He said, "O Lord, forgive them. Thep know not, what they are doing" How peaceful he was, even when his life was at stake. He was enjoying the inner peace. No tribulation or Calamity could touch him.

Real deeper peace independent of external condititions. Real abiding peace is stuperdous stillness of the immortal soul with in. If you can rest yourself in this oceon of peace, all the usual noises of the world can hardly affect you, if you enter silence or the wonderful calm of divine peace by silling the bubbling mind and restraining the thoughts and withdrawing out going senses, all distubing noises will die away. Motorears may roll on the street boys may shout at the pitch of their voice railway trains may run in front of your house, several mills may be working in your neighbourhood and yet all these noise will not disturb you even a bit.

Happiness is that internal state perennial joy perfect satisfaction and supreme peace where in there is neither craving nor desire, neither relation nor grief, neither pain or sorrow. The out going mind rest in the ever peaceful soul

There are thirst, hunger and passion in men and animals. You find here water drinks beverages, succulent or juicy fruits

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

food of verius sorts and beautiful ladies. To satisfy the desire of right-seeing you have the mountains, lakes, springs. rivers, oceans, flowers etc. There must be something also that can give Nitya Akhanda Sukha to men, that can satisfy the one common desire in men. That hidden unseen something is God who is an embodiment of Bliss, peace, Prem and knowledge. The indivisible power or intelligence that lies hidden behind these names and forms is God. It is this mighty however that rules our daily life. It is this great power that governs the mind and all internal organs of tho human machine. (Antaryamin or Inner Ruler)

Paramatma or the Supreme Self is an embodiment of peace. The srutis declare — "Ayam Atma Santo." This Atma is peace. Peace is a moving power. It is a living force. It is the only reality. Realise this peace and be free.

Life on this physical plane is a mere 'preparation for the eternal life of everlasting sun-shine and joy which is to come when one gets the knowledge of the self through intense and constant Meditation after purifying the mind this immortal life of Supreme Joy is described as the "Kingdom of Heaven' in the Bible, which is within you, in your own heart.

Pearls From Swami Ram's Mouth.

★ Write ten maunds fire on paper and throw it in cotton. The cotton will no be set on fire. But a very small quantity of realfire will burn up the whole world.

★ Let us try to dive deep in to the acceon of Scienc e and bringout, if possible some pearls which may adorn the world.

★ The Spanish Government of Manilla, used to make some hundred, thousand pesos (spanish Doller) a year out of the revenuwe of licensing cock fights. So are selfish motiees, all sorts of eviis encouraged by the rules of lands.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आश्रम-समाचार

पहली जून से ७ जून तक आश्रम पर साधना सप्ताह सम्पन्न हुआ। इस पवित्र कार्यक्रम में प्रातःकाल ध्यान योग की शिक्षा महामण्डलेश्वर श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज नवाशहर व कठोपनिषद् पर महामण्डलेश्वर श्री कृष्णानन्द जी जगद्गुरु उदासीन आश्रम वालों ने प्रवचन दिये। इसके अतिरिक्त महामण्डलेश्वर श्री स्वामी शान्तानन्द जी, अवधेष मुनि जी स्वामी अर्चकानन्द जी, श्री विश्वनाथ यति महाराज जी व अन्य महापुरुषों ने साधना के उद्देश्य, साधना तथा निष्ठा पर शिक्षायें प्रदत्त कीं। श्रीमती बहन विमला बजाज अलीगढ़ निवासिनी की ओर से श्रीमद्भागवत् का सप्ताह-पाठ एवं कथा वृन्दावन के परम निष्ठा-युक्त साधु स्वभाव परम विद्वान से करायी गयी। साधना-सप्ताह सफलता पूर्वक अत्यन्त उत्साह ७. ६. ८१ को सम्पन्न हुआ। अन्य अनेक विद्वान सन्त व प्रवक्ता इस में पधारे। भागवत् की पूर्णता ८. ६. ८१ को सम्पन्न हुई देश के समस्त भागों से रामप्रेमियों ने बड़ी संख्या में भाग लेकर इसके लाभ को प्राप्त किया।

१३-६-८१ को परमाध्यक्ष, आचार्य स्वामी अमर मुनि जी महाराज ऋषिकेश में स्वामी स्वतन्त्रमुनि जी के उत्सव में भाग लेने गये। यहीं से महाराज जी ने १४-६-८१ को हरिद्वार में परमयोगी राज लाल बाबा के निमित्त होंने वाले स्मृति - दिवस तथा भण्डारे में भाग लिया व सायंकाल राजपुर-आश्रम पर पधारे। २८-६-८१ को पूज्य स्वामी जी पुनः हरिद्वार गये और वहां पर श्री हरि मिलापी जी के वार्षिकोत्सव में भाग लेकर अगले दिन आश्रम पर वापस पधारे।

इस समय आश्रम पर बहन विमला बजाज-अलीगढ़, माता ईश्वर कौर मल्होत्रा-दिल्ली,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री हरिकृष्ण कपूर जी की माता जी, श्री जियालाल जी मल्होत्रा जी की माता, माता रामप्यारी कोचर पटना निवासिनी व श्री सीताराम साहनी सपरिवार नागपुर से पधारे हुए हैं। मेघाच्छादन व वृष्टि के साथ – आश्रम पर वर्तमान में सन्तों के पवित्र वचनामृतों की वृष्टि का सतत प्रवाह प्रवाहित है। शास्त्रों एवं साहित्य में अनेकों रूपकों से वर्णित पावन वर्षा ऋतु के इस मनोहर वातावरण में आश्रम पर ज्ञान – वृष्टि भी विभिन्न वेदान्त के पहलुओं पर हो रही है।

परमाध्यक्ष जी जौलाई मास आश्रम पर ही रहेंगे – केवल १८–७–८१ की सायं दिल्ली जाकर १९–७–८१ को दिल्ली के गुरुपूर्णिमा के पवित्र महोत्सव में भाग लेकर उसी दिन वापस आश्रम पर पधारेंगे।

६–६–८१ को आश्रम की मैनेजिंग व कार्यकारिणी की बैठक व ७–६–८१ को जनरल मिटिंग सम्पन्न हुई।

स्वामी हरिओम् जी के अमूल्य वचनामृत

(१) मूर्ति पूजा इस लिए की जाती है कि जिससे एक मूर्ति का सच्चा प्रेम संसार के मिथ्या मोह को ऐसे भस्म कर दे जैसे अग्नि की एक चिनगारी विशाल वन या नगर को भस्मकर देती है। एक नाम रूप के आधार से सब संसार के नाम रूप अन्ताकरण की भूमि से बाहरहो जाते है।

(२) यदि मानव गर्ज, फर्ज, कर्ज के संकल्प – विकल्प हृदय से निकाल दे तो कल्याण अवश्यम्भावी है।

(३) वह प्राणी धन्य है जिसके कर्म और जन्म दोनों दिव्य हैं वह स्वयं दिव्य ज्योति है। राम का रूप है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूरभाष–८४२२५ राजपुर, ४२६७ देहरादून, तार का पता — (वेदान्त) देहरादून, रजि. नं डी. एन. १५

सूचना

१–मासिक पत्रिका 'राम सन्देश' न मिलने पर अपने समीपस्थ डाकखाने (पत्रालय) से पता करने के पश्चात हमें सूचित करें। क्योंकि कभी-किसी कारणवश "राम सन्देश" १५ ता० तक निकलता है। इसलिए शिकायत पत्र अपनी २ ग्राहक संख्या सहित दिनांक २० के बाद प्रेषित करने का कष्ट करें।

२–आप आश्रम में किसी भी प्रकार का धन भेजते समय यह लिखना न भूलें कि वह धन किस निमित्त भेजा जा रहा है तथा चैक स्वामी रामतीर्थ मिशन के नाम पर ही भेजें।

३–जो पाठक इस पत्रिका के आजीवन सदस्य बनना चाहते हैं वे अपना सदस्यता शुल्क सम्पादक के नाम प्रेषित करें। सदस्यों को आजीवन पुनः बिना किसी शुल्क के यह पत्रिका प्रेषित की जायेगी।

४–'राम सन्देश' के विदेशी ग्राहक अपना वार्षिक शुल्क १५ रु० भेजें। क्योंकि परमाध्यक्ष जी की आज्ञानुसार १२ रु० के स्थान पर ३ रु० वृद्धि का निर्णय लिया गया है।

५–पाठक अपनी अंक सम्बन्धी, प्रतिक्रियाएं अवश्य भेजें, जिससे पत्रिका की उन्नति सम्भव हो सके।

६–अपनी रचनाएं – लेख, कविताएं भेजते समय स्पष्ट शब्दों में पृष्ठ की एक तरफ ही लिखें।

७–हर प्रकार की सामाजिक, शिक्षा सम्बन्धी, आध्यात्मिक या पारस्परिक तुलनात्मक आपकी लिखित वैचारिक भावनाएं सादर आमन्त्रित हैं।

—सम्पादक

बुक पोस्ट

ग्राहक संख्या 534

श्री/श्रीमती गुरुकुल पुस्तकालय

स्थान गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय

डाकखाना

जिला हरिद्वार (उ.प्र.)

पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी

मासिक पत्र—
"राम-सन्देश"
स्वामी रामतीर्थ मिशन
राजपुर, देहरादून (उ०प्र०)
Pin–248009 भारत

स्वामी रामतीर्थ मिशन, राजपुर देहरादून (उ०प्र०) के लिए प्रकाशक स्वामी अमर मुनि द्वारा न्यू आईडियल प्रिन्टिंग हाऊस (कांग्रेस भवन के पास) ४-बी नेशविला रोड, (देहरादून) में, मुद्रित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राम-सन्देश

卐

पुस्तकालय
गुरुकुल काँगड़ी

सितम्बर

१९८१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संकेतिका

विषय	लेखक		पृष्ठ
हमने रची रचना ये सारी	स्वामी राम	—	१
अन्तिम वेदान्त - सम्मेलन		—	२
गुरु की महिमा	श्री राम	—	५
विश्व को वेदान्त की आवश्यकता	ले० राम सन्देश	—	६
चिन्तन	श्री स्वाँमी अमर मुनिजी महाराज		
भगवान श्री कृष्ण	,, ,, ,,	—	१०
निर्वाण दिवस		—	१२
गीत	काव्य पुस्तिका से	—	१३
काल चक्र	श्री चन्द विजयन्त	—	१५
भगवान को क्या अर्पण करना है ?	(आचार्य श्री पाण्डुरंग)	—	१८
दिल्ली में श्री कृष्ण जन्माष्ठमी	भारत बन्धु शर्मा	—	२२
धर्म चक्र	स्वामी विष्णु प्रकाश शास्त्र	—	२३, २४
आश्रम समाचार		—	२५

संस्थापक—
ब्रह्मलीन स्वामी हरिओउम् जी महाराज

संवर्धक—
ब्रह्मलीन स्वामी गोविन्द प्रकाश जी महाराज

व्यवस्थापक—
स्वामी अमर मुनि जी महाराज

सम्पादक—
स्वामी ओमानन्द जी

आजीवन सदस्यता शुल्क—
भारत में — १०० रु०
विदेश में — ५०० रु०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'राष्ट्र के हित के लिए यत्न करना ही विश्व की शक्तियों अर्थात् देवताओं की आराधना है' (स्वामी राम)

वेदान्त, अध्यात्म, संस्कृति, धर्म एवं भक्ति का सजग सन्देशवाहक
तथा स्वामी राम के आदर्शों का एकमात्र लोकप्रिय मासिक—

राम सदेश

वेदोपनिषदां तत्त्वम् सत्यं नित्यं सनातनम् ।।
तत्सर्वं "रामसन्देशे" पत्रेऽस्मिन्नवलोक्यताम् ।।

वर्ष ३० अंक ९	राजपुर, देहरादून, सितम्बर १९८१	वार्षिक भेंट १०) एक प्रति ८५ पैसे

हमने रची रचना ये सारी !

न दुश्मन है कोई अपना, न साजन ही हमारे हैं।
हमारी जाते-मुत्लक से, हुए यह सब पसारे हैं ।।

न हम हैं देह, मन, बुद्धि, नहीं हम जीव नै ईश्वर।
वले इक कुन हमारी से, बने यह रुप सारे हैं ।।

हमारी जाते-नूरानी, रहे इक हाल पर दायम।
कि जिसकी चमक से चमके, यह मेहो-मह सितारे हैं ।।

हर इक हस्ती की है हस्ती, हमारी जात पर कायम।
हमारी नजर पड़ने से, नजर आते नजारे हैं ।।

बरंगे मुख्तलिफ नामो-शकल जो दमक मारे है।
हमारे तूर के शोले के शोले से, उठते यह शरारे हैं ।।

— स्वामी राम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अतिंम वेंदांत-सम्मेलन

रक्तचाप का रोग

इस कुम्भसे स्वामीजी लौटे तो रक्तचाप लेकर लौटे। स्वास्थ्य लाभके लिये पूर्ण विश्राम आवश्यक था। यात्रा, भाषण और सबसे मिलना जुलना सब बन्द कर देना आवश्यक था किंतु जिसे सदा जन–सम्पर्कका अभ्यास रहा हो वह इतने बन्धन में कब तक रह सकता था। स्वामीजी का भक्त–समाज इतना बढ़ गया था कि उसकी उपेक्षा भी कैसे की जा सकती थी। उनकी लोक–प्रियता इतनी बढ़ चलीं थी कि अनेक व्यक्ति उनकी आलोचना करने लगे थे, उन्हें मठाधीश आदि व्यंग्यात्मक नामों से पुकारने लगे थे। विचित्र बात यह थी कि इन कटु आलोचकों में गोस्वामी गणेशदत्त जैसे भी कुछ लोग थे जो स्वामीजी को भली प्रकार जानते और समझते भी थे। स्वामीजी ने जब यह सब सुना तो उन्होंने तत्काल घोषणा कर दी कि अब मैं शीघ्र इस आश्रम को सर्वदा के लिये त्यागब दूंगा। जिसने भी यह वाक्य सुनां उसे बड़ा कष्ट हुआ और सबने स्वामीजी से आग्रह किय कि आप ऐसी प्रतिज्ञा न कीजिए किंतु स्वामीजी अपने निश्चय पर अटल रहे और उन्होंने कहा कि मैं राम बादशाह का पौत्र शिष्य हूँ। मैं उन्हीं का स्वरुप हो गया हूँ और वही होकर दिखा दूँगा। अपने इस संकल्प को उन्होंने अपनी डायरी में इस प्रकार अंकित किया है —

'अब इस दास से यह संसारी विभूति स्वामी छीनना चाहते हैं। तो यह लो, सब कुछ हम आपको देते हैं। हमारे लिये तो रामनाम ही काफी है।"

अस्वस्थता

प्रयाग के कुम्भ के पश्चात् स्वामीजी को इतना रक्त चाप बढ़ गया कि वे बड़ी दुर्बलता का अनुभव करने लगे। उन्होंने इस अवस्था की दशाका विवरण अपनी डायरी में देते हुए लिखा है —

'मेरा शरीर दो साल से अस्वस्थ चल रहा है। मैंने कभी विश्राम नहीं किया। इसके कारण मैं मानसिक और शारीरिक दोनों रूपों में काफी निर्बल हो गया हूँ। मैं चाहता हूँ कि एकान्त में तप और संयम–द्वारा इस दोनों शक्तियों को जुटाऊं। इसका यह तात्पर्य नहीं कि मैं कार्यक्षेत्र से विमुख हो रहा हूँ, किंतु इसका अभिप्राय यह है कि थोड़ा सा एकान्तवास मेरे लिये बहुत आनन्ददायक होगा। मैंने संकेत दिया है इस स्थूल शरीर में भी कुछ पावर (शक्ति)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भरे। मेरा ध्यान-योग तो केवल आप लोगों की सेवा करना है। जो इस शरीर से सेवा हो सकेगी करने का प्रयत्न करूगा। इसलिये मुझे आशा है कि आप लोग मुझे छः मास तक कहीं भी बाहर इधर-उधर आने-जाने का निमन्त्रण नहीं देगे।'

भवितव्यता

किंतु 'होइ है सोइ जो राम रचि राखा।' 'ईश्वरेच्छा बलीयसी।' गोस्वामी तुलसीदास जी ने कहा है —

तुलसी जस भवितव्यता, तैसी मिलै सहाय।
आपु म आवै ताहि पै, ताहि तहाँ लै जाय॥

सन् १९५५ में पड़ने वाली दीवाली के अवसर पर दिल्ली के सत्संगी वन्धुओं ने बेदन्त सम्मेवेलन करने का निश्चय किया और स्वामीजी को भी स्वभावय: उसके लिये निमन्त्रण दिया। स्वामीजी ने अपनी अस्वस्थता का कारण बताते हुए अपनी असमर्थता व्यक्त कि, किन्तु दवीन साहव ने अत्यन्त श्रद्धापूर्ण आग्रह के साथ लिखा कि यदि आप नहीं आयेगे तो सम्मेलन सफल नहीं होगा। हम लोग कुछ नहीं कर सकेंगे। आपके बिना हम अपने को निर्जीवसा समझसे हैं। यह पत्र पाना था कि स्वामी जी ने अपने शरीर की कोई चिन्ता न करते हुए तत्काल गाड़ी पकड़ी और दिल्ली चले गये।

अमंगल अपशकुन

जिस समय सभामंच बानया जा रहा था उसी समय एक अमंगल घटना हो गई। एक सज्जन उस सभा में टाँगने के लिए स्वामी राम का चित्र लिये आ रहे थे कि नीचे सड़क पर गिर पड़ा। स्वामीजी को इस धटना से बड़ा कष्ट और अशकुन प्रतीत हुआ। सम्मेलन प्रारम्भ हुआ और बड़ी धूमधाम से यथा पूर्व सम्पन्न भी हुआ। उस सम्मेलन में तृतीय दिवस जब स्वामी जी भाषण के लिये मंच पर बैठे तो स्वामी राम का नाम लेते ही उनकी आँखो से आँसू टपक पड़े और कहने लगे —

'स्वामी राम तो केवल ३३ वें वर्ष में ही ब्रह्मलीन हो गये थे, मैं उनसे १० वर्ष अधिक जी गया हूँ। मेरी तो ४२ वर्ष की अवस्था हो गई है।'

जनता के आग्रह से सम्मेलन एक दिन और चला। जब अन्तिम दिन बिजली वाले अपने तार समेटने लगे उस समय अचानक शामिया ा आग में लग गयी और इस अमंगल अपशकुन को देखकर सभी का हृदय धड़क उठा।

मिशन का विधान

सम्मेलन समाप्त हो चुकने पर दिल्ली के सभी भक्तों ने निश्चय किया कि दिल्ली का मिशन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सहकारी विधान के अनुसार अधिकृत करा लिया जाय। जब यह प्रस्ताव स्वामी जी महाराज के आगे प्रस्तुत किया गया तो उन्होंने कहा कि विधान तो आप लोग अवश्य बनाइए किंतु यह शरीर सी काफी भी बन्धन में हीं नहीं रहा है। इस प्रसगं में स्वामी जी ने स्व मी रामके ब्रह्मलीन होने के विवरण का उल्लेख करते हुए कहा कि स्वामी रामने 'ॐ ॐ' करते जब जल-समाधि ले ली तो थोड़ी देर पश्चात उनका शरीर एक चट्टान के साथ समाधि लगाये हुए पाया गया। टेहरी-नरेश को जब यह समाचार मिला तो उन्होंने एक कांच के टांके में उनका पार्थिय अवशेष प्रतिष्ठित करके उसे गंगा जी में छोड़ दिया। वक्स का छोड़ना था कि वह बड़े धमाके के साथ फट गया। जो शहंशाह राम अपने जीवन में किसी के बन्धन में नहीं रहे, उनका निर्जीव शरीर भला किसी के बन्धन में कैसे रहता।

रोहतक के सम्मेलन में

दिल्ली का सम्मेलन समाप्त करके सन्त गुरुचरणदासजी के आग्रह पर वेदान्त सम्मेलन में सम्मिलित होने के लिए वे रोहतक चले गए। इस समय तक स्वामी गोविन्द प्रकाश जी से उनकी बहुत घनिष्ठता बढ़ चुकी थी और वे भी सदा साथ ही रहते थे स्वामी गोविन्द प्रकाश जी से उनका स्नेह यहां तक बढ़ा कि उन्होंने अपने राजपुर वाले आश्रम का सारा भार ही उनपर छोड़ दिया और कहा कि अब आप ही इस आश्रम की व्यवस्था कीजिएगा।

पर यह कौन जानता था कि यह वेदान्त सम्मेलन स्वामीजी का अन्तिम सम्मेलन होगा।

ब्रह्मनिर्वाण

स्वामीजी स्वयं विश्राम चाहते थे और उनका शरीर भी विश्राम चाहता था किन्तु उनके भक्त लोग उन्हें विश्राम नहीं देना चाहते थे। उनके आग्रह करने पर भी उन्हें इधर-उधर से निमन्त्रण देते रहते रहते थे और स्वामीजी भी संकोची स्वभाव के कारण किसीके आग्रह को टालते नहीं थे। फलतः बहुत इधर-उधर जाने से उनका स्वास्थ्य गिर गया और बहुत बोलते रहने से उनका कंठ धरधराने लगा। कंठ के इस कष्ट के कारण उन्हों बोलने में कठिनाई होने लगी सरदार शेर सिंह आदि अनेक सज्जनों ने आग्रह किया कि आप गले (टोंसिल) का औपरेशन करा लीजिए। कुछ सज्जनों ने इसका विरोध भी किया किन्तु अन्त में सबका आग्रह यानकर स्वामीजी ने औपरेशन कराना ही निश्चय किया।

अन्तिम पत्र

६ दिसम्बर सन् १९५५ की रात को स्वामीजी ने स्वयं अपने हाथ से देहरादून के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरु की महिमा

जब तक सूरज चाँद रहेगा, अमर बना गुरु धाम रहेगा।
मानवता का नाम रहेगा, कायम हिन्दुस्तान रहेगा ॥
मैं रौज चढ़ाऊँ चरणों में, अपने आँसू के फूल।
इस दीन हीन अपराधी को, गुरु देव न जाना भूल ॥
मैं जग की बीती बातों को, अक्सर ही भूल नही पाता।
बढ़ती है नदी कामना की, बहता हूँ कूल नही पाता ॥
मेरी बलखाती नैया को, हे गुरु उसे पार लगा देना।
मेरे सुनसान मरुस्थल में, श्रद्धा के फूल खिला देना ॥
बच्चों सी मुस्कान हमें दो, आतम ज्योति का ज्ञान हमें दो।
फिर न कभीं कोई इच्छा हो, ऐसा ही वरदान हमें दो ॥
तुम्ही से चमक है राशि को, तुम्ही से रोशनी रवि कीं।
तुम्ही से व्यक्त है चेतन, तुम्ही से प्रेरणा कवि को ॥
तुम्ही शीर्षक हो ग्रन्थों के, तुम्ही से हर कहानी है।
तेरे उपकार के बदले, मेरे आँखों में पानी हैं ॥
कभी दुनियाँ की हलचल में मुझे अभिमान हो जाये।
आप के स्नेह बचनों का कभी अपमान हो जाये ॥
तो अपना ही समझकर के गल्तियों को भुला देना।
भटक जायें अधेरे में तो हमको पथ दिखा देना ॥
बस इतनी साथ इस तन की, कि कोई काम आ जाये।
हृदय की इस अयोध्या में कि चलकर राम आ जावे ॥
ये जग अम्वर काँटो का, कहीं कुछ फूल खिलते है।
चुभन को झेलते है जो उन्हे गुरु देव मिलते है।
हमेशा याद आयेगी, सुनी जो ज्ञान की बाते।
कोई सूरज उगायेगी, हमारी दुःख भरी रातें ॥
तुम्ही हो चाँद इस नभ के, और हम मन्द तारे हैं।
अशरण है शरण लीजै जो कुछ है तुम्हारे है ॥

लेखक – श्री राम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्व को वेदान्त की आवश्यकता

ले० राम सन्देश

यदि वेदान्त के व्यापक सिद्धान्त की प्रतिष्ठा प्रत्येक हृदय–मन्दिर में हो जावे, तो राजनीति की आवश्यकता ही न रहे। जब तक समाज में हिंसा, असत्य, चोरी, व्यभिचार, सग्रहवृति, अपवित्रता, स्वैर – विहार, अज्ञान और नास्तिकता का अस्तित्व विद्यमान है तभी तक सरकार की आवश्यकता है, अर्थात् जब तक पृथ्वी पर, अज्ञान जीवित है तव तक सरकार भी आवश्यक है। यदि वेदान्त के दिव्य ज्ञान का समुचित प्रचार किया जाये, आत्म–ज्ञान की धारणा के लिये उपायभूत यम–नियम का सार्वभौम पालन–अनि–वार्य बना दिया जाये, तो राजनीति निस्सन्देह अनावश्यक हो जायेगी। वेदान्त ऐसी ही परमात्मनिष्ठ समाज रचना का पक्षपात करता है। कम से कम राजनीतिक क्षेत्र में आगे बढ़ने की महत्वकांक्षा रखने वाले मनुष्य को तो सदाचारी और वेदान्ती होना ही चाहिए। आज राजनीतिक विद्यापीठ से ही जीवन का सर्वाङ्गीण आविष्कार किया जा रहा है इसलिए भी राज–नीति में नितान्त दृष्टि शुद्धि की आवश्यकता है। वेदान्त मूलक सर्वात्म–भाव की अनुभूति के बिना राज नेता संसार में शान्ति का सन्देश किस प्रकार फैला सकते हैं ? राजनीति की बुनियाद है वेदान्त।

इस प्रकार विज्ञान को भी यदि वेदान्त के अधीन किया न जायेगा तो स्वार्थी राज पुरुषों के हाथ में पडकर विज्ञान निस्संदेशह भस्मासुर का रूप धारण कर लेगा और शिवतत्व के संहार की चेष्टा करेगा। वेदान्त और विज्ञान में कोई वैरभाव नहीं। दोनों एक दूसरे के पोषक हैं। दोनों सत्य के ही अनुसन्धता हैं। फिर भी वेदान्त ही विज्ञान का समुचित उपयोग कर सकता है। वेदान्ती की बुद्धि यदि वह सच्चा वेदान्ती होगा, तो सात्विक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और सर्वोदय की महत्वकांक्षा से भरपूर होगी। वेदान्त विवेक प्रिय है। विज्ञान भी विवेकप्रिय ही होगा यह कहना खतरनाक है। अतः वेदान्त ही विज्ञान का नियामक और प्रशासक होना चाहिए। वेदान्त का अनुशरण करने वाला विज्ञान ही विश्व शान्ति का प्रवर्तक होगा। वेदांत विरुद्ध विज्ञान का व्यवहार विनाशकारी ही होगा। और शिक्षा–पद्धति तो समाज मानस की निर्मात्री हैं। जनगण को जिस प्रकार बनाना हो, उसी प्रकार की शिक्षा–पद्धति तो समाज मानस की निर्मात्री हैं जन गण को जिस प्रकार बनाना हो उसी प्रकार की शिक्षा – पद्धति का प्रवर्तन करना चाहिए। शिक्षा या तो जीवन को उर्ध्वगामी बनाती है या अधोगामी। अतः शिक्षा पद्धति की ओर हमारा सर्वाधिक ध्यान होना चाहिए। शिक्षा के मूलाधार में ही वेदान्त का सिद्धान्त होना चाहिए। विद्यार्थी – जीवन वेदान्त सिद्धान्त के अनुभव के लिए जितना उपयुक्त है, उतना जीवन का अन्य कोई अंश नही। मानव – बालक जन्मकाल से लेकर किशोर अवस्था तक सच्चा अंतर – राष्ट्रीय – बालक होता है। बालकों के जीवन विधान में कोई राष्ट्र नहीं, कोई धर्म नहीं, कोई संस्कृति नहीं, कोई कृतिम कोई कृत्रिम भेद नहीं। जब वह बड़ा हो जाता है तभी समग्र विकृतियां उसमें प्रवेश करती हैं एतदर्थ बाल्यावस्था ही वेदान्त के लिए सच्ची स्वाभाविक अवस्था है। अतः विश्व के सभी देशों के बालकों को बचपन में देश काल वस्तु से अपरिछिन्न, सर्वब्यापी मानवता का अर्थात वेदान्त का उपदेश मिलना चाहिए। अतः शिक्षा प्रणाली तो सर्व प्रथम है। मानव जाति का बाल्य-काल ही वेदान्त ज्ञान के संस्कार आरोपण का काल है। यदि इस समय में बीजारोपण किया जाये, तो भविष्य में वेदान्त के सर्वात्मा-भाव से परिपूर्ण संस्कृति ही अस्तित्व धारण करती है।

वेदान्त का सन्देश :– मानव शब्द कोष में तीन धातुएं मुख्य हैं– 'ज्ञ', 'कृ', और 'भज'। 'ज्ञ' का अर्थ है जानना ; 'कृ' का अर्थ है करना और 'भज'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का अर्थ है सेवा करना। इन्हीं तीन धातुओ के अन्तर्गत मानव जीवन का रहस्य समाप्त होता है।

भगवान वेद भी इन तीन धातुओं का अर्थ यथार्थ वताते हैं। मानव को बहुत कुछ जानना है, जानकर कुछ करना भी है और इस प्रकार करना है कि जिससे वह 'भज' धातु के अर्थ में हो।

तो क्या मानव जानता नही ? क्या वह कुछ करता नही ? क्या वह सेवा करता नही ? मनुष्य बहुत कुछ जानता है, बहुत कुछ करता हैं। सेवा भी वह बहुत करता है। मानव स्वभाव से ही इन तीन धातुओं के वस में है। फिर भी कहना पड़ता है कि मानव सामान्यतया जो कुछ भी जानता है, मानव अज्ञान को जानता है, अकरणीय करता है, माया की सेवा करता है।

वेदान्त कहता है – हे अमृत पुत्र ! तुम वही जानो जो जानने योग्य हो। वही करो जो कर्त्तव्य है। उसी की सेवा करो जो सेव्य है। हे मानव ! उस एक आत्म को ही जानो। उसे जानते ही तुम मृत्यु के उस पार पहुंच जाओगे। मृत्यु का अतिक्रमण कर जाओगे। उसके विज्ञान से ही धीर पुरुष आनन्द स्वरुप आत्मा का दर्शन करते हैं। वह अणु से भी अणु परमाणु है और महान से महान है। आत्म–ज्ञान जीवन साफल्य का कारण हैं। हे अमृत पुत्र : तुम आत्मा को जानो। तुम्हारी आत्मा सच्चिदानन्द है। सत् होंने के कारण तुम अमर हो, अजर हो, त्रिकालावाधित हो। तुम्हारा स्वरुप काल के पराक्रम से अस्पष्ट है, सृष्टि के आदि तुम हो, मध्य तुम हो, अन्त तुम हो और अन्त के साक्षी भी तुम्ही हो। गर्जना करो कि तुम मृत्यु के भी मृत्यु हो। मृत्यु तो तुम्हारी चटनी है, तुम मृत्यु जाय हो। क्यों कम्पित हो रहे हो ? तुम्हारा भय निर्मूल हैं। भय को भी भयभीत करने वाला है तुम्हारा स्वरुप मानव ! तुम अमृतसागर के बिन्दु हो, सिन्धु तुम्हारा स्वरुप है। तुम चित्र और ज्ञान स्वरुप हो, सर्व प्रकाशक हो, अन्य सब कुछ प्रकाश्य हैं, तुम स्वयं प्रकाश हो। तुम्हारी ज्योति से सूर्य, चन्द्र नक्षत्रगण विद्यु त ज्तोतिर्मय हैं। अन्धकार तुम्हारे नाम से ही दूर भागता है। तुम हीसर्व-नाशक हो। तुम्ही सबके जीवन स्रोत हो। तुम्हारी चमक से ही सत्र चमक रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"चिन्तन"

श्री स्वामी अमरमुनि जी, 'व्याकरणाचार्य' एम. ए.

प्रत्येक प्राणी खोज में लीन है। मन में अव्यक्त कामना है, जो हर समय अन्त: प्रेरणा देती रहती है। अव्यक्त कामना जन्य यह अन्त: प्रेरणा जीवन में हर समय अशान्ति और गतिशीलता बनाये रखती है। हम सभी उस अज्ञात की पूर्ति के निमित्त भटकते रहते हैं। वस्तुत: इससे मानव ही नही; प्राणी मात्र अपितु चिज्जड़ सभी जगत अशान्त और गतिशील है। यह अशान्ति, गतिशीलता चेतन का ही नही, अचेतन का भी स्वभाव है। सर्वत्र परिवर्तन का साम्राज्य व्याप्त है, कुछ विचारक तो इससे भ्रम में पड़कर परिवर्तन को ही वस्तुसत्य मानते हैं। न जाने, सभी किस रूप की प्राप्ति के निमित्त व्याकुल हैं। गङ्गा की धारा प्रबल वेग से दौड़ लगाती है। रास्ते में आने वाले पहाड़ों, पत्थरों और पेड़ों को तोड़ती फोड़ती चली जा रही है। यह सृजन है या विनाश? दौड़ का अन्त कहाँ होगा... सागर में, नहीं; वहां भी अशान्ति है। भयावनी लहरें, तूफान कभी-कभी तो अत्यन्त विनाशकारी रूप में आते हैं। किसी अन्तर्वेदना से सागर भी जल रहा है, वहभी शांत नहीं। वायु, सूर्य, चन्द्र, सितारे सभी चल रहे हैं। यह हमारी भूमि जिसे स्थिरा अचला कहते हैं। सुनते हैं; वह भी गति में है, एक नहीं अनेक प्रकार की गति में। विज्ञानवेत्ता तो परमाणु को भी गतिशील बताते हैं। वह तो यहां तक कहते हैं कि परमाणु के भी भाग होते हैं, उन भागों में दृश्य जगत की अपेक्षा कहीं अधिक गति होती है, और परिवर्तन की प्रवृत्ति। वस्तु और अवस्तु जगत के परस्पर टकराने से क्षण के अल्पतम भाग में अकल्पित, अज्ञेयरूप, और उससे कालान्तर में शक्ति तत्त्व की रचना, यह सभी परिवर्तन के सजीव रूप हैं।

इस प्रकार से गतिरूप, परिवर्तनशील यह जगत् जगत् में चेतन तत्त्व, और उसमें भी मानव, क्या कभी शान्ति प्राप्त कर सकता है? गति जीवन है, शान्ति मृत्यु का नाम है, अशांति अथवा कामना के उचित उपभोग में ही जीवन का साफल्य है ऐसा भीकुछ लोग कहते हैं ठीक है जीवन में कामना अवश्यम्भावी है— और उसकी पूर्ति भी आवश्यक है। जीवन का क्षण भर भी बिना कामना नहीं रह सकता. मन का पूर्णानिरोध सम्भव नही। रजोगुण से कामना की उत्पत्ति होती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"काम एष क्रोध एष रजोगुणसमुद्भव:।"

यह भगवान ने गीता में कहा है। रजोगुण के परिणाम ही दु:ख और क्रिया हैं। रजोगुण के बिना संसार को स्थिति ही नही, सत्व, रज, तम, इन तीनों गुणों से जगत् की रचना हुई है। अत: यह संसार के गुण मूल तत्व हैं, ऐसी अवस्था में पूर्ण मनोनिरोध सम्भव नहीं। पूर्ण मनोनिरोध कीं अवस्था में जीवन ही नहीं रह सकता। जिस कामना से मनोनिरोध होगा, निरोधावस्था के समीप्य से ही उसकी प्राप्ति हो जायेगी। कामना की प्राप्ति ही नहीं, मानव कामना के स्वरूप में भी अपने को देख सकता है। कामना की पूर्ति होते ही नवींन कामना उत्पन्न हो जाती है, अर्थशास्त्र के अनुसार तो एक कामना ही पूर्ति दो नवीन कामनाओं को जन्म देती है,अत: कामना का पूर्ण अभाव जीवन में सम्भव नहीं। गोपालोत्तरताप्युपनिषद् में कहा है –

"योह वै कामेन कामान्कामयते स कामी भवति।

यो ह वै त्वकामेन कामान्कामयते सोऽकामी भवति।

जो व्यक्ति राग से कामना करता है, वह कामी होता है। कामी व्यक्ति के कार्य सकाम होने से 'सकामकृत' कहलाते है। सकामकृत कार्य बन्धन

(शेष पेज १४ पर)

भगवान श्री कृष्ण

भगवान श्री कृष्ण का अविर्भाव कंस के महल की जेल में हुआ। भगवान श्रीं के जन्म के समय मथुरा नगरी में आतङ्क का राज्य था यदु वंश में मयंकर फूट थी, एकता का अभाव था-भाई,भाई का शत्रु बना था - निशंस कंस ने अपने पिता को जेल में डाल रखा था - अपने श्वशुर जरासिंघ की सहायता से विरोधी यदुवंशियों को चून चून कर मार रहा था - जिसने पिता को जेल में डाल रखा हो अपने वंश का विनाश कर रहा हो। ऐसे व्यक्ति के चरित्र के विषय में क्या कहा जाये। मिथ्या अभिमान में वह वीर था। वस्तुत: भीरु, मौत के धय से भोजन भी खाये नहीं बनता था मौत के भय से काफी बहिन को मारने की भी चेष्टा की थीं। बहिन के जन्म लेते बालकों का नृशंसता से संहार कर चुका था। जिस व्यक्ति, मिथ्यारुप से वीर कहलाता है तो उसका स्वरुप अत्यन्त भयंकर होता है। वह प्राण रक्षा निमित नीच से नीच कार्य करने से भी नहीं चूकता। आज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मथुरा ऐसे मिथ्यामेमानी नृशंश शासक के अत्याचारों के नीचे पिस रही थीं। विरोधी राष्ट्र जरासिंघ इत्यादि यदु वंश के विनाश से प्रसन्न थे देश में एक महानवंश विनाश के कगार पर था। मङ्गल समय समय आया रात भयंकर थी। किन्तु उसने अपने में पवित्र प्रकाश को छिपा रखा था। जिस प्रकाशो को प्रतिक्षा में मथुरा व्याकुल थी यदुवंश चिरकाल से प्रतीक्षा में था। वह दिव्य प्रकाश आया किन्तु किसी को पता न चला वह चला गया। एक अज्ञात स्थान पर- गोकुल में जहां परस्पर प्यार था स्नेह था–एक अवथा एक ही भावना थी- हम अवेद नही एक हैं। आत्मा एक हे- भेद शरीरों को लेकर–सभी गोपों "सहानाववतु" के वेद भगवान के संदेश के मूर्तिमान रुप थी- फिर भगवान क्यों न वहां जाये - कोई पिता अपने सन्तान को लड़ता देखकर कभी प्रसन्न हो स ता, उसकी आत्मा पुत्रों को परस्पर लड़ते देखकर रो उठती है यदि पूछना है तो दिल्ली के सम्राट शाहजहां से पूछो-कंस का भाई स्वयं जिस समय मृत्यु शय्या पर था-तो प्रभो को कह रहा था - बेटों परस्पर लड़ना नहीं यह साम्राज्य रेत की दीवारें हैं- अतः भगवान गये- वहां गये जहां भाई भाई से प्यार करता था। भाई भाई को आतमरुप से देखता था। क्यों न भगवान कहां जाये। पिता ऐसी संतान के विना रह नहीं सकता उसका हृदय बेटों से व्याकुल हो उठता है भगवान प्रकट हुए। एक क्षण भी नहीं रुके, चले गये। महलों की नगरी को छोड़कर, बागीचों की नगरी को छोड़कर। सोने के एश्वर्य को छोड़कर, कहां वन में-महावन में, बसे छोटे से गोकुल में। गौवों के बादे में। अहीरों में गोपी में जहां मथुरा के दिव्य भोगों का निरन्तर अभाव था - था क्या - पवित्र प्यार-प्यार जीवन को सौन्दर्य प्रदान करता है प्यारी भरे चेहरे दिखने को भगवान भी व्याकुल है। तभी तभी भक्तों के साथ छोड़ते हैं।

मथुरा क्यों न छोड़ते - बेटों का लड़कर मरते देखकर पिता का दम घुटता है - भगवान हमारे पिता हैं- कहते भी हम हैं- त्वमेव माता, पिता त्वमेव- मथुरा में तो मृत्यु का नाच था द्वेष ईषा का राज्य था: पिता उग्रसैन जेल में जीवन के दिन गिन रहा था- चाचा देवद जी न जाने कहां था। जिसकी बेटी और माता जेल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ॐ

निर्माण दिवस

समस्त राम प्रेमियों को सूचित किया जाता हैं कि ब्रह्मलीन परम पूज्य परम पूज्य श्री स्वामी गोविन्द प्रकाश जी महाराज का निर्माण दिवस (श्रद्धाँजली समारोह) परमाध्यक्ष आचार्य श्री स्वामी अमरमुति जी महाराज के तत्वावधान में दि० २०–९–८१ (रविवार) को राजपुर आश्रम पर मनाया जाएगा।

अतः इस अवसर पर आप सभी अपनी भावमयी श्रद्धाँजली समर्पित करें।

कार्य-क्रम

सम्पूर्ण रामायण पाठ	—	१९–९–८१ प्रातः	१० बजे से आरम्भ
गीता पाठ भोग	—	२०–९–८१ प्रातः	१० बजे
हवन पूर्णाहुति	—	—	१०-३० बजे
श्रद्धांजली प्रवचन	—	—	१०-३० से १ बजे तक

तत्पश्चात्—भण्डारा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गीत

चलो साथियो चलो, जिन्दगी चलती रहने दो ।
जिन्दगी चलती रहना है, जिन्दगी चलती रहने दो ।।

स्नेह सिक्त या रिक्त,
प्राण दीपक की बाती हैं ।
जिससे भली या बुरी,
भाग्य रेखा बट जाती है ।।
क्षीण प्रखर जैसी जलती है,
जलती रहने दो ।
जिन्दगी चलती रहने दो ।।

माना यौवन, तन उपवन-
का फूल है
झुका बुढ़ापा इसी बाग-
का शूल है ।।
मस्ती की शबनम दोनों पर,
ढलती रहने दो ।
जिन्दगी चलती रहने दो

अरुणिम ऊषा स्वर्णिम,
संध्या के तले ।
युग से, उर-निधि-ज्वार
उसासों में गले ।।
किन्तु लहर आशा की,
प्रतिपल पलती रहने दो ।
जिन्दगी चलती रहने दो ।।

"काव्य पुस्तिका से"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के कारण होते हैं। सकामकृतों के फल प्राणी को भोगने पड़ते हैं वस्तुत: यही कृत जन्म–मरण के कारण होते हैं। मुण्डकोपनिषद् के तृतीय मुण्डक के द्वितीय खण्ड में कहा है—

"कामान्य: कामयते मन्यमान:
सकामभिर्जायते तत्र तत्र।
पर्याप्तकामस्य कृतात्मनस्त्विहैव
सर्वे प्रविलीयन्ते कामा: ॥"

इस मन्त्र से यह स्पष्ट है कि कामना के अनुसार ही प्राणी को जन्म प्राप्त होता है।पूर्णकाम आत्मातत्ववेत्ता की सभी कामनाएं समाप्त हो जाती हैं। आत्मा तत्ववेत्ता ही पर्याप्त काम होता हैं। अत: आत्म तत्ववेत्ता गति शून्य होकर अपने स्वरूप में स्थित हो जाता है। इसीं प्रकार रागयुक्त कामना से प्राणी कामी कहलाता है। जो प्राणी राग से रहित होकर कामना करता है, वह अकामीं कहलाता है, वस्तुत: मुण्डक का पर्याप्तकाम वही है इस प्रकार पर्याप्तकाम का भी जब तक शरीर होता है, उस में जीवन होता है, रागवत कामना से सम्बन्ध न रहते हुए भी एक प्रकार के काम से बना रहता है, ज्ञानी भी निष्क्रिय नहीं होता।

अब हमें उस अज्ञात कामना के विषय में विचार करना है, जो सभी चिज्जड़ को गतिशील बनाये हैं, वह उद्देश्य जो सभी का लक्ष्य है। वह लक्ष्य जिसकी प्राप्ति के निमित सारा जगत गतिशील है और जो सभी समान लक्ष्य है। भारतीय संस्कृति में चिज्जड़ का उद्देश्य एक है, इनमें परस्पर सहयोग है, न कि कलह, संङ्घर्ष। सभी उस परम स्वरूप की प्राप्ति के निमित्त सचेष्ट हैं। कामनायें अनन्त है, प्रत्येक कामना का विषय निश्चित होता है। भोजन की कामना की पूर्ति भोजन की प्राप्ति से हो जाती है। धन कामना की पूर्ति धन प्राप्ति से, पुत्र कामना की पुत्र प्राप्ति से जाया (स्त्री) कामना की जाया प्राप्ति से, इस प्रकार इन कामनाओं की पूर्ति हो जाती है, किन्तु अशान्ति बनी रहती है। कामनाओं का प्रवाह प्रबल बेग से चलता रहता है। पुत्र कामना, धन कामना, जाया कामना क्या यह भौतिक कामनायें है। क्या इनकी पूर्ति से हमें पूर्ण शान्ति प्राप्त हो जायगी? नहीं, कदापि नहीं। यह कामनायें तो वस्तुत: एक अज्ञात कामना का आभास है, छाया है। हम इस छाया को सत्य मानकर उसके पीछे दौड़ते हैं–यह तो मृगमरीचिका है। इनके पीछे दौड़ना तो विनाश है, अध:पतन है, धोखा है, भूल है,। जीवन के विकास का उद्देश्य यह नही, कदापि नही। इस विषय में ईशावास्योनिषद् में कहा है –

असुर्या नाम ते लोका अन्धेन तमसावृता:
ताँस्ते प्रेत्याभिगच्छन्ति ये के चात्महनो जना:

जो प्राणी आत्मात्व से विमुख होते हैं, जो स्वस्वरूप का ज्ञान प्राप्त नहीं करते, ऐसे प्राणीं

कर्मश:

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काल–चक्र

श्रीचन्द्र विजयन्त

ऐ ! आबे रौदे गंगा, वो दिन है याद तुझको,
उतरा तेरे किनारे— जब कारवां हमारा,

राष्ट्र-भावना से ओतप्रोत शायरों के शायर इकबाज अपनी अभिव्यक्ति को प्रश्नात्मक बनाकर भागीरथी को ही स्मरण दिलाने की कोशिश करते हैं अपने उक्त इस उद्धरण में ! यह वही कारवाँ है जिसके पीछे भारतीय संस्कृति का प्रबलतम गढ़ सुरक्षित है, जबकि रोम, यूनान, मेसोपोटामिया आदि की सभ्यताए कभी की धराशायी हो चुकी हैं । हम हिन्दू यद्यपि लगभग दो सहस्र वर्षों तक विभिन्न जातियों के पराधीन रहे किन्तु हमारी परम्परायें आज भी अपनी पूर्वावस्था में समृद्ध हैं । इसका कारण क्या ? इकबाल भी यही कह कर चुप हो गये बस :

कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी,
सदियों रहा है दुश्मन–दौरे जमां हमारा

सदियों तक जमाने का एक दौर हमारे विरुद्ध रहा है, तनिक भी सन्देह नहीं है इसमें, किन्तु हमारे हिन्दू–समाज का जो अटूट संगठन था, उसने अपने आपको बिखरने नही दिया इसमें सबसे महत्वपूर्ण भूमिका हिन्दू धर्म के अन्तर्गत आने वाली विभिन्न जातियों ने निभायी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आज हमारे मुंह पर एक तमाचा लगा है—सर्व विदित है दक्षिण भारत के एक गांव में एक हजार से भी अधिक लोगों ने जो हरिजन हैं- सामूहिक धर्म परिवर्तन किया है ! सामूहिक धर्म परिवर्तन किया है ! धर्म परिवर्तन से मन परिवर्तन नहीं हुआ करता चाहे इस घटना के पीछे विदेशी शक्तियां हों अथवा यह उनमें प्रति हमारे द्वारा दी गयी प्रताडनाओं का कटुफल हो अथवा भ्रष्ट राजनीतिज्ञों को चाहे गन्दी नीतियों का दुष्परिणाम हो- यह जो कुछ भी हो- यह बड़ा विषैला एक कुचक्र है देश की धार्मिक संस्थायें तुरन्त उद्बोधित होकर इसका प्रतिकार करें एवं साथ ही वे सारे सवर्ण पश्चात्ताप कर अपने उन हरिजन बन्धुओं से क्षमा याचना करें— जिन्होंने उनको एक लम्बे समय से घृणित समझ अपने हीं घर में दूर रखा। उसका प्रतिफल जो हमारे सामने आया निःसन्देस जकझोर डाला उसने समूचे देश को।

पत्थरों में भगवान तो हम ने देख लिया किन्तु इन्सान में इन्सान हम कब देखेंगें। अब हमें अवश्य इन्सान में इन्सान देखना होगा अन्यथा रोम यूनान आदि की भांति हम भी अपने स्वत्व को खो बैठेगें। धर्म परिवर्तन की घटना इस लिए नहीं अखरती कि उससे एक वर्ग विशेष की संया बढ़ती है बल्कि इससे देश की अक्षुण्ण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अखण्डता में भी विष घुलता है— यही सिलसिला एक दिन हमें गृह युद्ध के कागार पर भी ले जाकर खड़ा कर सकता है। जिस देश की नैतिक शक्ति नष्ट होने लगती है— उसकी रक्षा के लिये लोहे से बने हथियार मात्र एक ढेर बनकर रह जाते हैं ! आज हमको जो भी सम्मान प्राप्त है वह हमारी प्राचीनता के कारण है, नवीनता के तौर पर तो हमने कुछ भी हासिल नहीं किया। यदि हम अपने ऋषियों-मुनियों एवं त्यागी पुरुषों की प्रदत्त संस्कृति को विकसित नहीं कर सकते तो हमें उसका ह्रास भी नहीं होने देना चाहिए और यदि ऐसा होता है तो यह हमारी स्वतन्त्रता के लिए घातक है साथ ही नपुंसकता का द्योतक भी।

जब भी इस प्रकार की घटनाएं होती हैं उनके पीछे अक्सर विदेशी ताकत होती है। क्योंकि धार्मिक दृष्टि कोण से ही विदेशियों ने कई बार हमारा उल्लू बनाकर अपना उल्लू सीधा किया है।

यह भारत मां की आवाज है आज उन सबके लिए जो अपने को धर्मों के ठेकेदार समझते हैं- साथ ही युवा सन्यासियो के सम्मुख एक ललकार है यह! यदि इसका विरोध न किया गया तो बड़ा घातक होगा इसका प्रतिफल!

मजहब नहीं सिखता, आपस में बैर रखना,
हिन्दी है हम सब, वतन हिन्दोस्तां हमारा। 'इक बाल'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भगवान को क्या अर्पण करना है ?

(वद्दद्दर आचार्य श्री पाण्डुरंग आठुवले, शास्त्री)

प्रभो ! मैं आपको क्या दूं ?

भगवान कहते हैं - निष्काम प्रेमी भक्त, पुष्प फल, जल जो कुछ भी प्रेम से अर्पण करता है उसे मैं प्रेम से ग्रहण करता हूं ।

पत्र :- तू प्रेम और भक्तिपूर्ण हृदय से एक पत्ता ही अर्पण कर दे । तू क्या लाया है, इस ओर मेरा ध्यान नहीं होता । मैं केवल यह देखता हूं कि तू हृदय लेकर आया है या नहीं । सचमुच चाहे एक तुलसी दल अथवा बिल्व पत्र चढ़ाओ किन्तु हृदय के चाव और प्रेम से चढ़ाओ ।

पत्र का दूसरा अर्थ है चिट्ठी (खत) । हमें भगवान को प्रतिदिन पत्र लिखना चाहिए जिसमें इतना ही लिखा हो- भगवन । मैं प्रसन्न हूं । आप मेरी चिन्ता न करें । अपनी महिमा को संभाल रखिये ।

यह पत्र हृदय में लिखा होना चाहिए । इस प्रकार के ही पत्र का वास्तविक मूल्य हैं । हम प्रतिदिन बिना हृदय के पत्र (मांग-पत्र) लिखने में तो सिद्ध कौशल हैं और उसमें एक लम्बी सूची दे देते हैं जैसे-प्रभो । हमें अमुक पदार्थ दे दें, अथवा हमारी अमुक कामना पूर्ण हो । हमने कदाचित एक बार भी ऐसा पत्र न लिखा होगा कि भगवान मेरी चिन्ता न करें । मैं सुखी हूं । वैसे इस प्रकार का पत्र लिखना बड़ा कठिन काम है । दुःख रूप जगत में रहते हुए । 'मैं खुसी हूं' । लिखना एक सामान्य बात नहीं है इस पत्र कि तुलना में मांग-पत्र की क्या महत्ता होगी? ऐसा पत्र तभी लिखा जा सकता है जब हमारे दृष्टि कोण में परिवर्तन हो जाये ।

पत्र में दूसरी बात प्रायः यह लिखी जाती है कि मैं क्या करता हूं । भगवान्! मैं मानव जीवन से दुःख दीनता और दरिद्रता को निकालने का प्रयत्न करता रहता हुं । भगवान को पत्र ऐसे ही प्रिय है ।

पुष्पम्-अर्थात जीवन- पुष्प । परमात्मदेव ! मैं तुम्हें तुम्हारा खिलाया हुआ पुष्प अर्पण करता हूं । तुमने मेरे लिए गुलाब, चम्पा, चंमेली आदि के पुष्प खिलाये हैं । अतः मुझे इनकी सुगन्धि लेनी ही चाहिए : परन्तु परमपिता ! तू मुझ में रहकर मेरी रक्षा करता है । इसलिए मैं कृतज्ञता से जो पुष्प अर्पण करता हूं उसमें तुम्हारे लिये प्रेम की भावना है । तुमने बहुत सुन्दर, सुगन्धित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुष्प वस्तुतः मेरे लिये ही विकसित किये हैं। मैं तुम्हारा प्रिय पुष्प जो हुआ। पुष्प को सूंघने में पुष्प का अपमान नहीं होता वरन मेरे प्रभु के प्रति उसकी रचना के प्रति सम्मान है। हम भगवान को भिन्न-भिन्न प्रकार के पुष्प भेंट स्वरूप देते है। यह कोई बुरी बात नहीं है किन्तु अर्पण करने योग्य पुष्प तो एक ही है - वह है जीवन - पुष्प। अपने जीवन को विकसित करके हमें इसे अर्पण करना चाहिए। यह पुष्प भक्ति द्वारा ही विकसित होता है और भगवान के लिए प्रेम भाव होने पर ही दूसरा अंक हृदय में खिलता है।

भक्ति से यह कल्पना होती है कि भगवान सर्व व्यापक है इससे मन में भय नही रहता और सभी प्रकार का परायपन दूर होकर द्वेष का मूलोच्छेद हो जाता है। जब प्रभु सर्वव्यापक हैं तो भय एवं दोष के लिए स्थान कहां रहता है? जिसने अपने जीवन में की कौमार्य, यौवन और जरा इन तीन अवस्थाओं को खिलाया है उसका जीवन पुष्प स्वतः विकसित होता है। ऐसा प्रेमी सर्वदा युवा ही रहता है क्योंकि उसके जीवन की ये तीनों अवस्थाएं 'सामने' दिखायी देती हैं। वह तो बच्चों के साथ बच्चा बन कर ही क्रिड़ारत रहता है। एक बार राम दास स्वामी बालकों के साथ खेल रहे थे। इतने में एक विद्वान उनसे भेंट करने के लिए वहां आ निकले उन्हे खेलते हुए देखकर वह निराश होकर यह कहता हुआ चला गया कि दासबोध की रचना करने वाला यह तत्व ज्ञानी कैसे हो सकता है? वस्तुतः हमारी यह धारणा बन गई है कि जिसके चहुं ओर तथा शिर पर पुस्तकों का ढेर दिखायी दे वही तत्व ज्ञानी है। इस पर रामदास स्वामी ने लिखा था- झूठा महान चोर होता है।खेलने के लिए योग्य साथी बालक हो है। इसलिए अपने जीवन में कौमार्य को विकसित करना चाहिए छोटे बालक को चिन्ता, निराशा और उद्विग्नता स्पर्श तक नही कर पातीं।

कल यात्रा पर जाना हो तो बालक देर रात्रि तक भी खेलता रहता है।क्या सामान साथ जाना है। क्या सभी तैयारियां पूरी हो गई हैं - आदि कि उसे कोई चिन्ता नहीं होती क्योंकि इसका सभी भार माता-पिता, भाई बहन आदि पर होता है। वह स्वतः अपने जीवन में चिन्ता पाप आदि विकारों से रहित होता है। सोचे हुए कार्य के न होने पर हमें चिन्ता एवं व्यग्रता होती है किन्तु बालक इससे दूर रहता है। वह तो एक क्षण में अपने खिलौने का त्याग करके उसे भूल जाता है। लेकिन हम भूलते ही नहीं हैं। ऋषि, तपस्वी आदि यह परामर्श देते हैं कि चिन्ता ही न करो; सब कुछ भगवान (माता-पिता) पर ही छोड़ दो। जब हमें यह दृढ़ विश्वास हो जायेगा कि मैं भगवान का हूं और वही मेरा यथार्थ कल्याण करने वाला है' तो हमें रंचमात्र चिन्ता न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होगी।

मन में पाप होने पर भी साधक को घबराहट होती है। परमेश्वर अथवा गुरू के सन्मुख अपने पापों दुष्कर्मों को उगल देने से घबराहट नही रहती। जिसने भी अपने जीवन में कौमार्य को विकसित किया है वह अस्सी वर्ष की आयु में भी 'कुमार' ही रहेगा।

ऐसे ही युवावस्था में इच्छा, तीव्रता, भाव-प्रधानता को समर्पण रूप में सब कुछ निकाल फेंकने की प्रवृत्ति होनी चाहिए। क्या हम सब में हैं? क्या हमने किसी को समर्पण किया? जब हम किसी को समर्पण ही नही कर सकते तो भला कोई हमें समर्पण क्यों करेगा? यौवन की एक विशेषता है-अन्तर्मुख होना। इसमें हमे यह अनुभव होने लगता है कि जैसा प्रसन्न एवं शक्ति सबल मेरा जीवन है वैसा दूसरों का भी होना चाहिए। अन्तर्मुख होने से हृदय करुणा से लबालब भर जाता है। ऐसे व्यक्ति के लिए शेष कुछ भी करने को नही रहता अर्थात वह कृतकृत्य हो जाता है। यौवन का अमूल्य आभूषण त्याग तथा समर्पण है।

अतः पत्र- पुष्प का अभिप्राय यह है कि जीवन उसी का विकसित होता है जिसने अपने कौमार्य,यौवन और जरा इन तीनों अवस्थाओं को खिला लिया है। तब जो कुछ करते हैं प्रायः उसका उद्देश्य समझे बिना यन्त्र की तरह ही करते रहते हैं जैसे भगवान को तीन दल वाला बिल्व पत्र अर्पण करना। यहां तीन दल का अर्थ सत्व, रज और तमवाले इस जीवन को अर्पण करना है। ऐसे समय पर यह भावना होनी चाहिए कि मैं त्रिगुणातीत होना चाहता हूं।

तीन दल का एक और अर्थ है-प्रभो! मैंने अपने जीवन में कौमार्य, यौवन, जरा तीन दल खिलाये हैं वे आपके चरणों पर न्योछावर करता हूं। भगवान ऐसी भेंट को निश्चय ही स्वीकार करते हैं।

फलम्— भगवान ने हमारे लिये सभी ऋतुओं के अनुकूल फल बनाये हैं। कर्मकाण्डी ब्राह्मण बीस-पच्चीस फलों की एक सूची बना लेते हैं। उनमें से एक-दो का भोग लगाकर शेष फल स्वयं खा लेते हैं। इन फलों को भेंट करना कोई बुरी बात नहीं है किन्तु 'फल' का वास्तविक अर्थ 'कर्म–फल' है। प्राणीन्तत्र के भाव तथा जीवन को उन्नत करने के लिए ही कर्म किये जाते हैं। भगवान तो 'कर्म फल' को ही स्वीकार करते तथा प्रेम से खाते हैं। अतः हमें प्रभु को सामान्य फल ही नहीं वरन् पवित्र कर्मफल त्याग समर्पण करना चाहिए।

तोयम्— भगवान दृढ़ता से कहते हैं कि जो कुछ भी करना है मेरे अर्पण कर दो दूसरा अर्थ यह है कि हम जो कुछ करते हैं वह सब भगवान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का है। इसलिए हम ने जानबूझ कर यह निश्चय किया है कि इसकी मुझे आवश्यकता नहीं है। इस कारण इन्द्रियों में की अपनी सभी क्रियाओं को प्रभु को अर्पण करता हूं। यहां इस बात को समझ लेना नितांत आवश्यक है कि मैं जो कुछ करता हूं। वास्तव में मैं स्वयं नहीं करता। इस पर मेरा अधिकार नहीं है। तो मैं फिर कर्म के फल को अपने पास क्यों रखूं? यदि चलते हुए मुझे मार्ग में किसी के गिरे हुए पैसे मिल जाते हैं तो हम कहते हैं – ये हमारे नहीं, किसी और के होंगे वे किसके हैं– यह जानना हमारे लिये आवश्यक नहीं है। हम उन्हें मन्दिर में रख देते हैं।

कर्म मेरे नहीं हैं! इन्द्रियां मेरी अपनी शक्ति से गतिमान नहीं होती अर्थात् इन्हें भगवान ही क्रियमाण करते हैं। अतः इन्हें भगवान के मंदिर में रख देना ही चाहिए।

तोयम्— इसका आशय जल नहीं वरन् रस है। हमें जिस जीवन को प्रभु को अर्पण करना है वह रस से ओतप्रोत हो। यह जीवन प्रेम, भाव और भक्ति से रसदार बनता है और इसके लिये उपयुक्त समय भरी जवानी ही है। जब हम अस्सी वर्ष के हो जाते है और हमारे परिवार, सम्बन्धियों, मित्रों आदि ने हमारा समूचा रस निचोड कर पान कर लिया होता है तो हम भक्ति के मार्ग पर चलने लगते हैं और कहते हैं-भगवन्त मेरा यह जीवन तुम्हारे लिये है! गन्ने का रस निकालने वाला यदि दो तीन बार ईख का रस यंत्र द्वारा निकाल लेने के बाद वह छिल्का आपको दे तो क्या आप उसे सहर्ष स्वीकार करेंगे? ऐसे ही जब हम अपने रस से रीते जीवन को भगवान के हाथों में सौंपते हैं तो क्या प्रभु उसे स्वीकार करेंगे जिस किसी ने अपना रसपूर्ण जीवन भगवान के चरणों में समर्पण कर दिया है उसके लिए और कुछ भी करने को नही रहता।

हमें भगवान से कहना चाहिए -प्रभो! मेरा तुम से प्रगाढ़ प्रेम है। याचक के लिए दाता के प्रति प्रेम अनिवार्य है। भगवान को भी उसका ध्यान बना रहता है। जब माता के हाथ में कोई एक पेड़ा रखता है तो उसे तुरन्त पुत्र की स्मृति हो जाती है और वह जाकर उसे दे देती है। ऐसे ही भगवान से अनन्य भाव से प्रेम होने के कारण जो कुछ हुआ अथवा हो रहा है वह सभी उसका है और मैं उसे अर्पण करता हूं।

अन्त में यह कहना अनुचित न होगा कि आत्म-समर्पण ही आत्म-कल्याण की कुंजी है।

('गीता उपदेश, अम्बाला' से साभार)

प्रेषक— भारबन्धु शर्मा दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वामी रामतीर्थ मिशन. (रजि.)

दिल्ली में श्री कृष्ण जन्माष्टमी

यह अति पावन पर्व रविवार दिनाँक २३ अगस्त, १९८१ को श्री रामतीर्थ धाम में बड़े हर्ष एवं उत्साह से मनाया गया। मातृ – मण्डल एवं श्री उग्रसेन आनन्द जी के भजनों के बाद निष्ठावान सत्सगियो की उपस्थियों में आनन्द कन्द भगवान श्रों कृष्ण जी के श्री चरणों मे भावभीनी श्रद्धाजलि अर्पित की गयी। प्रधान सचिव ने सर्वप्रथम "भगवान को क्या अर्पण करना है?" इस शीर्षक का एक लेख पढ़कर सुनाया जिसमें श्रद्धेद श्री पाण्डुरंग शास्त्री आठवले ने अपनी अनूठी शैली में बताया कि पत्रम्–पुष्पम्–फलम्–तोयम् को भेंट करने का वास्तविक रहस्य क्या है। युवावक्ता विद्वान श्री राम मिलन जी ने अपने प्रवचन मे गींता के रहस्यों को स्पष्ट किया। सुश्री विवेक भारती जी, श्री जगन्नाथ मसीन जी और श्री गुलाब राज शर्मा जी ने इस महत्वपूर्ण महोत्सव पर विसद रूप से प्रकाश डाला। १२½ बजे प्रसाद–वितरण के वाद कार्यक्रम आरती से सम्पन्न हुआ। हमारे वर्तमान स्थानापन प्रधान श्रीं अमोलक राज जी चोपड़ ने प्रसाद की व्यवस्था की। कार्यक्रम सब प्रकार से सफल एवं प्रभावशाली रहा।

भारत बन्धु शर्मा
प्रधान सचिव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धर्म-चक्र

लेखक स्वामी विष्णु प्रकाश शास्त्री

धर्म सत्य पर ही टिका रहता है। जहां सत्य नही वहाँ धर्म पाखण्ड का रुप ले लेता है।

राम जी की सुन्दरता अनुपम व अलैकिक है। ग्राम बन्धुओं ने राम की सुन्दरता का अपने अनुसार मूल्यांकन किया है सीता जी पूछती है —

कोटि मनोज लजावन हारे। सुमुखि कहहु को आहि तुम्हारे।
सुनि सनेह मय मंजुल बानी। सकुचि सियमन मुंह मुस्कानी ।।
उत्तर में कहती हैं।

सहज सुभाय सुभग तन गोरे,। नाथ लखनु लघु देवर मोरे।
बहुरि वदन बिंधु अंचल ढाँकीं, प्रियतन चितई भौंह कर बाकीं ।।
खंजन मंजु निरीधे नयननि,। निज पति कहेऊ तिन्हहिं सियसयननि ।।
भई मुदित सब ग्राम बधूरी, रंकन राम रासि जनुलुटिय।

मूल प्रसंग में ग्राम नारियों का निश्चल प्रेम व सीता जी के भारतीय नारी की मर्यादा व शील का स्नेहिल दर्शन होता है और तो और दैत्य भी राम के सौन्दर्य को देखते रह गये, चित्रवत धन्य है वह सौन्दर्य जो दुष्ट आत्मा व क्रुर को भी कोमल बनाये व प्रेम का संचार कर दें।

खर दूषण के प्रसंग— में सचिव बोलि बोले खर दूषण यह कोई नृप बालक नर भूषण।

नाग असुर सुर नर मुनि जेते,देखे जिते हिते हम तेते ।।
हम भरि जनम सुनहु सब भाई, देखि नाहिं असि सुन्दरताई।
यद्धपि भगिनी कीनी कुरुणा, वंध लायक नही पुरुष अनूपा ।।

रावण भी एक विशिष्ट प्रसंग में राम को देख कर पानी-पानी हो गया,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन्हे लगा मेरा राक्षसत्व एक बारगी मुझे छोड़कर जा रहा है। जब राम ने लंका पर चढ़ाई के पूर्व समुद्र किनारे भगवान शंकर के लिंग की विधिवत स्थापना की तब रावण स्वयं पुरोहित बनकर आया था जब रावण पुरोहित कार्य को सम्पन्न करके जाने लगा। तो राम ने दक्षिणा के लिये आग्रह किया। रावण ने प्रथम तो आना कानी की किन्तु राम के अनुरोध से लेना स्वीकार किया उसने माँगा कि आपसे मेरा बैर बना रहें। यही मैं मागता हूं। राम जी को आश्चर्य हुआ।

यह तो मार्ग अनुकूल नही है। ऐसा क्यों चाहते हो। रावण बोला – आप को देखकर मेरे क्रूरता, कठोरता व बैर छूटता जा रहा है। पाप पसीजने लगा है। यहीं मैं चाहता हूं। यदि देना है तो बैर बना रहे। बैर ही देवे राम ने कारण जानना चाहा रावण बोला।

बैर से मुझे प्रेम के बजाय ज्यादा लाभ है। कैसे ? क्योंकि प्रेम होगा तो सिर्फ मेरा ही कल्याण होगा और यदि आप से मैं लडाई बरावर विरोध में डटा रहूँगा। पहले मैं परिवार पुरुजन को लड़ाई में झोक दूंगा। उनके मरने पर उन्हें आपका धाम मिल जायेगा। अन्त में मेरी बारी होगी मुझे भी वह परम धाम मिलेगा, आपके हाथों अतः इससे भारी लाभ है। राम अपने कार्य से प्रसिद्ध थे व रावण अपने कारनामे में प्रसिद्ध थे।

धर्म और नीति— एक शब्द में वेदान्त का आदर्श है मनुष्य के सच्चे स्वरुप को जानना। और वेदान्त का यहीं शन्देश है कि यदि तुम व्यक्त ईश्वर रुप अपने भाई की उपासना नही कर सकते, तों तुम उस ईश्वर की उपासना कैसे करोगे जो अव्यक्त हैं।

श्रद्धा और बल— यह कभी न सोचना कि आत्म के लिए कुछ असम्भव है। ऐसा कहना भी भयानक नास्तिकता यदि पाप नमक कोई वस्तु है तो यह कहना ही एक मात्र पाप है कि मैं दुर्बल हूं अथवा अन्य कोई दुर्बल हैं।

112395
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आश्रम-समाचार

आश्रम पर निर्माण कार्य पूरे जोर शोर से चल रहा है विविध बाधाओं के उपस्थित होने पर भी शहन्शाह राम की अनुकम्पा से आशातीत सफलता मिल रही है परमाध्यक्ष जी ने ८ अगस्त से गीता भवन देहरादून के प्रधान श्रीसरदारी लाल ओवराय जी के स्नेह पूर्ण आग्रह से श्रीमत्भागवत् पर प्रवचन प्रारम्भ किये श्री सरदारी लाल जी का आश्रम के प्रतिस्नेह तथा सेवा अनुकरणीय हैं। यह कार्य ३०अगस्त तक चलता रहा। २२ अगस्त को आश्रम पर जन्माष्टमी का महोत्सव बड़े उत्साह से मनाया गया। ग्राम-वासियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। श्री विष्णु प्रकाश जी तथा श्री विश्वनाथ यति जी के प्रवचन हुये। इस दिन परमाध्यक्ष जी ने सर्वे आफ इण्डिया के हाथी बड़कला के हाल में भगवान श्री कृष्ण के स्वरूप पर प्रकाश डाला।

इसी दिन पञ्चायती मन्दिर, डालनवाला महिला सत्संग मण्डल, श्री सनातन धर्म सभा पटेल नगर में श्री कृष्ण जन्मोत्सव महोत्सव में भाग लिया। श्री गुरु राम राय दरबार में परमाध्यक्ष जी की अध्यक्षता में हजारों नर नारियों ने बड़े उत्साह से भाग लिया भगवान के अवतार वाद के विषय में भार-तीय दर्शनों के विविध स्वरूपों पर प्रकाश डालते हुए। भागवत् सिद्धान्त के अनुसार भगवान के प्रथम अंश भाव से वसुदेव जी में प्रवेश, तथा वसुदेव जी से माता देवकी के उस तेज को गृहण करने से भगवान के गर्भवास पर प्रकाश डाला।

२३ ता० को श्री गीता भवन देहरादून में जन्माष्टमी के महोत्सव की पूर्णाहुति के रूप में परमाध्यक्ष जी ने भगवान श्री कृष्ण की जन्म कथा का अत्यन्त मनोरम ढग से उपस्थित किया – हजारो नर नारी भगवत प्रेम के सागर में डूब गये — — परमाध्यक्ष जी जनता के आग्रह से वहीं धूम हुये-८ ता.सितम्बर तक गुरु राम राय दरबार में प्रवचन करते रहेंगे तथा उसी दिन दिल्ली प्रस्थान करेंगे तथा ७ ता० सायंकाल अलीगढ़ जायेंगे तथा वहां से ८ ता० को दिल्ली वापिस आकर श्री गंगेश्वर धाम में २० दिन के प्रवचन कार्यक्रम को प्रारम्भ करेंगे तथा २० ता० को देहरादून वापिस आ जायेंगे।

श्री आचार्य प्रवर श्री गोविन्द प्रकाश जी का सालाना आश्रम पर २०सितम्बर को मनाया जायेगा परमाध्यक्ष जी २० ता० को प्रातःकाल आश्रम पर आयेंगे – तथा उसी दिन रात शीघ्र दिल्ली चले जायेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूरभाष—८४२२५ राजपुर, ४२९७ देहरादून, तार का पता — (वेदान्त) देहरादून, रजि. नं डी. एन. १५

सूचना

१—मासिक पत्रिका 'राम सन्देश' न मिलने पर अपने समीपस्थ डाकखाने (पत्रालय) से पता करने के पश्चात हमें सूचित करें। क्योंकि कभी-किसी कारणवश "राम सन्देश" १५ ता० तक निकलता है। इसलिए शिकायत पत्र अपनी २ ग्राहक संख्या सहित दिनांक २० के बाद प्रेषित करने का कष्ट करें।

२—आप आश्रम में किसी भी प्रकार का धन भेजते समय यह लिखना न भूलें कि वह धन किस निमित्त भेजा जा रहा है तथा चैक स्वामी रामतीर्थ मिशन के नाम पर ही भेजें।

३—जो पाठक इस पत्रिका के आजीवन सदस्य बनना चाहते हैं वे अपना सदस्यता शुल्क सम्पादक के नाम प्रेषित करें। सदस्यों को आजीवन पुनः बिना किसी शुल्क के यह पत्रिका प्रेषित की जायेगी।

४—'राम सन्देश' के विदेशी ग्राहक अपना वार्षिक शुल्क १५ रु० भेजें। क्योंकि परमाध्यक्ष जी की आज्ञानुसार १२ रु० के स्थान पर ३ रु० वृद्धि का निर्णय लिया गया है।

५—पाठक अपनी अंक सम्बन्धी, प्रतिक्रियाएं, अवश्य भेजें, जिससे पत्रिका की उन्नति सम्भव हो सके।

६—अपनी रचनाएं – लेख, कविताएं भेजते समय स्पष्ट शब्दों में पृष्ठ की एक तरफ ही लिखें।

७—हर प्रकार की सामाजिक, शिक्षा सम्बन्धी, आध्यात्मिक या पारस्परिक तुलनात्मक आपकी लिखित वैचारिक भावनाएं सादर आमन्त्रित हैं।

—सम्पादक

बुक पोस्ट

ग्राहक संख्या 534

श्री/श्रीमती Gurukul Library

स्थान Gurukul Kangri University

डाकखाना Hardwar (U.P.)

जिला

स्वामी रामतीर्थ मिशन — सर्व भूत हिते रताः

मासिक पत्र— "राम-सन्देश"
स्वामी रामतीर्थ मिशन
राजपुर, देहरादून (उ०प्र०)
Pin—248009 भारत

स्वामी रामतीर्थ मिशन, राजपुर देहरादून (उ० प्र०) के लिए प्रकाशक स्वामी अमर मुनि द्वारा न्यू आईडियल प्रिन्टिंग हाउस (कांग्रेस भवन के पास) ४-बी नेशविला रोड, (देहरादून) में, मुद्रित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

1-10-82
FREE
पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी

राम सन्देश

अक्तूबर १९८२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

श्री राम तीर्थ मिशन, राजपुर, देहरादून।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

-: निर्देशिका :-

	विषय	लेखक	पृष्ठ
१	श्री राम	स्वामी राम	१
२	श्रद्धांजली	परमाध्यक्ष अमर मुनि जी महाराज	२
३	दो क्षणिकाए	दिनकर	३
४	अमल करने योग्य कुछ बात	सिम्मी अरोड़ा	४
५	कर्म योगमयी आराधना	अमरमुनि जी महाराज	५
६	भरत द्वारा स्नान करने से इन्कार	के. एल. कुकरेती	७
७	माया मृग	कुमारी शर्मा	८
८	हमें कम क्यों करना चाहिए	तीर्थानन्द जी आद्य	६
9	VEDANTA	Swami Shiva Nanda	12
१०	सूचना	हंस राज सचदेवा	१३
११	वन्दना	घनानन्द पाण्डेय 'विशारद'	१४
१२	दिव्य वचनामृत	पूज्य गोविन्द प्रकाश जी महाराज	१५
१३	गीता का उपदेश	बचन सिंह बुटोला	१६
१४	तमन्ना	के. एल. कुकरेती 'कारक', देहरादूनी	१७
१५	श्रद्धांजली	राम तीर्थ मिशन कोटला	१६
१६	,,	काका हरिओ३म जी, बम्बई	२०
१७	गोविन्द प्रकाश जो का निर्वाण दिवस	भारत बन्धु शर्मा, दिल्ली	२२
१८	कविता	डा० सुमन सादाबादी 'सुमन'	२३
१९	आश्रम समाचार		२४

संस्थापक :
ब्रह्मलीन स्वामी हरिओउम जी महाराज

संवर्धक :
ब्रह्मलीन स्वामी गोविन्द प्रकाश जी महाराज

व्यवस्थापक :
स्वामी अमरमुनि जी महाराज

सम्पादक :
स्वामी ओमानन्द जी महाराज

आजीवन सदस्यता शुल्क :
भारत में : १०० रु०
विदेश में : ५०० रु०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्र के हित के लिये प्रयत्न करना ही विश्व की शक्तियों अर्थात देवताओं की आराधना है'—स्वामी राम

वेदान्त, आध्यात्म, संस्कृति, धर्म व भक्ति का सजग सन्देशवाहक तथा
स्वामी राम के आदर्शों का एकमात्र लोकप्रिय मासिक—

वेदोपनिषदां तत्त्वम्, सत्यं नित्यं सनातनम् ।
तत्सर्वं "राम सन्देशो" पत्रेऽस्मिन्नवलोक्यताम् ॥

राम सन्देश

वर्ष ३१ अंङ्क १०	राजपुर रोड, देहरादून, अक्तूबर १९८२	वार्षिक भेंट १०/- एक प्रति ८५ पैसे

श्री राम

दिल को जब गैर से सफा देखा
आप को अहना दिलरुबा देखा !
पी लिया जामे बादये-वहदत
ख्वेशो-बेगाना आशना देखा !
जिसने है जात अपनी को जाना
आप को हक से कब जुदा देखा !
जब से दर्शन है 'राम' का पाया
ऐ राम ! क्या कहूं कि क्या देखा!

—स्वामी राम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आनन्दमयी माँ

के निधन पर

समस्त राम प्रेमियों व

रामतीर्थ मिशन राजपुर की ओर से

भावभिनी श्रध्दाँजली

–स्वामी अमरमुनि जी महाराज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दो क्षणिकायें

—दिनकर

उपशम को ही जो जाति धर्म कहती है,
शम, दम, विराग, को श्रेष्ठ कर्म कहती है,

धृति प्रहार, शान्ति को वर्ग कहती है,
अक्रोध, विनय को विजय मर्म कहती है,

अपमान कौन जिसको वह नहीं सवेगो !
सब को असीस सब का बन दास रहेगो।

★★★★
★

कुछ सोच रहा है समय राम में थम कर,
है ठहर गया सहसा इतिहास सहम कर।

सदियों में शिव का अचल ध्यान डोला है,
तोपों के भीतर में भविष्य बोला है।

चोटे पड़ती यदि रही, शिला टूटेगी,
भारत में कोई नई धार फूटेगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अमल करने योग्य
कुछ बातें

१ ईश्वर पर न विश्वास करने वाला ही नहीं, वह भी नास्तिक है, जो अपने ऊपर विश्वास नहीं करता ।

२ शरीर को भस्म कर देने के लिए क्रोध से बड़ कर कोई चीज नहीं ।

३ क्रोध में जब जुबान खुलती है, तब विवेक की आँखें मूंद जाती हैं, इस समय ऐसी बातें मुंह से निकल जाती हैं, जिनके लिये केवल इसी जनम में नहीं, कई जन्मों तक पश्चाताप करना पड़ता है।

४ जो बच्चों को सिखाते हो उस पर खुद अमल करें तो यह संसार स्वर्ग बन जाए ।

५ सब से बड़ा दीन दुर्बल वह है: जिसका अपने ऊपर नियन्त्रण नहीं ।

६ जिस स्वर (शब्द) में सुन्दर भावना नहीं वह स्वर सुनने योग्य नहीं ।

संकलन कर्ता :
कुमारी सिम्मी अरोड़ा
कृष्ण नगर, देहरादून ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर्मयोगमयी आराधना

—श्री स्वामी अमरमुनि जी महाराज

दामोदर मास (कार्तिक मास) का प्रात: काल का समय था। इन्द्रयाग का महोत्सव समीप था। सभी लोग उसकी तैयारी में थे, अत: माता यशोदा स्वयं दधिमन्थन कर रही थी। महाराज नन्द जी की गेहनी माता यशोदा दधि मन्थन कर रही थी। माता यशोदा गेहनी है। सद्गेहनी, नन्द बाबा की गेहनी, गोपीगेहना है। उसे कार्य करने में कोई संकोच नहीं। कार्य तो उसे आल्हादप्रद है। कार्य तो उसका सहज स्वभाव है। कर्मविभोरता ही सच्चा योग है। जिससे प्रभु सर्वाधिक प्रसन्न होते हैं।

"स्वकर्मणा तमभ्यर्च्य सिद्धि विन्दन्ति मानवा:।"

आज माता यशोदा दधि मन्थन के द्वारा श्री आनन्द कन्द भगवान श्रीकृष्ण चन्द्र जी का आराधन कर रही है, ध्यान योग कर रही है। कर्मयोग का यह पवित्र स्वरूप अदभुत है। उसके सामने दूसरा योग नहीं। इसके समान कोई पवित्र समाधि नहीं। मां का अत्यधिक कार्यशील स्वरूप है।

कमरे में रेशमी लहंगा कसकर डोरी से बन्धा हुआ है। कर्मयोगिनी मां कर्मयोग के रहस्य को जानती है। कर्मयोग में आलस्य और प्रमाद का कोई स्थान नहीं। वह समाधिवस्थ हो कर्म में तत्पर है है। कर्मयोगस्थ मां भगवान श्रीकृष्ण जी के बाल चापल्य पर आधारित गीत गा रही है। मधुर गीतों द्वारा आनन्दकन्द भगवान् का स्मरण कर रही है, मानों भगवान् का आह्वान कर रही है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भला कर्मयोगस्थ मां के बुलाने पर भगवान् क्यों न आयें। कर्मयोगी के बुलाने पर न आकर क्या निष्क्रिय व्यक्ति के बुलाने पर आयेंगे ? नहीं, वह तो स्वयं अत्यन्त चपल हैं। अभी अभी तो कीर्तन में लगे हैं। कभी भी तो निठल्ले नही बैठते। कोई न कोई कार्य करते ही रहते हैं। उनके कार्यों की धूम तो गोकुल में मची है। सभी गोपियां तो उनके क्रीडामय कार्यों पर गीत बनाकर गाती है।

मां भी स्मरण कर रही है, कर्म और प्यारमय गीत के द्वारा भगवान को बुला रही है। भला ऐसी पुकार को सुन कर भगवान् क्यों नहीं आते। वह तो दौड़ दौड़ आते हैं। वह आये। पहले हृदयस्थल में आये भगवान के अन्तर्दर्शन से माता आनन्द विभोर हो उठी। रोमांच हो गया, शरीर प्यार विह्वल हो उठा। रस्सी तो इस समय स्वभाव से, अभ्यास से अपने आप खींची जा रही है। मां दर्शन करतो है, हृदयपटल पर भगवान श्री कृष्ण का, बाबा का, नन्दनन्दन का, यशोदानन्द का।

हृदय में प्रभु के साक्षात्कार के अन्तर बाह्य दर्शन में देर नहीं लगती। हृदय में दर्शन भूमिका है बाह्य दर्शन की, भगवान के अन्तर्दर्शन से मां का वात्सल्य भाव उमड़ा, प्यार की पवित्र आंच से हृदय द्रवित हो उठा। गाय का हृदय वत्स के वात्सल्यभाव से द्रवित हो दूध रूप में बहने लगता है। गाय उसे रोक नहीं सकती, वह सहज स्वभाव है, सहज क्रिया है, मां का हृदय भी वात्सल्य भाव से द्रवित हो दूध रूप में स्तनों में प्रभावित हो रहा है। यह दूध—दूध नहीं, प्यार भी नहीं, अपितु परम पवित्र प्यार है उसकी प्यास प्राणीमात्र है। भगवान में तो यह प्यास और भी बलवती है। वह तो एकले ही है, जीव तो अनन्त हैं, भगवान एक। जीवों को अपने भाई जीवों का प्यार सख्यभाव सहज स्नेह प्राप्त है। भगवान का एकाकीपन सम्भव है। अखरता है। तभी तो उनके समान दूसरा न होने पर स्नेह के लिये जीवों से प्यार पाने के लिये गोकुल में पधारे हैं। बैकुण्ठ को छोड़कर दिव्य स्वरूप को छिपाकर बाल रूप धारण कर आये हैं। ताकि मैं भी जीवों के साथ मिलकर पारस्परिक प्यार के आनन्द को पा सकूं। ऐश्वय युक्त स्वरूप के आगे सभी दब जाते हैं। बड़े व्यक्ति के प्यार का वह पवित्र स्वरूप नहीं होता, जो समाज से होता है। तभी तो भगवान बालक रूप धारण कर आये हैं, मनुष्य के शिशु रूप को बना कर आये हैं, जीव रूप धारण किये हैं। वही तो प्यार ब्रह्म का स्वरूप है। अस्ति-भांति-प्रिय ही तो ब्रह्म है और नाम रूप मिथ्या।

आज प्रभु दौडे आ रहे हैं, गोकुल की रज में दौडे आ रहे हैं, धूलि-धूसरित दौडे आ रहे हैं, इस पवित्र वात्सल्य भाव से द्रवित हृदय के प्रेम स्वरूप को प्राप्त करने के लिये।

दौडे आते हैं प्यासे, प्यार के प्यासे। कहीं इस प्यारमय दूध की एक बून्द भी तो न गिर जाये भूमि पर। सभी खेल दौड कर आते हैं— आते हैं मां की गोद में भुजाओं में और हठ करते स्तनपान का। बडे नटखट हैं— दधि-मन्थन नहीं करने देते। हार कर मां गोद में लेती है— कर्मयोग में बाधा पड़ी, किन्तु योग्य से प्राप्तव्य वस्तु मिल गई। ★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भरत द्वारा संगम में स्नान करने से इनकार

★★★★

—के० एल० कुकरेती 'कारक'
२६ जाखन, राजपुर रोड, देहरादून।

केरलीय राम कथा एक अनुठा भरत प्रसग .... राम को मनाकर वन से वापस लाने के लिये वन जाते हुए भरत प्रयाग पधारे उन्होंने गंगा में स्नान किया, यमुना में स्नान किया, पर संगम में स्नान करने से इनकार कर दिया।

यह क्या ! संगम तो अधिक पुनीत है महाराज !" पुरोहितों ने भरत जी से आग्रह किया। "होगा, मुझे संगम में स्नान नहीं करना है। आप लोगों निश्चित रहें, आपकी दक्षिणा में कोई न्यूनता नहीं आने पायेगी।' सर्वदा शीलवान संकोची भरत जी ने उत्तर दिया।

"महाराज ! दक्षिणा का कोई प्रश्न नहीं है, यहां पहूंचकर संगम की अवमानना करने से पुण्य क्षय होता है।" भरत के दो टुक उत्तर से संकुचित पुरोहितों ने निवेदन किया।

"कोटि गौरव मिल जाए तथापि संगम में स्नान नहीं करूंगा।" भरत जी अपने निर्णय पर पूर्ववत दृढ़ थे।

"महाराज ! आखिर आपको आपत्ति क्या है ?" पुरोहितों ने भरत जी के रूख पर कौतूहल और आश्चर्य से पूछा।"

भरत जी की आंखें डबडबा आयीं "मेरी मां केकयी को कोई अभाव नहीं था, परमात्मा का दिया सबकुछ उसके पास था। केवल एक ही अभाव था और वह यह कि राम उसके कोख जाये नहीं थे और इस प्रकार सीता उसकी सगी पुत्र वधू नहीं थी। इस अभाव की की पूर्ति के लिये वह अहर्निश प्रार्थना किया करती थी कि हे परमात्मा ! अगले जन्म में राम उसके कोख जाये और सीता उसकी सगी पुत्र-वधू हो यही उसकी एकमात्र प्राथना होती (तुलसी शब्दों में 'होय राम सिय पूत-पतोहू') और ऐसी मेरी मां पर जब सरस्वती कृपालु हुई, तब वही मेरी मां मेरे भैया राम के विरुद्ध खड़ी हो गई। इस संगम में सरस्वती भी है। कहीं ऐसा न हो मैं अपने भैया राम के विरुद्ध खड़ा हो जाऊं। इस सरस्वती के कारण संगम-स्नान मुझे स्वीकार्य नहीं है' भरत जी का उत्तर सुनकर पुरोहित स्तब्ध रह गये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पिछले अंक की शेष कहानी :—

"माया मृग"

—कुमारी एस० के० शर्मा

किन्तु मेरे इतना कहने पर न्याय होना असम्भव था, अतः दण्ड स्वरूप कारागार में बन्द की गई। अन्यायी सिपाही कोड़ों की वर्षा करने लगे। मैंने हर्षपूर्वक उनको भी सहन किया। मेरा इष्ट देवता, इसे कब सहन कर सकता था। दूसरा दिन हुआ, ज्यों ही कोड़ों का प्रहार चला मायामृग मायादेवी सहित मेरे सम्मुख खडा था। मैंने देवी को झुक कर प्रणाम किया देवी ने मेरा आलिंगन किया और बन्दी गृह से मुझे मुक्त किया।

देवी के आदेशानुसार मृदुला सहित मैं 'सुकेत' के निर्जनों में रहने लगी। पग पग पर देवी के दर्शन होते, उनके प्रिय भक्तों के समीप रहकर नित्य नया उपदेश लेती।

इसी प्रकार जीवन का क्रम चलता रहा, परीक्षा समाप्त होने पर हम दोनों मायामृग के चरण-कमलों में भेजी गईं। वह देश देखकर नेत्र चमत्कृत हो गए :— धन्य ! धन्य !! के अतिरिक्त

मैंने कहा—"जीवन के बन्धन को खोल, माया, मृग कुछ तो बोल।"

★ समाप्त ★

-राम हृदय-

यदि आप कर्म के विधान को यह कहकर समझाते हैं कि वह तो ईश्वर की इच्छा है, बस उसी का काम है: यह स्पष्ट रूप से प्रश्न को टालना विचारात्मक नहीं होताः उससे आपकी अज्ञानता प्रकट होती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमें कर्म क्यों करना चाहिये

स्वामी तीर्थानन्द एम०ए० (अज्ञ)

इसका उत्तर है—कम ही करना चाहिये······· अकर्म नहीं। समस्याओं से भागना कायरता है······· और कायर । परिणाम दुःख, लज्जा और पराजय होता है। परिस्थिति का सामना करना साहस है······· और साहस का परिणाम दिव्यता, भव्यता और सफलता होता है।

उन्मादकारा भ्रान्ती का शिकार, अर्जुन का व्यक्तित्व वर्तमान समय में दूसरों को उपदेश अथवा मार्गदर्शन के लिये उपलब्ध नही है। जिस प्रकार से विद्यार्थी को बौद्धिक रूप में जागृत करने के लिये आचार्यजन को उसकी प्रताड़ना करनी पड़ती है ताकि वह जीवन मूल्यों और आदेशों में पुनर्शिक्षण की प्राप्ति हेतु तैयार हो जायें। यह उपदेश जीवन के अनेक सत्य और नानाविधि प्राणी और पदार्थमय जगत को क्रीड़ा के वास्तविक तत्व का समझने के लिये हो किया जाता है। भगवान् कृष्ण इस जोवन-दायीनी उपचार का आरम्भ तभी करते हैं, जबकी विद्यार्थी-रूप अर्जुन इस पुनर्शिक्षण के लिये बौद्धिक रूप में उपलब्ध होता है। जब की उस समय वह समग्र रूप में अस्त-व्यस्त हो चुका है और भयानक जड़ता तथा गतिहीन स्थिति तक जा पहूंचा है इसी का "अर्जुन निरोग" है।

यह एक विश्वव्यापी रोग है। केवल व्यक्ति ही नहीं, किंतु जातियां और राष्ट्र भी नपुंसकता की इस अर्जुन-मनःस्थिति और अत्यन्त निराशा से उत्पन्न ज़बरदस्त घबराहट की अवस्था का शिकार हो सकते हैं। वर्तमान में सम्पूर्ण जगत् में सर्वत्र अपने इद-गिर्द युवा वर्ग में यही अनर्थकारी मनःस्थिति देखने को मिल रही है। अर्जुन पर किया गया उपचार एक दिव्य औषधि है यह एक नितान्त सत्य है जिसके परिणाम स्वरूप गीता के अन्तिम अध्यायों में हम देखते हैं कि अर्जुन स्वयं अपने से ही प्राप्त उत्साहपूर्ण गतिशीलता के कारण अनुभव करता और कह उठता है कि उसका मोह नष्ट हो गया है।" नष्टों मोहा स्मृतिलब्धा··········गीता— वीरवर अर्जुन अपने भ्रामक कल्पनाओं के काले बादलों में से बाहर निकल आता है और अपने कर्म-क्षेत्र पर देदीव्यमान होने लगता है और शीघ्र ही वह पूर्ण विजय महान सफलता प्राप्त करता है। इस को देखते हुए हम क्यों न ऐसा प्रयत्न करें कि इस उपचार द्वारा वर्तमान के युवा जगत- की सहायता करना सम्भव हो सके।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हताश और निराश मानव-मन एकदम अपने इर्द-गिर्द के संसार की व्यवस्था को अस्वीकार कर देने की सोचता है। परिणामस्वरूप बौद्धिक रूप से सुन्न निष्क्रिय होकर अकर्मण्यता के गर्त में गिर जाता है। आज का युवक इस "समाज व्यवस्था" के प्रति विद्रोही होकर थोथे भोगमय जीवन की असफल योजनाओं में रहते हैं। यद्यपि उसे असफलता ही हाथ लग रही है, परन्तु वह मौन तथा निष्क्रिय नहीं रह सकता। वह कर्म करने को विवश है। हड़तालें, जुलूस, पलायन, धरने, घेराव, गोली-चालन, तोड़फोड़, लूट-पाट, तहस-नहस ये सभी अविश्वास और निराशा के उदाहरण हैं। कोई भी व्यक्ति जब तक जीवित है, निष्क्रिय नहीं बैठ सकता। उसे कर्म करना ही पड़ेगा। क्योंकि श्वास लेने की क्रिया भी तो एक कर्म ही है।

अर्जुन को असहाय हो कर अपने अस्त्र-शस्त्र फेंक देने और युद्ध से उपराम होने की अपेक्षा कर्म करने और समस्या के भीतर गहरा पढ़कर उसके समाधान द्वारा बाह्य परिस्थिति का सामना करने को प्रेरित किया जाता है। कर्म की श्रेष्ठता उस लक्ष्य पर ही निर्भर करती है, जिसके लिये व्यक्ति प्रयत्नशील होता हैं। अपने आप में कर्म न तो अच्छा है न बुरा। यह हृदय की भावना ही होती है, जिससे कोई कर्म अच्छा या बुरा होता है। यदि हम अपने कर्मो में प्रेरणा प्राप्ति हेतु सम्यक-लक्ष्य का सावधानी से चुनाव कर लें, तो उपलब्धी न केवल भव्य ही होती है, बल्कि हमारे सारे प्रयत्न सार्थक होते हैं और हमारा हृदय शान्ति की अनुभूति से परिपूर्ण हो जाता है। युवा पुरुष और स्त्रियों को उद्यमपूर्वक, अथक और निरन्तर कर्म करना चाहिये। कर्म हमारे भीतर विराजमान महान जीवन की अभिव्यक्ति ही है। किसी भी प्राणी के भीतर की जीवन-शक्ति कर्म अथवा क्रियारूप में ही अपने-आपको अभिव्यक्त करनी हैं। प्रमाद में जीवन बिताने का अर्थ है तन्द्रा और आलस्य अर्थात तमस की ठंडी भस्म द्वारा जीवन की सुलगती हुई अग्नि को ढक देना।

जब हम किसी महान आदर्श अथवा लक्ष्य की प्राप्ति हेतु प्रसन्नता पूर्वक कार्य करते हैं, तो इससे हमारी कार्य-कुशलता में वृद्धि होती है। आलसी व्यक्ति चाहे उसकी योग्यता का नाश न भी हो, परन्तु अपनी क्षमतायें तो खो ही बैठता हैं। योग्यता की प्राप्ति तो विद्यालयों में अध्ययन और चर्चा द्वारा ही सम्भव है। योग्यता रूप में संग्रहीत हमारा ज्ञान जब उद्यमी और सुनियोजित कर्मो द्वारा अभिव्यक्त होता है, तो यही हमारी कार्यकुशलता का प्रदर्शन हो जाता है।

जीवन में सफलता योग्यता पर नहीं, किंतु सम्पूर्णतया कार्यकुशलता पर ही निर्भर करती है। राष्ट्र के रूप में हमारा देश विस्मयकारी रूप में बुद्धिमान और हमारे मजदूर और कारीगर तुलनात्मक रूप में जापान, मलेशिया और श्रीलंका के मजदूरों से अधिक योग्य हो सकते हैं। तथापि वे हमसे अधिक अच्छे कार्यकर्ता हैं। उनमें कार्य-कुशलता अधिक है, हममें योग्यता अधिक है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

योग्यता तब तक रचनात्मक रूप धारण नहीं करती, जब तक की वह कार्य-कुशलता में नहीं बदल जातीं। अपने आप में सुधार लाने के उत्साह और अपनी वर्तमान योग्यताओं में वृद्धि की इच्छा के साथ काम में अपना पूरा मन लगाना ··· इस प्रकार उद्यम पूर्वक कर्म करना ही साधन है। अपने-आपसे ही चुनौती देने का यह भाव ही आत्म-सुधार और व्यक्तित्व की जागृति का रहस्य है। इस आन्तरिक प्रतिस्पर्धा में जो व्यक्ति पराजय स्वीकार कर लेते हैं निष्क्रीय होकर जो अपनी प्रगति स्वयं ही रोक रखते हें उनकी सफलता संदिग्ध हो जाती है और किसी प्रकार की उपलब्धि की आशा धूमिल हो जाती है। खेद है कि इस दुर्दशा के कारण वह स्वयम् हैं।

हरिओ३म् तत् सत् ! हरिओ३म् तत् सत् !! हरिओ३म् तत् सत् !!!

भारतवर्ष

—श्री आर० एस० नारायण स्वामी

१ व्यक्तिगत और स्थानीय धर्म को किसी प्रकार राष्ट्रीय धर्म से ऊंचा न देना चाहिए, इनके यथोचित सामंजस्य से ही सुख मिल सकता है।

२ राष्ट्र ने हित की वृद्धि के लिए प्रयत्न करना ही आधिदैविक शक्तियों अर्थात देवताओं की आराधना करना है।

३ ईश्वरानुभव के लिए आवश्यकता होती है सन्यास भाव की अर्थात स्वार्थ को नितान्त त्याग कर इस परिच्छिन्नात्मा को भारत-माता की महान आत्मा से बिल्कुल अभिन्न कर दिया जाय।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Balance Next Issue—

VEDANTA

—Swami Sivananda

In the state of liberation wherein there is annieliation of mind manons there is no plap of the two currents attachment and detachment (Raga-dwesha.) If false pereeption. Ignorance, pleasure pain, doubt, bondage, delusion, sorrow, etc., were essential properties of the self, just as heat is an essential properties of the Self, just as heat is an essential property of fire, they cannot be god rid of at any time. But there had been Ilberated sages in the past like Sri Shankara, Sri Dattatreya, Jada Bharata, Yagvalkya who possed extra-ordinary supersensual, or intutional knowledge, who were free from false perception, doubt, fear, delusion, sorrow etc. They were not conscious, of Samsara but they had perfect awareness of their own Swaroop, or essential Sat-chit-ananda Brahamic nature. Therefore we will have to conclude that the Self is free, pure, perfect, eternal and the avidya inheres in the instrument mind but not in the Self.

The liberated sage whoho is freed from selfishness, egoism, lust, anger, fear, roams about happily. He has shaken of every thing, Avidy and its modifications cannot affect him. He is the Yati. He is the Sannyasin. He is the the Yogin. He is the Paramahansa. He is Avadhuta. He is Brahman himself. He is the Lords. He is the Emperor of Emperors. He is fit to be worshipped.

May His blessings be upon you all ! May you all attain liberation in this very birth !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वामी रामतीर्थ मिशन अलीगढ़
का
२५वां वार्षिक विराट
आध्यात्मिक सम्मेलन

समस्त राम प्रेमियों को सूचित किया जाता है कि मिशन का वार्षिक सम्मेलन दिनांक ३०-१०-८२ से २-११-८२ तदनुसार शनिवार से मंगलवार तक बड़ी धूमधाम से परमपूज्य श्री १००८ स्वामी अमरमुनि जी महाराज व्याकरणाचार्य एम०ए० परमाध्यक्ष देहरादून की अध्यक्षता में होने जा रहा है। जिसमें भारतवर्ष के कोने-२ से उच्चकोटि के सन्त मण्डलेश्वर, महामण्डलेश्वर, कवि तथा संगीताचार्य पधार रहे हैं।

अतः इस अवसर पर आप सभी अपने इष्ट-मित्रों सहित सादर आमन्त्रित हैं।

भवदीय
हंसराज सचदेवा, महामंत्री
स्वामी रामतीर्थ मिशन
शाखा अलीगढ़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वन्दना

—घनानन्द पाण्डेय, "विशारद"
२३-रामजे रोड, नैनीताल

पंकिल मन है, भाव-हीन हूं,
तम में खोया, अति मलीन हूं,
ज्योति-पुंज, हे वीणा-पाणी !
श्री चरणों में वास दो,
मां शारदे ! प्रकाश दो ॥१॥

स्वर-लय की गति से विहीन हूं,
ताल-छन्द से महादीन हूं,
मेरी जड़ तंत्री में माता !
स्वर का कुछ आभास दो,
मां शारदे, प्रकाश दो ॥२॥

सरस भाव की नहीं कल्पना,
शब्दों में है नहीं व्यंजना,
तुतलाती वाणी बालक की,
माता, तनिक मिठास दो,
मां शारदे, प्रकाश दो ॥३॥

तेरी आभा नाद-ब्रह्म है,
सामवेद का बृहद् छन्द है,
वीणा में अगणित सप्तक हैं,
मुझको षड़ज-विकास दो,
मां शारदे, प्रकाश दो ॥४॥

प्रणव-शब्द की तू महेश्वरी,
ब्रह्म-ज्ञान की हे अधीश्वरी,
मेरे मानस के पंकज में,
चरणों का विन्यास दो,
मां शारदे, प्रकाश दो ॥५॥

ताल-छन्द-लय के वादन में,
सप्त-सुरों के संचारण में,
अपनी वीणा की स्वर-लहरी—
का किंचित् अनुप्रास दो,
मां शारदे, प्रकाश दो ॥६॥

जीवन के सप्तक में माता !
नहीं और संगीत सुहाता,
श्री चरणों के वन्दन में ही
स्वर-लय मुखर समास दो,
मां शारदे, प्रकाश दो ॥७॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

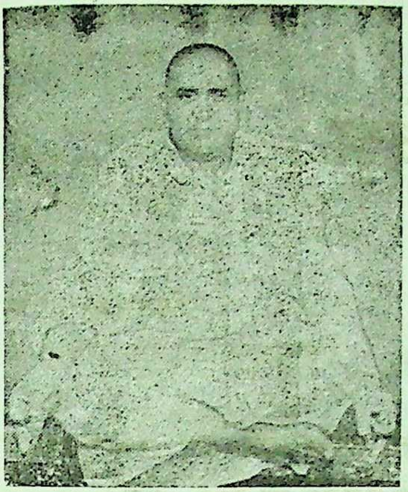

पुज्य स्वामी श्री गोविन्द प्रकाश जी के दिव्य वचनामृत

वास्तविक में तो यह जीवन एक ज्योति अर्थात जलता हुआ एक दीपक है। जिस प्रकार दीपक के प्रकाश में मानव रात्री में भी अपना काय करता रहता है इसी प्रकार प्रत्येक शोक मोह आदि मूलक प्रवृतियां ही एक रात्री है। जिसमें मानव ने अपना कर्तव्य करना है।

१ दीपक में विचार रूपी तेल हो तो ठीक प्रकाश देता है।

२ दीपक में वैराग्य रूपी बत्ती हो तो ठीक जलता है।

३ शब्द, स्पर्श रूप, रस, गन्ध आदि आन्धी से तथा काम, क्रोध आदि तेज हवा से बचाने की जरूरत है, क्योंकि इसी से जीवन ज्योति रूपी दीपक के बुझ जाने का पूरा भय होता है। यद्यपि सामान्य वायु के बिना दीपक की लाट (रोशनी) नही रह सकती इसी तरह सामान्य भोजन आदि साधन जो आवश्यकता की पूर्ति के लिए हैं उनके बिना शारीरिक क्रिया का चलना असम्भव होता है अतएव आवश्यकता की पूर्ति रूपी तेल सतसंगी इस जीवन रूपी दीपक को देता हुआ उलझन रूपी रात्री में विचार रूपी रोशनी से चलता है रूकता नहीं, रूकना मृत्यु है चलना जीवन है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ॐ

गीता का उपदेश

★★★★

—बचन सिंह बुटोला
ग्राम अमोली, टिहरी गढ़वाल

जब भगवान कृष्ण के साथ अर्जुन कुरुक्षेत्र में जाता है तो अपने सभी सगे सम्बन्धियों को देखकर अपने हथियार नीचे भूमि में गिरा देता है। यह कायरता देखकर श्री कृष्ण अर्जुन से बोले है अर्जुन ! तुम्हें आज क्या हो गया है। जो तुम आज इन लोगों के प्रति कायरता दिखा रहे हो।

अर्जुन ने ऐसा सुनकर भगवान कृष्ण के चरण पकड़कर कहा भगवन ये मेरे गुरु द्रौण हैं। तथा साथ ही मेरे पुज्य पितामह भीष्म हैं। एवं सभी गणमान्य सज्जन सामने दिखाई पड़ते हैं। क्या इन्हें मारकर मैं स्वर्ग व राज्य की प्राप्ति करुंगा कभी हो ही नहीं सकेगा। भगवन् मैं इनसे युद्ध नहीं करूंगा। चाहे मैं जंगलों में गुफाओं में जाना पड़े लेकिन अपने पूज्य लोगों के लाल रुधिर वहा कर कभी राज्य की कामना नहीं करूंगा।

ऐसा सुनकर श्री कृष्ण कहने लगे हे अर्जुन तुम्हें इस समय जो सज्जन मूर्तियां दिखाई पड़ रही है। वे मूर्तियां उस समय कहां थी ? जब तुम सबको लाक्षा गृह में सबको मारने की योजना की गयी थी। भीम को विष देने का संकल्प किया गया था। कष्ट से युधिष्ठर महाराज से जुवा खेला गया था। भारी सभा में दु:शासन ने द्रौपदी का अपमान किया था। सोचो और तुम आज यह .... न्याय एवं धर्म के मार्ग का अनुसरण करना ईश्वर के मार्ग पर चलना है। अन्याय करने पर छोटे बड़े एवं गुरु शिष्या का भेद भाव नहीं रहता है। उस शिष्य को अपना गुरु त्यागना चाहिए जो गुरु अन्याय का मार्ग ताकता है। यथा :—

गुरूर प्यवलिप्तस्य कार्यांकार्यम जानत: ।
उत्पथ प्रतिपन्नस्थ परित्यागो विधीयते ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसी प्रकार श्री कृष्ण अर्जुन को और भी उपदेश देते हैं। तत्पश्चात श्री कृष्ण अर्जुन को विराट रूप दिखा कर कहते हैं। अर्जुन देख रहे हो।

अर्जुन ने जब ऐसा संसार देखा जहां दया धर्म नाम की कोई चिड़िया भी नहीं थी एक दूसरे को वेदर्दी से काटे मारे जा रहे थे। बोले हे भगवान क्षमा करो मैं ये क्या देख रहा हूं। बस आप अब चिन्ता न करें। मैं युद्ध भूमि में उतरता हूं। इस प्रकार अर्जुन युद्ध के लिए तैयार हो जाता है। फिर धर्म व अधर्म की लड़ाई होती है।

'तमन्ना'

—के० एल० कुकरेती "कारक"
२६ जाखन, राजपुर रोड, देहरादून यू०पी०

एक तमन्ना रही उम्रभर
सिर्फ उनके दर्शनों के लिए

क्या देख यह महकता-महकता चमन
यह बस्ती, धरा, चांद सितारे, गगन

उनके द्वार पर सर फोड़ कर मर गई
तमन्ना उनके दर्शनों के लिए

मुंद गए दो रसीले, नशीले नयन
हाय मुरझा गये, अर्चना के सुमन

भटकता रहा विश्व में उम्र भर
श्री राम के दर्शनों के लिए

एक तमन्ना रही उम्र भर
श्री राम के दर्शनों के लिए।

★★★★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ॐ

"तस्मै श्री गुरवे नमः"

श्री काका हरिओम् जी की बम्बई से प्रेषित श्रद्धांजलि

परमपूज्य ब्रह्मलीन श्री गोविन्द प्रकाश जी महाराज की पावन स्मृति में
१९ सितम्बर ८२ को आयोजित सभा के लिए

प्रकृति मां है, गुरु है और अभिव्यक्ति है उस अव्यक्त ब्रह्म की, सहज अभिव्यक्ति, जब भी हम कहीं जरूरत से ज्यादा बंधने लगते हैं, जुड़ने लगते हैं, बस वहां विछोह का एक रोड़ा लगता है हमारी पीठ पर और प्रिय न जाने कहां खो जाता है, रह जाती हैं बस कुछ यादगारें, यादें– वही अवशेष कभी एकान्त में जब बैठते हैं ले जाते हैं खींचकर अतीत में, सारा द्रश्य बीता हुआ आंखों के सामने एक एक करके तिर जाता है, वह भी रुकता नहीं, बढ़ जाता है आगे को, हां दे जाता है एक अजीब सी गुदगुदाती प्रेरणा और, जिससे निश्चल प्रेम मिला हो उसकी यादगार, जो सारे टूटे हुए व्यक्तित्व को एक नये सिरे से जोड़ देती है।

आज पांच साल होने को आये जब व्यवहार और अध्यात्म के प्रतिरूप हमारे बीच से एकदम एकाएक कहीं अद्दश्य में विलीन हो गये थे, जब पता चला तो, विश्वास ही न हुआ। ठीक है अस्वस्थता थी पर ऐसी नहीं कि उन्हें हम से जुदा कर दे, पर नियति बलवती होती है, बहुत बलवती हानि लाभ जीवन-मरण, यहां अपयश विधि हाथ।

इधर अघटित घटना और प्रकृति की विह्वलता, मूसलाधार पड़ रही वर्षा, आंधी - तूफान, रास्ते बन्द, कुछ समझ में नहीं आता था। ऐसा लगता मानो राम-प्रेमियों के मन में घट रही सारी प्रक्रिया बाहर प्रतिबिम्बित हो रही हो, पार्थिव शरीर शान्त, मौन, निर्लिप्त अभी तो शुरुआत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी नहीं हुई थी। कहते थे, "सोचता हूं कुछ रचनात्मक कार्य को हाथ में लिया जाये प्रचार हो तो बहुत रहा है पर चरित्र कमजोर होने की वजह से असर नहीं होता लोगों पर, क्यों न धर्म प्रचारकों को तैयार किया जाये लेकिन :— बड़े शौक से सुन रहा था जमाना।
तुम्हीं सो गये दास्तां कहते कहते ॥

मां ने कई बार कहा 'आनन्दमयी मां' ने, उन्हें भी भावांजलि "बाबा बोलते क्यों नहीं, बोलो न" पर मां मां कहने वाला बेटा गोविन्द प्रकाश ढीठ बन गया। मां से क्या नाराजगी नहीं कहीं विवशता रही होगी नहीं तो अपनों को छोड़कर कौन जाना चाहता है।

अब समझ में आता है कर्म प्रवाह का सिद्धांत, प्रत्येक की कर्म मर्यादा होती है, जब वह आता है उसके निश्चित उद्देश्य होते हैं-- "मुझे स्वप्न दिखा है, स्वामी हरिओम जी और निर्मल जी कह रहे हैं कि तुम्हारा काम खत्म हो गया, आ जाओ।"

हम यह नहीं कहते कि आप प्रकृति के सतत नियम को तोड़ें पर अपने वरद हस्त के अहसास को शक्ति तो दें जिससे आप सबको साक्षी मान हम सच्चाई पर सही रास्ते पर चल सकें। हमेशा लगे कि कदम आगे की ओर ही बढ़े हैं, जब भी वर्ष ने सामूहिक रूप से बैठ कर सिंहावलोकन करें तो अनुभव हो कि हम सब अलग-अलग दीखते हुए भी एक हैं (सूत्रे मणिगणा इव)- परिवार परिवार है, उसका हर सदस्य परिवार है।

हमें आज आशीश दें कि हममें 'श्रद्धा' का अवतरण हो और हम आपके चरणों से सच्ची, सही अर्थों में श्रद्धांजलि अर्पित कर सकें।

"पुष्पांजलि यथा दत्ता गृहाण परमेश्वर।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओ३म्

स्वामी गोविन्द प्रकाश निर्वाण-दिवस

****

स्वामी रामतीर्थ मिशन (रजि०), दिल्ली की ओर से श्री रामतीर्थ धाम मे रविवार दिनांक १९ सितम्बर, १९८२ ई० को ब्रह्मलीन श्री स्वामी गोविन्द प्रकाश की पावन-स्मृति में विशेष आयोजन किया गया। हमारी प्रधाना श्रीमती मेला देवी मल्होत्रा जी, जो हाल में कुवेत से भारत लौटी हैं, की अध्यक्षता में यह समारोह सम्पन्न हुआ।

प्रातःकाल ८॥ बजे हवन हुआ जिसमें यजमान स्व० श्री कृष्ण लाल भण्डारी जी तथा आदरणीय बहन निर्मल भण्डारी जी के सुपुत्र चि० गिरधर भण्डारी तथा पुत्रवधू बेटी गोपिका भण्डारी ने यजमान के रूप में गुरूवार के लिए आहूतियां दो, इसके साथ ही भीतर सत्संग भवन में माताओं-बहनों के द्वारा गीता के अठारह अध्यायों का सस्वर पाठ किया गया, तदनन्तर प्रार्थना रामस्तोत्र और भजनों द्वारा कार्य का शुभारंभ हुआ, अपने श्रद्धेय महाराजश्री के चरणों में अपनी श्रद्धांजलि अर्पण करने के लिए दिल्ली मैं दूर दूर स्थानों से राम भक्त भारी संख्या में उपस्थित थे।

सर्वप्रथम प्रधान सचिव ने ब्रह्मलीन, स्वामी जी से सम्बद्ध उनकी जीवन-यात्रा के समाप्त होने के दिन के संस्करण सुनाये। श्री स्वामी केशवानन्द जी महाराज, रामतीर्थ संस्थान, लखनऊ, के मंत्री श्री अयोध्यानाथ सिन्हा जी (तार से), सनातन धर्म सभा दरियागंज के श्री सिवलाल खुराना जी ने सन्देश सुनाये गये, बम्बई से श्री काका हरिओम जी द्वारा दी गई श्रद्धांजलि उसके हृदय की श्रद्धा, निष्ठा और सदभावना, से शोभायमान कर रही थी, वक्ता इतनी अधिक संख्या में पधारे थे कि मिशन के अनेक सेवकों के विचार श्रवण करने का समय नहीं निकल पाया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरएक वक्ता ने अपने अपने अनुभव के आधार पर महाराजश्री के अनेक गुणों का बखान किया। इनमे स्वामी निर्मल चेतन जी स्वामी गुरुमुखानन्द जी, स्वामी गुरुयादानन्द जी (जो भगवान दास संस्कृत महाविद्यालय हरिद्वार के विद्यार्थी भी रहे हैं), श्री स्वामी रामाकृष्ण जी, स्वामी बुद्धिप्रकाश मानस प्रभाकर श्री पं० त्रिलोक मोहन जी आचार्यवर श्री अमीरचन्द शास्त्री आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। अध्यक्षा श्रीमती मल्होत्रा जी ने स्वामी जी को भावभीनो वाक्यांजलि समर्पित करते हुए यह परम सम्वाद दिया कि स्वामी रामतीर्थ मिशन की एक शाखा की हमारे परमाध्यक्ष जी का आशीर्वाद प्राप्त करके कुवैत में विधिवत् स्थापना हो गयी है।

सर्वश्री राजकिशोर शुक्ल, विश्वप्रेमी (गाजियाबाद) अमोलक राम जी के भजन हुए। अन्त में माननीया बहन सुश्री सावित्री जी ने अपनी स्वर लहरी के माध्यम से मधुर भजन सुनाये और संकीर्तन किया।

१ बजे अपराह्न के बाद आरती के साथ सभा विसर्जित हुई। श्रीमती निर्मल भण्डारी जी, श्री गिरधर भण्डारी जी और बेटी गोपिका भण्डारी द्वारा विशाल भण्डारे का आयोजन किया गया जिसमें समस्त नर-नारियों ने प्रसाद रूप मे भोजन किया। इस आयोजन को सफल बनाने के लिए सभी रामभक्तों ने अपना अमूल्य सहयोग प्रदान करके महामना ब्रह्मलीन स्वामी जी के प्रति अपनी गहन निष्ठा एवं सदाचारिता का परिचय दिया। श्री परमाध्यक्ष जी महाराज का शुभाशीर्वाद न्यूयार्क (अमेरिका) से प्राप्त हो गया था, उससे भी सब को अवगत कराया गया।

भारत बन्धु शर्मा
प्रधान सचिव
स्वामी राम तीर्थ मिशन, दिल्ली।

कविता

नाम छोटा है
और बड़ा खोटा है
जनसंख्या बढ़ाओ तो
आमदनी बढ़ेगी
फिर
मेहनत करेंगे
इस सिद्धांत पर यकीन रखता
नागरिक चीन।
विश्व की सारी भाषाओं के बोलने वाला
कहता है "सुमन",
कि अक्षरों में, मात्राओं में
हमारा बड़ा है कोचीन।

—डा० सुमन सादाबादी "सुमन" बेघरबार,
जी० पी० ओ० डिस्पेंसरी, देहरादून।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

112395

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आश्रम समाचार

२३ अगस्त १९८२ को महाराज श्री परमाध्यक्ष का कुवैत से अमरीका पहुंचे पहुंचने पर अमरीका में रहने वाले राम भक्तों ने उनका भव्य स्वागत किया, तथा सभी प्रकार से उनकी सेवा की, २३-८-८२ से २३-९-८२ तक महाराज ने अपने मुखारविन्द से वहीं के राम प्रेमियों को अपनी अमृत रूपी वाणी सें मुग्ध किया तथा अमृत रूपी वर्षा की २३-९-८२ को श्री महाराज ने इंग्लैंड के लिए प्रस्थान किया, व कुछ समय तक वहीं के राम प्रेमियों को अपनी अमृत वाग्वाणी से प्रसन्न करेंगें व उसकें बाद भारत में पदार्पण करेंगें।

स्वामी रामतीर्थ मिशन राजपुर में रविवार १९ सितम्बर, १९८२ को ब्रह्मलीन श्री स्वामी तपोनिष्ट गोविन्द प्रकाश जी महाराज का निर्वाण दिवस बड़े उत्साह पूर्वक राम-प्रेमियों द्वारा श्रद्धापूर्वक मनाया गया।

स्वामी विश्वनाथ यती जी एवं स्वामी ऊमानन्द जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ, प्रातःकाल ८-३० बजे विद्यार्थियों पंडितों द्वारा गीता व हवन बड़े उत्साह पूर्वक सम्पन्न हुआ।

१८ सितम्बर ८२ को प्रातःकाल रामायण के प्रारम्भ में ब्राहमण व्दारा पूजा इत्यादि वेदोच्चारण सहित पूजा हुई व रामायण पाठ को प्रारम्भ किया, व राम भक्तों के व्दारा व सुदेश डोरा आदि व्दारा बड़ी अच्छी तरह से सम्पन्न हुआ।

सबसे पहले स्वामी अग्निवेश व्दारा ब्रह्मलीन स्वामी गोविन्द पकाश जी की श्रध्दांजलि समर्पित करते हुए अपने मुखार-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिन्द से लोगों को निर्वाण दिवस पर अमृत रूपी वाणी से कृतार्थ किया ।

श्री स्वामी चेतना नन्द जी व सरदारी लाल ओबराय, डा० टेक-चन्द नन्दवानी, श्री शिव चरण सभ्रवाल, चौधरी त्रिलोक सिंह इत्यादि राम भक्तों ने ब्रह्मलीन गोविन्द प्रकाश जी के जीवन चरित्र पर प्रकाश डाला व वृन्दावन से आये हुयी कीर्तन मण्डली ने अपने कीर्तन से राम भक्तों को प्रसन्नचित्त किया व इस यज्ञ में राम भक्तों ने अधिक संख्या में भाग लेकर श्रद्धापूर्वक हरेक तरह से सेवा की। अंत में स्वामी विश्व नाथ यती जी व गीता भवन से आये संत मण्डली ने स्वामी गोविंद्र प्रकाश जी के जीवन चरित्र पर इस दिवस की समाप्ति पर श्रद्धाँजलि सर्पित की। तत्पश्चात् भोजन, प्रसाद रूप में वितरित किया गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूरभाष-८४२२५ राजपुर, ४२६७ देहरादून, तार का पता—(बेदान्त) देहरादून, रजि० नं० डी०एन० १२

—:: सूचना ::—

१—मासिक पत्रिका 'राम सन्देश' न मिलने पर अपने समीपस्थ डाकखाने (पत्रालय) से पता करने के पश्चात हमें सूचित करें। क्योंकि कभी-किसी कारणवश "राम सन्देश" १५ ता० तक निकलता है। इसलिए शिकायत पत्र अपनी २ ग्राहक संख्या सहित दिनांक २० के बाद प्रेषित करने का कष्ट करें।

२—आप आश्रम में किसी भी प्रकार का धन भेजते समय यह लिखना न भूलें कि वह धन किस निमित्त भेजा जा रहा है तथा चैक स्वामी रामतीर्थ मिशन के नाम पर ही भेजें।

३—जो पाठक इस पत्रिका के आजीवन सदस्य बनना चाहते है वे अपना सदस्यता शुल्क सम्पादक के नाम प्रेषित करें। सस्दयों को आजीवन पुनः बिना किसी शुल्क के यह पत्रिका प्रेषित की जायेगी।

४—'राम सन्देश' के विदेशी ग्राहक अपना वार्षिक शुल्क १५ रु० भेजें। क्योंकि परमाध्यक्ष जी की आज्ञानुसार १२ रु० के स्थान पर ३ रु० वृद्धि का निर्णय लिया गया है।

५—पाठक अपनी अंक सम्बन्धी, प्रतिक्रियाए, अवश्य भेजें, जिससे पत्रिका की उन्नति सम्भव हो सके।

६—अपनी रचनाएं—लेख, कविताए भेजते समय पष्ट शब्दों में पृष्ठ की एक तरफ ही लिखें।

७—हर प्रकार की सामाजिक, शिक्षा सम्बन्धी, आध्यात्मिक या पारस्परिक तुलनात्मक आपकी लिखित वैचारिक भावनाए सादर आमन्त्रित हैं।

—रुकम सिंह

बुक पोस्ट

ग्राहक संख्या ४३४

श्री/श्रीमती

स्थान

डाकखाना

जिला

मासिक पत्र— "राम-सन्देश"
स्वामी रामतीर्थ मिशन
राजपुर, देहरादून (उ० प्र०) Pin-248009
भारत (INDIA)

स्वामी रामतीर्थ मिशन, राजपुर देहरादून (उ० प्र०) के लिए प्रकाशक स्वामी अमर मुनि द्वारा अनुराग प्रिंटर्स, ३७/६, धामी गली, देहरादून से मुद्रित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Compiled
1999-2000

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar